CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राष्ट्र भारती

चौखम्भा ओरियन्टालिया
[illegible]
६ यू[illegible] नगर
दिल्ली-११०००७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

॥ श्रीः ॥

राष्ट्र-भारती

(सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी की प्रथमा परीक्षा के लिए स्वीकृत)

संपादक

श्री करुणापति त्रिपाठी एम. ए.

उपकुलपति :

सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

(परिवर्द्धित संस्करण)

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी-१

१९७५

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रकाशक : चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस, वाराणसी
मुद्रक : चौखम्बा प्रेस, वाराणसी, वि० सं० २०३२
मूल्य : 15/-

© The Chowkhamba Sanskrit Series Office
Gopal Mandir Lane
P. O. Chowkhamba, Post Box 8
Varanasi–221001 (India)
1975
Phone : 63145

अपरं च प्राप्तिस्थानम्
चौखम्बा अमरभारती प्रकाशन
गोपाल मन्दिर लेन, वाराणसी–२२१००१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

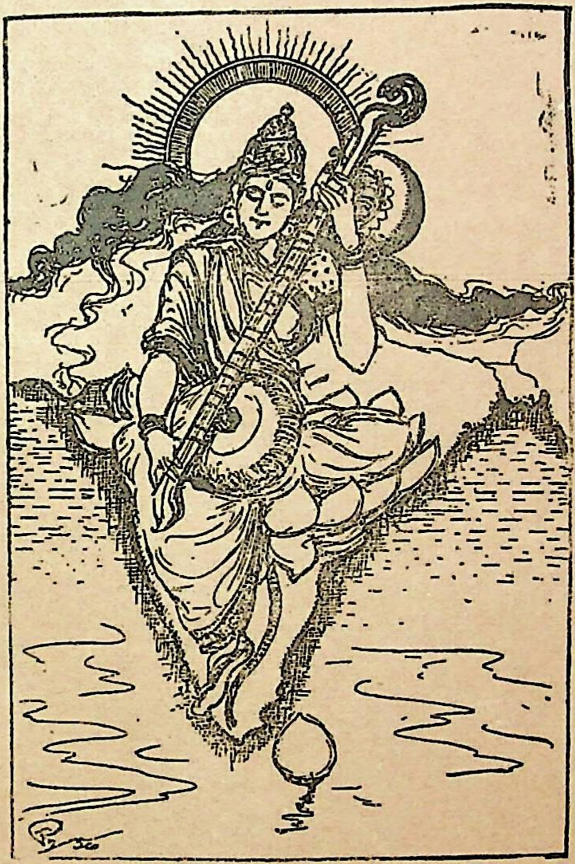

भारत-भारती

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राष्ट्र-गीत

जन-गण-मन-अधिनायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता ।
पंजाब-सिन्धु-गुजरात-मराठा-
द्राविड़-उत्कल-वंग
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना-गंगा-
उच्छल-जलधि-तरंग
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे,
गाहे तव जय-गाथा ।
जन-गण-मंगलदायक, जय हे
भारत-भाग्य-विधाता ।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

विषय सूची

विषय		पृष्ठ
राष्ट्रगान (कविता) श्री रवीन्द्रनाथ	...	आरंभ में
१ शुभ-कामना (कविता)—श्री सुमित्रानंदन पंत	...	१
२ देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद—(सम्पादकीय)	...	२
३ विश्व-छवि (कविता)—श्री रामनरेश त्रिपाठी	...	८
४ हार की जीत (कहानी)—'सुदर्शन'	...	१०
५ पावस (कविता)—श्री 'चकोरी'	...	१७
६ जमशेदजी नसरवानजी ताता—(सम्पादकीय)	...	१९
७ महाराणा प्रताप : हल्दी घाटी के युद्ध में (कविता)—श्री श्यामनारायण पाण्डेय	...	२४
८ कर्त्तव्य—बाबू श्यामसुन्दर दास	...	३०
९ कबीर-बानी (कविता)—संत कबीर	...	३४
१० स्वामी रामतीर्थ—(सम्पादकीय)	...	३६
११ हिमालय (कविता)—श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'	...	४३
१२ वीरबाला (एकाङ्की नाटक)—(सम्पादकीय)	...	४८
१३ अहिंसा देवी का दर्शन—महात्मा गांधी	...	५९
१४ कृष्णवन्दना (कविता)—म० सूरदास	...	६७
१५ चन्द्रलोक—(सम्पादकीय)	...	६९
१६ पंचवटी (कविता)—श्री मैथिलीशरण गुप्त	...	७४
१७ ताड़ से गुड़—(सम्पादकीय)	...	८०
१८ रामबाण इलाज—श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य	...	८४
१९ ऐसे युवक चले दल के दल (कविता)—श्री रामनरेश त्रिपाठी		८८
२० विनोदी बापू की स्मृतियाँ—श्री रामनाथ 'सुमन'	...	९३

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

२१	युगावतार (कविता)—श्री सोहनलाल द्विवेदी ...	९८
२२	मन का शरीर पर प्रभाव—श्री आनन्दवर्द्धन ...	१०१
२३	वीर बादल (कविता)—शरदेन्दु ...	१०७
२४	सैनिक शिक्षा और उसकी आवश्यकता—(सम्पादकीय)	११०
२५	वन-पथ में राम (कविता)—म० तुलसीदास ...	११६
२६	हमारे प्रान्त के उद्योग-धंधे—श्री रामनाथ 'सुमन' ...	१२५
२७	वीरों का वसन्त (कविता)—श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान	१२७
२८	ग्राम पंचायत—(सम्पादकीय) ...	१३०
२९	मुरझाया फूल (कविता)—श्री महादेवी वर्मा ...	१३७
३०	मानवता का संकट—पं० जवाहर लाल नेहरू ...	१४१
३१	वीरांगना लक्ष्मी बाई—श्री रामनाथ 'सुमन' ...	१४६
३२	काश्मीर-सुषमा (कविता)—श्री श्रीधर पाठक ...	१५४
३३	श्री रामकृष्ण परमहंस—श्री रामनाथ 'सुमन' ...	१५९
३४	रहीम-वचन-सुधा (कविता)—खानखाना रहीम ...	१६३
३५	अधिक अन्न उत्पादन (सम्पादकीय) ...	१६६
३६	शिक्षा—श्री सम्पूर्णानन्द ...	१७०
३७	विश्वशान्ति और संयुक्त राष्ट्रसंघ—(सम्पादकीय) ...	१७५
३८	सागर के अतल गर्भ में—श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र ...	१८०
	परिशिष्ट ...	१८७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१) शुभ-कामना

रचयिता : श्री सुमित्रानन्दन पन्त

[श्री सुमित्रानन्दन पन्त आधुनिक हिन्दी के परम प्रसिद्ध कवि हैं। आजकल के सर्वोच्च हिन्दी कवियों में उनकी गणना है। वर्त्तमान युग की हिन्दी-कविता में नये युग का प्रारम्भ करने वाले कवियों में उनका प्रमुख स्थान है। उनकी कविता में मधुरता, संगीत-प्रवाह और भावों की सुन्दरता है। वे प्रकृति के कवि और मानवता के पुजारी हैं। आजकल वे सांस्कृतिक सैद्धांतिक और सामाजिक, कविता अधिक करते हैं। लोकायन पंत जी का परम प्रसिद्ध महाकाव्य है। उनके काव्यसंग्रह पर कुछ ही दिनों पूर्व उन्हें पुरस्कृत किया गया है।

गूँजे जयध्वनि से आसमान।
'सब मानव-मानव हैं समान!'
निज कौशल-मति-इच्छानुकूल,
सब कर्म-निरत हों भेद भूल,
वन्धुत्व-भाव ही विश्वमूल,
सब एक राष्ट्र के उपादान,
गूँजे जयध्वनि से आसमान।
लोकोन्नति का हो खुला द्वार,
पथ-दर्शक सबका सदाचार,
हों मुक्त कर्म, वाणी, विचार,
हों श्रेय, प्रेय रे एक प्राण॥ गूँजे०
हो सहज-स्नेह-संस्कृत-स्वभाव,
उर में उमङ्ग, उत्साह, चाव,
घन, अन्न, वस्त्र का मुक्त स्राव,
हो एक विश्व-जीवन महान॥ गूँजे०

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब श्रम—उद्यम-गौरव-प्रधान,
सब कर्मों का हो उचित मान,
सब कंठों में हो एक गान—
'मानव-मानव सब हैं समान।' गूंजे०

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) इस कविता का लेखक कौन है? (२) उनकी शुभ-कामना क्या है? (३) 'गूँजे जयध्वनि से आसमान' इसका क्या भाव है? (४) मानव के लिए किन-किन बातों की सुविधा और स्वतन्त्रता कवि चाहता है?

प्रयोग और व्याकरण—

नीचे लिखे शब्दों और अंश का स्वरचित वाक्यों में प्रयोग करो—

कौशल, इच्छानुकूल, बन्धुत्व-भाव, विश्वमूल, उपादान, 'सब कंठों में हो एक गान'।

आगे लिखे पदों में संधियों का विच्छेद करो—

इच्छानुकुल, लोकोन्नति।

---

(२) देशरत्न डा० राजेन्द्र प्रसाद

स्वतन्त्र गणतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति

(सम्पादकीय)

२६ जनवरी सन् १९५० ई० को भारत की संविधान परिषद् ने सर्व-सम्मति से देशरत्न त्यागमूर्ति डा० राजेन्द्रप्रसाद के हाथों में भारतीय प्रजातंत्रात्मक गणराज्य-संघ के राष्ट्रपति-पद का भार सौंपा। डा० राजेन्द्र-प्रसाद इस स्वतन्त्र गणतन्त्र भारत के सर्वप्रथम राष्ट्रपति थे।

जिस देश में किसानों की बहुसंख्या है उस देश के राष्ट्रपति पद का रथ चलाने के लिए राजेन्द्र बाबू से अधिक उपयुक्त दूसरा सारथि उस समय हो ही

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं सकता था। उनका जीवन आरम्भ ही से बड़ा सीधासादा था; सेवा, सचाई, त्याग और कर्मठता से पूर्ण था।

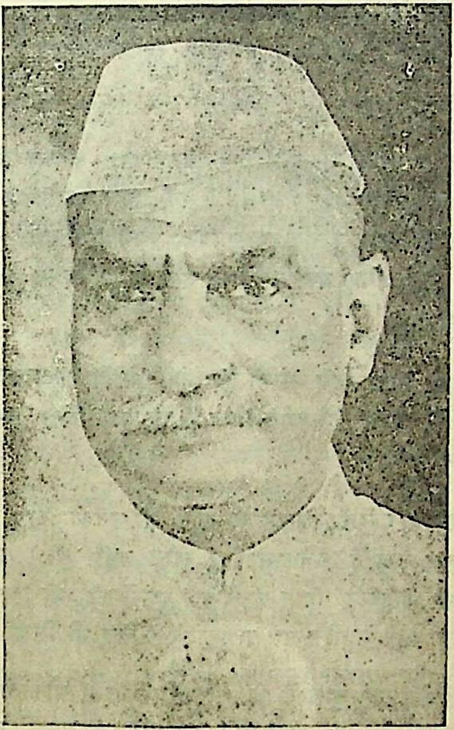

डा० राजेन्द्रप्रसाद

(१८८४–१९६३)

बिहार के सारन जिला में 'जीरादेई' एक गाँव है। वहीं सन् १८८४ ई० के दिसम्बर में राजेन्द्र बाबू का जन्म हुआ था। बचपन में घर पर ही एक मौलवी साहब उन्हें उर्दू पढ़ाया करते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आगे चलकर वे छपरा जिला स्कूल में पढने लगे। वहाँ से कलकत्ता विश्वविद्यालय की इंटरेंस परीक्षा पास की — जिसमें सर्वप्रथम हुए। कलकत्ता-विश्वविद्यालय से बी० ए०, एम० ए० तथा ,वकालत की परीक्षाएँ उत्तीर्ण कीं। इन परीक्षाओं में प्रायः सदैव उन्हें विश्वविद्यालय में सर्वोच्च स्थान मिलता रहा।

राजेन्द्रप्रसाद बड़े कुशाग्रबुद्धि थे। स्कूल और कालेज की परीक्षाओं में इन्हें प्रायः सबसे अधिक अङ्क (नम्बर) सदा प्राप्त हुआ करते थे। परीक्षाओं में अग्रणी होने के कारण पुस्तक, रजतपदक, स्वर्णपदक आदि सर्वदा पुरस्कार रूप में मिलते रहे। अनेक वर्षों तक उन्हें कक्षा में सर्वप्रथम होने से छात्रवृत्ति भी मिलती रही।

राजेन्द्र बाबू केवल पढ़ने में ही तेज नहीं थे, वे फुटबाल के बड़े अच्छे खिलाड़ी भी थे। सारन के अपने स्कूल में वे कुछ दिनों तक फुटबाल की टीम के कप्तान भी थे।

भाषण देने और लेख लिखने की ओर भी उनकी रुचि आरम्भ से ही थी। इसके लिए उन्होंने अनेक संस्थाएँ खोल रखी थीं। इनमें वे स्वयं उत्तम कोटि का व्याख्यान दिया करते थे, दूसरों को भी व्याख्यान के लिए उत्साहित करते रहते थे और पत्र-पत्रिकाओं में लेख भी लिखा करते थे।

उनका जीवन पठन-काल से ही सीधासादा था। शौकीनी और बनाव-सिंगार से वे सदा दूर रहा करते थे। पर साथ ही सफाई उन्हें बड़ी प्रिय थी। विद्यार्थी-जीवन के समय से ही उनके मुख पर सौम्यभाव झलकता रहा।

सेवा का भाव भी उनमें आरम्भ से ही भरा था। दुखियों और पीड़ितों की सेवा वे बड़ी लगन से किया करते थे। संगठन के काम में भी वे बड़े निपुण थे। 'बिहार-क्लब' खोलकर उन्होंने कलकत्तावासी बिहारी विद्यार्थियों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

की बड़ी सहायता की। इसी प्रकार 'बिहारी-छात्र-क्लब' के द्वारा बिहारी छात्रों का संगठन किया।

पहले कुछ दिनों तक उन्होंने स्कूल-कालेज मे पढ़ाने का कार्य किया। बाद में एल०-एल० एम० परीक्षा पास कर वे वकील हुए और कलकत्ता तथा पटना—दोनों स्थानों के हाईकोर्टों में उन्होंने सफलता के साथ वकालत की।

सन् १९२१ ई० में जब राजेन्द्र बाबू हाईकोर्ट की वकालत छोड़कर स्वतन्त्रता के युद्ध में कूद पड़े, तब उनकी मासिक आय तीन-साढ़े-तीन हजार रुपये तक पहुँच चुकी थी। किन्तु धन का लोभ उन्हें कभी न था। एक बार तो वे श्री गोखले के कहने पर सर्वेण्ट ऑफ इण्डिया सोसाइटी के सदस्य बनने को तैयार हो गये थे। पर भाई के अत्यधिक अनुरोध के कारण उन्होंने दुःख के साथ वह विचार त्याग दिया।

समाज-सेवा और देश-सेवा से सम्बन्ध रखने वाले सभी कार्यों में वे बड़े उत्साह से सदैव योग देते थे। अपने घर से परदाप्रथा को दूर कर उन्होंने अपनी स्त्री और पुत्रवधू को गाँधी जी के साबरमती आश्रम में भेजा। डाक्टर गणेशप्रसाद के विलायत से लौटने पर गाँववालों द्वारा उन्हें बहिष्कृत देखकर राजेन्द्र बाबू ने उन्हें गले लगाया और उनके यहाँ भोजन भी किया। गाँधी जी का साथ होने के बाद खान-पान में छुआछूत के भेद-भाव को पूर्णतः उन्होंने त्याग दिया।

बाढ़, महामारी, भूकम्प आदि के आने पर राजेन्द्र बाबू सब काम छोड़ कर सेवा के लिए सबसे आगे पहुंच जाते थे। बिहार में किसी विपत्ति के आने पर तो सारा बिहार राजेन्द्र बाबू को ओर उत्सुक दृष्टि देखने लगता था।

सन् १९१७ ई० में नीलवाले साहबों के अत्याचार की जाँच करने महात्मा गाँधी चम्पारन आये। वहीं महात्मा जी का भारत में प्रथम सत्याग्रह हुआ। राजेन्द्र बाबू अपने कुछ साथियों के सहित आरम्भ से अन्त तक गाँधी जी के साथ रहे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महात्मा जी के महत्त्व का, उनकी दृढ़ता और निर्भयता का उसी समय राजेन्द्र बाबू पर बड़ा प्रभाव पड़ा। यों तो वे छात्र-काल से ही स्वदेशी आन्दोलन, कांग्रेस या किसी भी राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रवल समर्थक थे और सन् १९११–१२ तक वे कांग्रेस कमेटी के सदस्य भी हो चुके थे। फिर भी १९१९–२० ई० से कांग्रेस में उन्होंने, तन, मन, धन और वचन—सब कुछ देश की स्वतन्त्रता के लिए समर्पित कर दिया।

कांग्रेस के सभी आन्दोलनों में वे सदा भाग लेते रहे और अनेक बार जेल गये। कांग्रेस की कार्य-समिति के बीसों वर्षों तक वे सदस्य बने रहे। जब कांग्रेस और अंग्रेज सरकार के बीच गाँधी-इरविन समझौता हुआ था, उस समय राजेन्द्र बाबू ही कांग्रेस के अध्यक्ष थे।

आप में संगठन की अनुपम शक्ति थी और गाँधी जी के आप शिष्य थे। आपका विश्वास रचनात्मक कार्यों में था। इसी से राजेन्द्र बाबू ने १९२२–२३ में स्वराज्य पार्टी का साथ नहीं दिया।

आप के संगठन का ही प्रभाव था कि बिहार सदैव कांग्रेस के आन्दोलनों में सबसे आगे रहा। सन् ४२ के आन्दोलन में तो देशरत्न के संगठित बिहार ने जिस वीरता और साहस तथा त्याग और सहनशीलता का परिचय दिया वह सुनहले अक्षरों में लिखित भारत के स्वातंत्र्य-युद्ध की अमर कहानी है।

१९२०–२१ से ही समस्त भारत अपने देशरत्न राजेन्द्रप्रसाद को अपना एक प्रमुख नेता मानता चला आ रहा था, पर बिहार के तो वे बिना ताज के एकछत्र राजा थे। उनके इशारों पर मर मिटने के लिए बिहार सदा तैयार रहा। जिस बिहार को राजेन्द्र बाबू ने अपने प्रेम और त्याग, श्रम और अनुराग से सींच-सींचकर दृढ़ और योग्य बनाया, वह बिहार भी उन पर निछावर होता रहा।

उन्होंने अपनी अद्भुत संगठन-शक्ति द्वारा बिहार में खादी-प्रचार के कार्य को अत्यन्त व्यापक और दृढ़ बनाया। उन्होंने पटना विश्वविद्यालय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के कार्यों में योग देकर तथा विहार-विद्यापीठ की स्थापना द्वारा—शिक्षा के क्षेत्र में भी विहार की बड़ी सेवा की थी। अछूतोद्धार, हिन्दू-मुसलिम-एकता आदि के कार्य में भी वे सदा आगे रहा करते थे।

उनके सम्बन्ध में एक और अत्यावश्यक बात भूलनी न चाहिए। राजेन्द्र बाबू सदैव से बहुत बड़े हिन्दी-प्रेमी थे। आरम्भ से उर्दू-फारसी पढ़ने पर भी और स्कूल में हिन्दी न पढ़ने पर भी, आपने बी० ए० में हठपूर्वक हिन्दी ली और परिश्रम कर उसमें अच्छे अङ्क प्राप्त किए। पटना विश्व-विद्यालय में लगभग ५० वर्ष पूर्व इंटरेंस के लिए उन्होंने हिन्दी माध्यम स्वीकृत कराया। विहार-प्रान्तीय हिन्दी साहित्यसम्मेलन और अखिल-भारतीय हिन्दी साहित्य-सम्मेलन में वे सदा सहायता देते रहे और दोनों के वे अध्यक्ष बनाए गए थे। नागरीप्रचारणी सभा, काशी के प्रति उनका बड़ा अनुराग था। वर्त्तमान संविधान पर उन्होंने पहले हिन्दी में हस्ताक्षर किया, बाद में अंग्रेजी में अपना नाम लिखा। राष्ट्रपति होने पर उन्होंने अपना प्रथम भाषण भी पहले हिन्दी में दिया था और शपथ-ग्रहण भी हिन्दी में किया था।

सन् ४२ में कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्यों के साथ वे बन्दी बनाए गए और साथ ही छूटे। कांग्रेस और अंग्रेज सरकार के बीच समझौता होने पर केन्द्र में जो अन्तरिम राष्ट्रीय सरकार बनी, उसमें वे खाद्यमंत्री थे। पर संविधान परिषद् की स्थापना होने पर राजेन्द्र बाबू सर्वसम्मति से परिषद् के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। जिस धीरता, सफलता और निष्पक्षता से देशरत्न डा० राजेन्द्रप्रसाद ने संविधान परिषद् की अध्यक्षता का अपने अध्यक्षत्वकाल में संचालन किया वह सदा सराहनीय और स्मरणीय रहेगा।

सेवा, त्याग, सरलता, संगठन-शक्ति और प्रेम-व्यवहार में महात्मा गांधी के बाद राजेन्द्र बाबू का स्थान महत्त्वपूर्ण था। ऐसी स्थिति में इस प्रथम प्रजातन्त्रात्मक गणतन्त्र का प्रथम राष्ट्रपति, राजेन्द्र बाबू को बनाना सर्वथा उचित हुआ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सब बातों का विचार करने पर राष्ट्रपति पद के लिए उनसे अधिक योग्य दूसरा कोई हो ही नहीं सकता था। स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति देशरत्न राजेन्द्र प्रसाद और प्रथम प्रधान मन्त्री नेहरू के द्वारा जिन आदर्शों का भारत में निर्माण हुआ उसे देखकर सारा विश्व चकित हो उठा।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) पढ़ने लिखने में राजेन्द्र बाबू कैसे थे? (२) कलकत्ता विश्वविद्यालय की परीक्षाओं में उनको क्या स्थान मिलता रहा? (३) किन-किन बातों से उनकी संगठन-शक्ति का परिचय मिलता है? (४) महात्मा गांधी का साथ राजेन्द्र बाबू को कब मिला और उनका उनके जीवन पर क्या प्रभाव पड़ा? (५) किन गुणों के कारण राजेन्द्र बाबू राष्ट्रपति चुने गये?

प्रयोग और व्याकरण—

नीचे लिखे शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

संविधान, त्यागमूर्त्ति, राज्यसंघ, कुशाग्रबुद्धि, कर्मठता, सर्वोच्च।

नीचे लिखे पदों का विग्रह करो और उनके समास बताओ—त्यागमूर्ति, देशरत्न, राज्यसंघ।

आगे लिखे पदों में सन्धि-विच्छेद करो—कुशाग्र, सर्वोच्च, अत्यधिक।

(३) विश्व-छवि

रचयिता : श्रीरामनरेश त्रिपाठी

[श्री रामनरेश त्रिपाठी हिन्दी के प्रसिद्ध कवि थे। बहुत दिनों तक आपने हिन्दी साहित्य की सेवा की। आपने बहुत से ग्रन्थों की रचना भी की। तुलसीदास के 'रामचरित-मानस' की आपने टीका लिखी है। पथिक, स्वप्न और मिलन नाम की आपकी रचनाएँ हिन्दी में अधिक प्रसिद्ध हैं। ग्रामीण जीवन का आप बड़ा सफल चित्रण करते थे। आपके जीवन में सरलता और काव्य में मधुरता थी। इस कविता में पृथ्वी, समुद्र और आकाश का सुन्दर चित्रण है।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[१]

प्रतिक्षण नूतन वेश बनाकर रंग-बिरंगी निराला ;
रवि के सम्मुख थिरक रही है नभ में वारिद-माला ।
नीचे नील समुद्र मनोहर, ऊपर नील गगन है ।
घन पर बैठ बीच में विचरूँ, यही चाहता मन है ।

[२]

रत्नाकर गर्जन करता है, मलयानिल बहता है ।
हरदम यही हौसला उर में प्रिये भरा रहता है ।
इस विशाल, विस्तृत, महिमामय रत्नाकर के घर के ।
कोने कोने में लहरों पर बैठ फिरूँ जी भर के ।

[३]

निकल रहा है जलनिधि-तल पर दिनकर बिंब अधूरा ।
कमला के कंचन मन्दिर का मानो कांत कँगूरा ।
लाने को निज पुण्यभूमि पर लक्ष्मी की असवारी ।
रत्नाकर ने निर्मित कर दी स्वर्ण-सड़क अति प्यारी ।

[४]

जब गंभीर तम, अर्धनिशा में जग को ढक लेता है ।
अन्तरिक्ष की छत पर तारों को छिटका देता है ।
सस्मित वदन जगत का स्वामी मृदुगति से आता है ।
तट पर खड़ा गगन-गंगा के मधुर गीत गाता है ।

[५]

उससे ही विमुग्ध हो नभ में, चन्द्र विहँस देता है ।
वृक्ष विविध पत्तों-पुष्पों से, तन को सज लेता है ।
पक्षी हर्ष संभाल न सकते, मुग्ध चहक उठते हैं ।
फूल साँस लेकर सुख की, सानन्द महक-उठते हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[६]

वन-उपवन, गिरि, सानु, कुञ्ज में मेघ वरस पड़ते हैं ।
मेरा आत्म-प्रलय होता है, नयन नीर झड़ते हैं ।
पढ़ो, लहर तट तृण तरु गिरि नभ किरन जलद प्यारी ।
लिखी हुई यह मधुर कहानी विश्व-विमोहनकारी ।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) कौन 'नूतन वेश वनाकर' आकाश में थिरक रही है ? 'नूतन वेश वनाकर थिरकती है' कहने से किसकी सत्ता का बोध होता है ? समुद्र के तल में उदय होता हुआ सूर्य-बिंव कैसा जान पड़ता है ? रत्नाकर ने किस लिए स्वर्ण- मार्ग वनाया ? गगन-गंगा के तट पर खड़ा कौन मधुर गीत गाता है ? उसके मधुर गाने का क्या प्रभाव पड़ता है ?

(२) चौथे और पांचवें छन्द की व्याख्या करते हुए उनका भाव स्पष्ट करो ।

प्रयोग और व्याकरण—

(१) नीचे लिखे शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—
वारिदमाला, रत्नाकर, महिमामय, मृदुगति, पुण्यभूमि ।

(४) निम्नलिखित में अलंकार बताओ—
'कमल के................कँगूरा'

(४) हार की जीत

लेखक : श्री 'सुदर्शन'

[प्रेमचंद जी के समकालीन कहानीकार श्री सुदर्शन, अपने समय में, हिन्दी के उच्च के कथाकारों में माने जाते थे । कहानियों में मनोरंजन के साथ श्रेष्ठ चरित्रचित्रण और मँजी हुई शैली इनकी विशेषता है ।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[१]

माँ को अपने बेटे, साहूकार को अपने देनदार और किसान को अपने लहलहाते खेत देख कर जो आनंद आता है, वही आनन्द बाबा भारती को अपना घोड़ा देख कर आता था। भगवद्भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। यह घोड़ा बड़ा सुन्दर था, बड़ा बलवान् था। इसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती, उसे सुलतान कहकर पुकारते, अपने हाथ खरहरा करते, खुद दाना खिलाते, और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। ऐसी लगन, ऐसे प्यार, ऐसे स्नेह से कोई सच्चा प्रेमी अपने प्यारे को भी न चाहता होगा। उन्होंने अपना सब कुछ छोड़ दिया था। रुपया, माल, असबाब, जमीन, यहाँ तक कि उन्हें नागरिक जीवन से भी घृणा थी। अब एक गाँव से बाहर छोटे से मंदिर में रहते और भगवान का भजन करते थे। परन्तु 'सुलतान', से बिछुड़ने की वेदना उनके लिए असह्य थी। मैं इसके बिना नहीं रह सकूँगा, उन्हे ऐसी भ्रांति-सी हो गई थी। वह उसकी चाल पर लट्टू थे। कहते—ऐसे चलाता है, जैसे मोर घनघटा को देखकर नाच रहा हो। गाँवों के लोग इस प्रेम को देख कर चकित थे, कभी कनखियों से इशारे भी करते थे। परन्तु बाबा भारती को इसकी परवा न थी। जब तक संध्या समय सुलतान पर चढ़कर आठ दस मील का चक्कर न लगा लेते, इन्हें चैन न आता।

खड्गसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते 'सुलतान' की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिये अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा, और नमस्कार करके बैठ गया।

बाबा भारती ने पूछा—'खड्गसिंह क्या हाल है?'

खड्गसिंह ने सिर झुका कर उत्तर दिया—'आप की दया है।'

'कहो, इधर कैसे आ गए?'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'सुलतान की चाह खींच लाई।'

'विचित्र जानवर है। देखोगे, तो प्रसन्न हो जाओगे।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी।'

'कहते हैं, देखने में भी बड़ा सुन्दर है।'

'क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'

'बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।'

बाबा और खड्गसिंह दोनों अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खड्गसिंह ने घोड़ा देखा आश्चर्य से। उसने सहस्रों घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखो से कभी न गुजरा था सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खड्गसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् हृदय में हलचल होने लगी। बालकों की सी अधीरता से वह बोला—'परन्तु बाबा जी; इसकी चाल न देखी तो क्या देखा?'

[२]

बाबाजी भी मनुष्य ही थे। अपनी वस्तु की प्रशंसा दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय भी अधीर हो गया। घोड़े को खोल कर बाहर ले आए, और उसकी पीठ पर हाथ फेरने लगे। एकाएक उचककर सवार हो गये। घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा। उसकी चाल देखकर, उसकी गति देख॰ कर खड्गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था, और जो वस्तु उसे पसंद आ जाय उस पर अपना अधिकार समझता था,। उसके पास बाहुबल था, और आदमी थे। जाते-जाते उसने कहा—'बाबा जी मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।'

बाबा भारती डर गये। अब उन्हें रात को नींद न आती थी। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रतिक्षण खड्गसिंह का भय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लगा रहता। परन्तु कई मास बीत गए, और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ लापरवाह हो गए, और इस भय को स्वप्न के भय की नाईं मिथ्या समझने लगे।

संध्या का समय था। बाबा भारती सुलतान की पीठ पर सवार हो घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आंखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी रंग को, और मन में फूले न समाते थे।

सहसा एक ओर से आवाज आई—'ओ बाबा! इस कँगले की भी बात सुनते जाना।'

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को थाम लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले—'क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा—'बाबा, मैं दुखिया हूँ। मुझ पर दया करो। रामाँवाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा तुम्हारा भला करेगा।'

'वहाँ तुम्हारा कौन है?'

'दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।'

बाबा भारती ने घोड़े से उतर कर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया, और स्वयं उसकी लगाम पकड़ कर धीरे-धीरे चलने लगे।

सहसा उन्हें एक झटका-सा लगा, और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तन कर बैठा और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है उनके मुख से भय विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। यह अपाहिज खड्गसिंह डाकू था।

बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे, और इसके पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर कहा—'जरा ठहर जाओ।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खड्गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया, और उसकी गर्दन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा—'बाबा जी यह घोड़ा अब न दूँगा।'

'परन्तु एक बात सुनते जाओ।'

खड्गसिंह ठहर गया। बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा, जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है, और कहा—'यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परन्तु खड्गसिंह केवल एक प्रार्थना करता हूँ, उसे अस्वीकार न करना, नहीं मेरा दिल टूट जायगा।'

'बाबा जी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल यह घोड़ा न दूँगा।'

'अब घोड़े का नाम न लो, मैं तुमसे इसके विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'

खड्गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि मुझे इस घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा। परन्तु बाबा भारती ने स्वयं उससे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड्गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा परन्तु कुछ समझ न सका। हार कर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दी, और पूछा—'बाबा जी इसमें आपको क्या है डर?'

सुन कर बाबा भारती ने उत्तर दिया—'लोगों को यदि इस घटना का पता लग गया तो वे किसी गरीब पर विश्वास न करेंगे।'

और यह कहते-कहते उन्होंने सुलतान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया, जैसे उनका उससे कोई सम्बन्ध ही न था। बाबा भारती चले गये परन्तु उनके शब्द खड्गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं। कैसा पवित्र भाव है! इन्हें इस घोड़े से प्रेम था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, इसके बिना रह न सकूंगा। इसकी रखवाली में वह कई रातें सोए नहीं। भजनभक्ति न कर रखवाली करते रहे। परन्तु आज उनके मुख पर दुःख की रेखा तक न देख पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग गरीबों पर विश्वास करना न छोड़ दें। उन्होंने अपनी निज की हानि को मनुष्यत्व की हानि पर न्योछावर कर दिया। ऐसा पुरुष मनुष्य नहीं देवता है।

[३]

रात्रि के अंधकार में खड्गसिंह बाबा भारती के मन्दिर में पहुंचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भोंकते थे। मन्दिर के अन्दर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड्गसिंह सुलतान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक किसी वियोगी की आँखों की तरह चौपट खुला था। किसी समय बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे। परन्तु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। हानि ने उन्हें हानि की ओर से बेपरवा कर दिया था। खड्गसिंह ने आगे बढ़कर सुलतान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से फाटक बन्द कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे।

अन्धकार में रात्रि ने तीसरा पहर समाप्त किया और चौथा पहर आरम्भ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ठंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात् इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर मुड़े। परन्तु फाटक पर पहुँच कर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँवों को मन-मन भर का भारी बना दिया। वह वहीं रुक गए।

घोड़े ने स्वाभाविक मेधा से अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बाबा भारती दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने घोड़े के गले से लिपटकर रोने लगे जैसे बिछुड़ा हुआ पिता चिरकाल के पश्चात् पुत्र से मिलकर रोता है। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते और कहते—अब कोई गरीबों की सहायता से मुँह न मोड़ेगा।

थोड़ी देर के बाद वह अस्तबल से बाहर निकले, तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। ये आँसू उसी भूमि पर ठीक उसी जगह गिर रहे थे जहाँ बाहर निकलने के बाद खड्गसिंह खड़ा होकर रोया था।

दोनों के आँसुओं का उसी भूमि की मिट्टी पर परस्पर मिलाप हो गया।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध परीक्षा—

(१) नीचे लिखे प्रश्नों का उत्तर दो—

(क) बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर कैसा आनन्द आता था? (ख) उस घोड़े का क्या नाम था? (ग) घोड़े के प्रति उनका प्रेम देखकर लोग क्या कहते थे? (घ) खड्गसिंह कौन था? (ङ) घोड़ा देखकर उसने क्या कहा? (च) अपनी बात को डाकू ने कैसे पूरा किया? (छ) घोड़ा छिन जाने पर डाकू ने बाबा जी से क्या कहा? (ज) 'मेरी प्रार्थना यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना—' बाबा जी के इस कथन का क्या आशय था? (झ) डाकू पर इस घटना का प्रभाव कैसा पड़ा?

(२) नीचे लिखी रूढोक्तियों का अर्थ बताओ और वाक्य में उनका प्रयोग करो—(क) साँप लोट गया। (ख) फूले न समाते। (ग) दिल टूट जायगा। (घ) सिर मारा। (ङ) मुख फूल की नाईं खिल गया।

व्याकरण :—

'घोड़ा वायुवेग से उड़ने लगा।' 'वायुवेग' पद में अलंकार बताओ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(५) पावस

कवयित्री : श्री चकोरी

[परिचय—दिवंगता रामेश्वरी देवी चकोरी हिन्दी की कवयित्री थीं। उनकी कविताओं को देखकर यह आशा की जाती थी कि एक दिन वे बहुत बड़ी कवयित्री होंगी। उनकी काव्य-प्रतिभा बड़ी ही तीव्र थी। उनकी कविताओं में बहुत ही स्वाभाविक वर्णन होते हैं। इसमें भी पावस का ऐसा ही वर्णन है।]

आते छिपे दृग मूँदते भानु के,
मेघ के छौने बड़े उतपाती।
चंचला मां तव दीपक लेकर,
रोषभरी उन्हें ढूँढने जाती।
झोली भरे सुर-सुन्दरियाँ,
गज-मोतियों की झड़ी-सी हैं लगाती।
ओलों के रूप में आते वही,
उन्हें वल्लरियाँ हिय-हार बनातीं ॥ १ ॥
करते घन घोष, जिसे सुन के,
जग जाते जो भाव हैं सोये हुए।
कहीं झिल्लियाँ बीन बजा रही हैं,
स्वर एक में एक सँजोये हुए।
कहीं चातक हर्ष से विह्वल हैं,
अपने मन में कुछ खोये हुए।
अनुराग के रंग में डूब रहे,
मन स्वाति-सुधा से भिगाये हुए ॥ २ ॥
कहीं श्याम चँदोवा तना नभ में,
हरा फर्श बिछाया धरा में अहा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तरु-—पल्लवों ने हरी शाल ली ओढ़,
हरे रंग से गया विश्व नहा ।
सजे वल्लरियों ने हरे परिधान,
कोई हरे तोरण बाँध रहा ।
मलयानिल ने यह पावस-आगम,
का सबसे जा सँदेशा कहा ॥ ३ ॥
अलि-गायकों की जुड़ी मण्डली है,
कहीं नृत्य मयूर दिखा रहे हैं ।
तितली फिरती बनी अप्सरा-सी,
जिन्हें पुष्प सुरा-सी पिला रहे हैं ।
तरु तन्मय होकर झूमते हैं,
पिक गान मनोहर गा रहे हैं ।
बक-पाँति कहीं उड़ी जा रही है,
हलके कहीं बादल छा रहे हैं ॥ ४ ॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा

(१) कौन भानु की आँखें मूंदते आते हैं ? किन्हें ढूँढने के लिए रोषभरी चञ्चला आती है !

(२) गज-मोतियों की झड़ी-सी कौन लगाता है और कौन उन्हें हार बनाता है ?

(३) 'नभ के श्याम चँदोवा' से क्या तात्पर्य है ? धरा का हरा फर्श क्या है ? विश्व कैसे हरे रंग से नहा गया है ?

(४) चौथे पद्य में वर्णित दृश्य का अपनी भाषा में वर्णन करो ।

प्रयोग और व्याकरण—

नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—

छीने, झिल्लियाँ, संजोया हुआ, परिधान, तन्मय ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नीचे लिखे शब्दों में अलङ्कार बताओ—

सुरा-सी, अप्सरा-सी, ओलों के रूप में, स्वाति-सुधा।

(६) जमशेद जी नसरवान जी ताता

(सम्पादक द्वारा लिखित)

आज विज्ञान का युग है। विज्ञान की खोजों द्वारा बनी हुई मशीनों के सहारे हमारे अधिकतर काम चलते हैं। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि वैज्ञानिक आविष्कारों के कारण हमारा आज का युग मशीन-युग है।

इस कारण आजकल के समय में उसी देश की उन्नति हो सकती है जो कल-कारखानों से भरा हो, जहाँ मशीनें बनती हों और जहाँ समस्त उपभोग्य वस्तुओं का उत्पादन अधिक होता हो।

हमारा देश अभी इन बातों में बहुत पिछड़ा है। पश्चिमी यूरोप के देश, रूस, आस्ट्रेलिया, जापान और अमेरिका की तुलना में अब तक हमारे देश में कल-कारखाने, मिल-फैक्टरियाँ और व्यवसाय-केन्द्र नहीं हैं।

जब आज भी यह हालत है तब आज से लगभग एक शताब्दी पूर्व इस देश की क्या अवस्था थी, इसका हम अनुमान कर सकते हैं। और उस समय जिस महापुरुष ने इस देश में व्यवसाय और उद्योग को उन्नत करने का निश्चय किया, वह कितना विचारशील और दूरदर्शी रहा होगा।

श्री जमशेदजी नसरवानजी ताता वह पहले व्यक्ति हैं जिन्होंने बड़े पैमाने पर देश में मशीन और यन्त्रों की सहायता से उद्योग-व्यवसाय की उन्नति के लिए प्रशंसनीय प्रयत्न किया।

बड़ोदा-राज्य के नवसारी गाँव में जमशेदजी ताता का जन्म हुआ। इनके माता-पिता पारसी थे। इनके कुल में पारसियों की पुरोहिती बहुत दिनों से चली आ रही थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारतीय उद्योग के नेता।

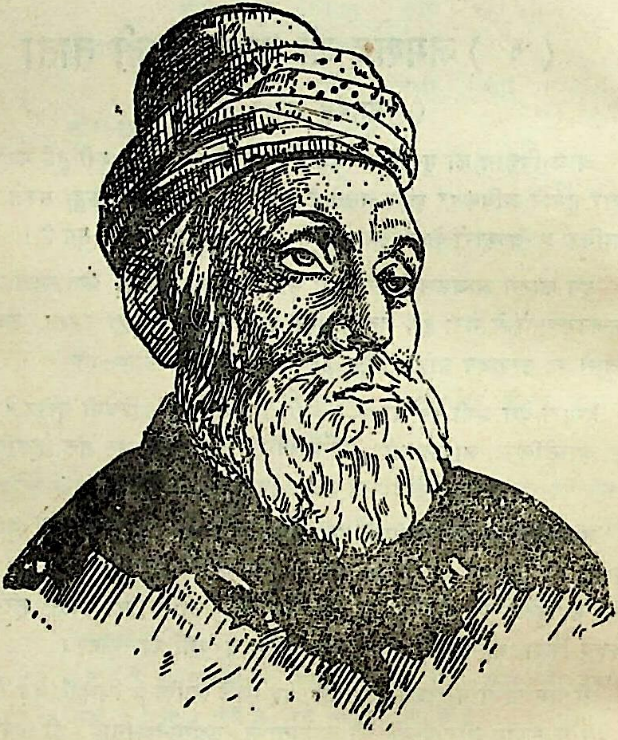

स्व० जमशेद जी नसरवान जी ताता

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर जमशेदजी का मन उधर नहीं लगा। गाँव की पाठशाला में पढ़ाई समाप्त कर जमशेद जी बम्बई के एलफिस्टन कालेज मे पढ़ने आए। बम्बई आने पर उनकी आँखें खुलीं। उन्होंने देखा, इस युग में मशीनों—यन्त्रों का महत्त्व है। उन्होंने वहीं यह भी देखा कि भारत इस दिशा में कितना पिछड़ा हुआ है!

उद्योग-व्यवसाय की उन्नति न होने के कारण एक ओर तो देश की उन्नति नहीं हो पा रही है, दूसरी ओर देश का सोना विदेश के रोजगारी लूटे ले जा रहे हैं और इस हरे-भरे देश को दरिद्र बना रहे हैं। जिस देश में कपास, जूट कोयला आदि कच्चे माल उत्पन्न होते हैं, वहाँ इनका उपयोग नहीं होता था। विदेशी व्यापारी यहाँ से सस्ते दामों में इन चीजों को खरीदकर अपने यहाँ ले जाते और उन्हीं की बनी वस्तुओं से यहाँ वालों को लूटते थे।

यह सब देखकर जमशेद जी ने भारत में उद्योग-व्यवसाय बढ़ाने और यान्त्रिक उन्नति करने का निश्चय किया। उन्होंने निश्चय किया कि अपने भरसक इस देश की उद्योग-लक्ष्मी को विदेश जाने से रोकेंगे।

अतः १९ वर्ष की अवस्था में अधिक किताबी पढ़ाई को बेकार समझ कर उन्होंने पढ़ना-लिखना छोड़ दिया और अपना ध्यान उद्योग-व्यवसाय की उन्नति की ओर देने लगे। एशिया के हाँगकाँग शहर में जाकर उन्होंने व्यापार की सच्ची और व्यावहारिक शिक्षा प्राप्त की। वहाँ से लौटने पर कुछ दिन और बीते।

उसके बाद कपड़े की सुन्दर और विशाल मिल खोलने के लिए उन्होंने इँग्लैंड जाकर मैनचेस्टर के कपड़ा बनाने वाले कारखानों को देखने और तदनुसार यहाँ भी उद्योग आरम्भ करने का निश्चय किया। उन दिनों भारत में अधिकतर विदेशी कपड़े वहीं से आते थे। मैनचेस्टर सारे संसार में कपड़े के कारखानों का महान् केन्द्र माना जाता था। वहाँ के कपड़े भी उत्तम कोटि के होते थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वहाँ जाकर और सभी बातों की पूरी जानकारी प्राप्त करने बाद वे यहाँ लौटे और मध्यभारत के उस क्षेत्र में, जहाँ रुई की उपज अधिक होती है, उन्होंने कपड़े का विशाल कारखाना–'दि इम्प्रेस मिल' खोली।

नागपुर में इस केन्द्र को खोलने के बाद वे जापान गए। वहाँ जापानियों के वस्त्र-उत्पादन-सम्बन्धी उद्योग-व्यवसाय की उन्होंने पूरी जानकारी प्राप्त की। और अन्त में 'स्वदेशी मिल' का जन्म हुआ।

इसके अनन्तर उन्होंने जमशेदपुर का कारखाना खोला। समीप ही कोयले की खानों की मिल बन जाने से यह कारखाना दिन पर दिन उन्नति करता गया। आज वहाँ लगभग ७०-८० हजार मजदूर काम करते हैं। दूर-दूर के देशों में इस कारखाने के सामान जाते हैं। महायुद्ध में भारत सरकार के लड़ाई के हजारों आवश्यक सामान यहाँ बनते थे। जमशेदपुर की यह 'ताता आयरन ऐंड स्टील कम्पनी' दुनियां भर में प्रसिद्ध ही नहीं है वरन् दुनियाँ के सबसे बड़े कारखानों में एक है।

इस प्रकार बम्बई का बिजली घर भी; 'ताता हाइड्रो एलेक्ट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी' को—जिसे ताता ने बनाया—दुनिया के बड़े कारखानों में आज स्थान प्राप्त है।

इन सब उद्योग-व्यवसायों को चलाने के मार्ग में उन्हें अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। पर सब को वे पार करते गए। धन भी उन्हें मिला। उन्होंने लिमिटेड कम्पनी खोलकर पर्याप्त धन इकट्ठा किया। ताता कम्पनी के शेयरों का दाम आज भारतवर्ष में सबसे ऊँचा है।

उन्हें अपने लिए धन का अतिलोभ नहीं था। उनके कार्यों के मूल में देश की औद्योगिक उन्नति का भाव मुख्य था। इसी कारण उन्होंने 'ताता-फंड' भी खोला। इस फंड से उधार के रूप में धन लेकर कोई भी व्यक्ति वैज्ञानिक औद्योगिक और इंजीनियरिंग की शिक्षा प्राप्त करने विदेश जा सकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उनका मन एक 'रिसर्च इंस्टिट्यूट' (अनुसंधानशाला) खोलने का था। यद्यपि यह संस्था उनके जीवन-काल में न खुल सकी, पर उनकी इच्छा के अनुसार ताता की ओर से बंगलोर में अब यह संस्था खुल गई है।

उत्साही, साहसी और कर्मठ तथा देशप्रेमी व्यवसायी होने के साथ-साथ वे बड़े ही उदार थे। मजदूरों की, कारखानों में काम करने वाले श्रमिकों की उन्नति की ओर उनका सदा ध्यान रहता था। वे पैसा चूसकर केवल अपनी थैला नहीं भरना चाहते थे। वे तो चाहते थे सारे देश को सम्पन्न बनाना।

इसी कारण अपने कारखानों में काम करने वाले मजदूरों के लिए स्कूल, अस्पताल, पुस्तकालय और खेलने के स्थान आदि की वे सदा व्यवस्था करते थे। मजदूरों को इनाम देना, बोनस देना, उनके बाल-बच्चों को खिलाना-पढ़ाना आदि का—वे पूरा-पूरा प्रबन्ध रखते थे। उनके यहाँ काम करने वाले मजदूर भारत में सब मजदूरों से अधिक सुखी हैं। उनकी ओर से आज समाज विज्ञान की शिक्षा देने की भी एक संस्था चल रही है जो भारत में अपने ढंग की एक ही है।

१८०४ ई० के मई महीने में अपने कर्मशील और व्यस्त जीवन का काम पूरा कर जमशेदजी नसरवानजी ताता चले गए। पर उनकी तीनों संस्थाओं—'ताता हाइड्रो एलेकट्रिक पावर सप्लाई कम्पनी', 'रिसर्च इंस्टिट्यूट' तथा 'ताता आयरन ऐंड स्टील कम्पनी'—के रूप में उनकी कीर्त्ति आज भी स्थायी है।

उनकी मृत्यु पर बम्बई के टाउनहाल की शोक-सभा में बम्बई के गवर्नर चीफ जस्टिस आदि उपस्थित थे और टाउनहाल खचाखच भरा था। लोगों के मुंह पर उदासी छाई हुई थी। तैयबजी ने शोक भरे शब्दों में अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की थी। उस दिन दिखाई पड़ा कि ताता के प्रति लोगों के हृदय में कैसा प्रेम था।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) आज के युग में विज्ञान का क्या महत्त्व है ? (२) देश की उन्नति के लिए कल-कारखाने क्यों आवश्यक हैं ? जमशेदजी ताता ने क्यों औद्योगिक उन्नति करने का निश्चय किया ? उनके व्यावसायकेन्द्रों में मजदूरों की अवस्था कैसी है ? उनके यश को फैलाने वाली कौन-कौन संस्थाएँ हैं ?

प्रयोग और व्याकरण—

प्रयोग—नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताओ और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो और उनमें पांच की पदव्याख्या करो।

वैज्ञानिक, आविष्कार, उत्पादन, उपभोग्य, उद्योग-व्यवसाय, कर्मठ, यांत्रिक, अनुसन्धानशाला और श्रमिक।

व्याकरण—नीचे लिखे पदों में समास बताओ—

अनुसन्धानशाला, महापुरुष, उद्योग-व्यवसाय।

(७) महाराणा प्रताप

हल्दीघाटी के युद्ध में

रचयिता : श्री श्यामनारायण पाण्डेय

परिचय—श्री श्यामनारायण पाण्डेय आधुनिक हिन्दी में वीररस के एक विख्यात कवि हैं। 'हल्दीघाटी' और 'जौहर'—दोनों वीरता से ओत-प्रोत इनके प्रसिद्ध प्रबन्ध काव्य हैं। इनकी कविता भावभरी होने पर भी सरल होती है। कवि-सम्मेलनों में इनकी कविता सुनने की धूम मच जाती है। वीरता की इनकी कविताओं में बड़ा प्रवाह है। उनमें प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति है। यह अंश 'हल्दीघाटी' काव्य है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अमर सेनानी

महाराणा प्रताप सिंह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[संदर्भ—मानसिंह राणा के अतिथि के रूप में भोजन करने बैठे। पर अकबर के साथ मानसिंह की फूआ का विवाह होने से महाराणा साथ खाने न आए ! इसे अपना अपमान समझकर धमकी देकर मानसिंह चले गए। अकबर की विशाल सेना के साथ राणा से हल्दीघाटी में घोर युद्ध हुआ।]

(१--चेतक)

मेवाड़ केशरी देख रहा,
केवल रण का न तमाशा था।
वह दौड़-दौड़ करता था रण,
वह 'मान' रक्त का प्यासा था ॥ १ ॥

चढ़कर चेतक पर घूम-घूम,
करता सेना रखवाली था।
ले महामृत्यु को साथ-साथ,
मानो प्रत्यक्ष कपाली था ॥ २ ॥

रण बीच चौकड़ी भर-भर कर
चेतक बन गया निराला था।
राणा प्रताप के घोड़े से,
पड़ गया हवा का पाला था ॥ ३ ॥

गिरता न कभी चेतक तन पर,
राणा प्रताप का कोड़ा था।
वह दौड़ रहा अरि-मस्तक पर,
या आसमान पर घोड़ा था ॥ ४ ॥

जो तनिक हवा से बाग हिली,
लेकर सवार उड़ जाता था।
राणा की पुतली फिरी नहीं,
तब तक चेतक मुड़ जाता था ॥ ५ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है यहीं रहा, अब यहाँ नहीं,
वह यहीं रहा, है वहाँ नहीं '
थी जगह न कोई जहाँ नहीं,
किस अरि-मस्तक पर कहाँ नहीं ॥ ६ ॥

(२—राणा की तलवार)

चढ़ चेतक पर तलवार उठा,
रखता था भूतल-पानी को।
राणा प्रताप शिर काट-काट,
करता था सफल जवानी को ॥ ७ ॥

कल-कल बहती थी रणगंगा,
अरि-दल को डूब बहाने को।
तलवार वीर की नाव बनी,
चटपट उस पार लगाने को ॥ ८ ॥

वैरी दल को ललकार गिरी,
वह नागिन-सी फुफकार गिरी।
था शोर मौत से बचो-बचो,
तलवार गिरी, तलवार गिरी ॥ ९ ॥

क्षण इधर गई, क्षण उधर गई,
क्षण चढ़ी बाढ़ सी उतर गई।
था प्रलय चमकती जिधर गई,
क्षण शोर हो गया किधर गई ॥१०॥

क्या अजब विषैली नागिन थी,
जिसके डसने में लहर नहीं।
उतरी तन से मिट गये वीर,
फैला शरीर में जहर नहीं ॥११॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२—राणा का रण-कौशल)

सेना–नायक राणा के भी,
रण देख-देखकर चाह भरे
मेवाण सिपाही लड़ते थे,
दूने तिगुने उत्साह भरे ॥१२॥

क्षण मार दिया कर-कोड़े से,
रण किया उतरकर घोड़े से।
राणा रण-कौशल दिया दिखा,
चढ़ गया उतर कर घोड़े से ॥१३॥

अति भीषण हलचल मचा-मचा,
राणा-कर की तलवार बढ़ी।
था शोर 'रक्त पीने को यह,
रणचंडी जीभ पसार बढ़ी' ॥१४॥

जो साहस कर बढ़ता उसको,
केवल कटाक्ष से टोंक दिया।
जो वीर बना नभ-बीच फेंक,
बरछी पर उसको रोक दिया ॥१५॥

क्षण उछल गया अरि-घोड़े पर,
क्षण लड़ा, सो गया घोड़े पर।
बैरी–दल से लड़ते–लड़ते,
क्षण खड़ा हो गया घोड़े पर ॥१६॥

क्षण भर में गिरते रुंडों से,
मदमस्त गजों के शुंडों से,
घोड़े के विकल वितुंडों से,
पट गई भूमि नर-मुण्डों से ॥१७॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसा रण राणा करता था,
पर उसको था सन्तोष नहीं।
क्षण-क्षण आगे बढ़ता था वह
पर कम होता था रोष नहीं ॥ १८ ॥

कहता था, 'लड़ता मान कहाँ ?'
'मैं कर लूँ रक्त-स्नान कहाँ ?'
'जिस पर तय विजय हमारी है,
वह मुगलों का अभिमान कहाँ ?' ॥ १९ ॥

भाला कहता था, 'मान कहाँ ?'
घोड़ा कहता था 'मान कहाँ ?'
राणा की लोहित आँखों से
रव निकल रहा था 'मान कहाँ ?' ॥ २० ॥

लड़ता अकबर 'सुलतान कहाँ ?'
'वह कुल-कलंक है मान कहाँ ?'
राणा कहता था बार-बार
'मैं करूँ शत्रु-बलिदान कहाँ ?' ॥ २१ ॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

सेना की रखवाली करता हुआ राणा प्रत्यक्ष कपाली-सा क्यों जान पर रहा था ? चेतक में कौन-कौन सी विशेषताएँ थीं ? राणा प्रताप 'भूतल-पानी' को कैसे रख रहा था ? वीर की तलवार कैसे नाव बनी थी ? उसका क्या काम था ? तलवार 'विषैली नागिन' क्यों कही गई है ? इस नागिन की क्या विशेषता है ? राणा की तलवार हलचल मचाती हुई बढ़ती क्यों जान पड़ रही थी ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोग और व्याकरण—

निम्नलिखित अंशों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

घोड़े से हवा को पाला पड़ गया था। लेकर सवार उड़ जाता था। जिसके डसने में लहर नहीं।

८, १९ और २० संख्यक पद्यों के भावार्थ लिखो।

व्याकरण—निम्नलिखित में अलंकार बताओ—

(१) ले महामृत्यु को.........कपाली था। (२) कलकल.........लगाने को। (३) नागिन-सी।

(८) कर्तव्य

लेखक : बाबू श्यामसुन्दर दास

परिचय—स्वर्गीय बाबू श्यामसुन्दर दास हिन्दी के सुप्रसिद्ध साहित्यकार थे। वे अनेक वर्षों तक काशी विश्वविद्यालय में हिन्दी-विभाग के अध्यक्ष थे। काशी नागरी प्रचारिणी सभा उन्हीं की तपस्या का फल है। हिन्दी-साहित्य सम्मेलन के जन्मदाताओं में भी वे प्रमुख रहे। उन्होंने बहुत सी पुस्तकें, और अनेक निबन्ध आदि लिखे है। इस निबन्ध के वे ही लेखक हैं।

कर्तव्य वह वस्तु है जिसे करना हम लोगों का परम धर्म है। और जिसके न करने से हम लोग औार लोगों की दृष्टि से गिर जाते और अपने कुचरित्र से नीच बन जाते हैं। प्रारम्भिक अवस्था में कर्तव्य करना बिना दबाव के नहीं हो सकता, क्योंकि पहले ही पहल मन आप ही उसे करना नहीं चाहता। इसका आरम्भ पहले घर से ही होता है, क्योंकि यहाँ लड़कों का कर्तव्य माता-पिता की ओर, माता-पिता का कर्तव्य लड़कों की ओर देख पड़ता है। इनके अतिरिक्त पति-पत्नी, स्वामी-सेवक और स्त्री-पुरुष के भी परस्पर अनेक कर्तव्य हैं। घर के बाहर हम मित्रों, पड़ोसियों और राजा-प्रजा के परस्पर कर्तव्यों को देखते हैं। इसलिए संसार में मनुष्यों का जीवन कर्तव्यों से भरा पड़ा है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिधर देखें उधर ही कर्त्तव्य ही कर्त्तव्य देख पड़ते हैं। बस ! इसी कर्त्तव्य का पूरा-पूरा पालन करना हम लोगों का धर्म है, और इसी से हम लोगों के चरित्र की शोभा बढ़ती है। कर्त्तव्य का करना न्याय पर निर्भर है, और वह न्याय ऐसा है। जिसे समझने पर हम लोग प्रेम के साथ उसे कर सकते हैं।

हम सब लोगों के मन में एक ऐसी शक्ति है जो हम सभी को बुरे कामों के करने से रोकती है और अच्छे कामों की ओर हमारी प्रवृत्ति को झुकाती है। यह बहुधा देखा गया है कि जब कोई मनुष्य खोटा काम करता है, तब बिना किसी के कहे आप ही लजाता और अपने मन में दुखी होता है।

ऐसा बहुधा देखा जाता है कि जब कभी कोई लड़का किसी मिठाई को चुराकर खा लेता है, तब वह मन में डरा करता है और पीछे से आप ही पछताता है कि मैंने ऐसा काम क्यों किया, मुझे अपनी माता से कहकर खाना था। इसी प्रकार का एक दूसरा लड़का जो कभी कुछ चुराकर नहीं खाता, सदा प्रसन्न रहता है और उसके मन में कभी किसी प्रकार का डर और पछतावा नहीं होता। इसका क्या कारण है ? यही कि हमलोगों का कर्त्तव्य है कि हम कभी चोरी न करें। परन्तु जब चोरी कर बैठते हैं, हमारी आत्मा हमें कोसने लगती है।

इसलिए हमारा यह धर्म है कि हमारी आत्मा हमें जो कहे, उसके अनुसार हम करें। दृढ़ विश्वास रखो कि जब तुम्हारा मन किसी काम को करने से हिचकिचाए और भागे, तब कभी तुम उस काम को न करो। तुम्हें अपना धर्म-पालन करने में बहुधा कष्ट उठाना पड़ेगा, पर इससे तुम साहस न छोड़ो। क्या हुआ जो तुम्हारे पड़ोसी ठग-विद्या और असत्यपरता से धनाढ्य हो गए और तुम कंगाल ही रह गए ? क्या हुआ जो दूसरे लोगों ने झूठी चाटुकारी करके बड़ी-बड़ी नौकरियाँ पा लीं और तुम्हें कुछ नहीं मिला, और क्या हुआ जो दूसरे नीच काम करके सुख भोगते हैं और तुम सदा कष्ट में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रहते हो ? तुम अपने कर्त्तव्य-धर्म को कभी न छोड़ो और देखो, इससे बढ़कर संतोष और आदर क्या हो सकता है कि तुम अपने धर्म का पालन कर सकते हो ।

हमलोगों का जीवन सदा अनेक कार्यों में व्यस्त रहता है । हम लोगों को सदा ही काम करते बीतता है । इसलिए इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि हमलोग सदा अपने धर्म के अनुसार काम करें और कभी उसके पथ पर से न हटें, चाहे उसके करने में हमारे प्राण भी चले जायँ तो कोई चिन्ता नहीं ।

धर्म-पालन करने के मार्ग में सबसे अधिक बाधा—चित्त की चञ्चलता, उद्देश्य कीं अस्थिरता और मन की निर्बलता से पड़ती है । मनुष्य के कर्त्तव्य-मार्ग में एक ओर रहता है आत्मा के भले और बुरे कर्मों का ज्ञान, और दूसरी ओर आलस्य और स्वार्थपरता रहती है । बस, मनुष्य इन्हीं दोनों के बीच में पड़ा रहता है और अन्त में यदि उसका मन पक्का हुआ तो वह आत्मा की आज्ञा मानकर अपने धर्म का पालन करता है और यदि उसका मन कुछ काल तक द्विविधा में पड़ा रहा तो स्वार्थपरता निश्चय उसे आ घेरेगी और उसका चरित्र घृणा के योग्य हो जायगा । इसलिए यह बहुत आवश्य है कि आत्मा जिस बात को करने की प्रवृत्ति दे, उसे बिना अपने स्वार्थ सोचे, झटपट कर डालना चाहिए । ऐसा करते-करते जब धर्म करने की बान पड़ जायगी, तब फिर किसी बात का भय न रहेगा । देखो इस संसार में जितने बड़े-बड़े लोग हो गये हैं, जिन्होंने संसार का उपकार किया है और उसके लिए आदर और सत्कार पाया है उन सभी ने अपने कर्त्तव्य को सबसे श्रेष्ठ माना है, क्योंकि जितने कर्म उन्होंने किए, उन सभों में अपने कर्त्तव्य पर ध्यान देकर न्याय का बर्ताव किया । जिन जातियों में यह गुण पाया जाता है, वे ही संसार में उन्नति करती हैं और संसार में उन्हीं का नाम आदर के साथ लिया जाता है एक समय किसी अंग्रेजी जहाज में, जब वह बीच समुद्र में था,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक छेद हो गया। उस पर बहुत सी स्त्रियाँ और पुरुष थे। उनके बचाने का पूरा-पूरा उद्योग किया गया। पर जब कोई उपाय सफल न हुआ, तब जितने बच्चे और जितनी स्त्रियाँ उस पर थीं, सब नावों पर चढ़ा कर विदा कर दी गईं और जितने पुरुष उस पोत पर बच गये थे, उन्होंने उसकी छत पर इकट्ठे होकर ईश्वर को धन्यवाद दिया कि वे अब तक अपना कर्त्तव्य पालन कर सके। निदान, इसी प्रकार ईश्वर की प्रार्थना करते-करते उस पोत में पानी भर आया और वह डूब गया पर वे लोग अपने स्थान पर ज्यों के त्यों खड़े रहे। उन्होंने अपने प्राण बचाने का कोई उद्योग नहीं किया। इसका कारण यह था कि यदि वे अपने प्राण बचाने का उद्योग करते तो स्त्रियाँ और बच्चे न बच सकते। इसीलिए उस पोत के लोगों ने अपना धर्म यही समझा कि अपना प्राण देकर स्त्रियों और बच्चों के प्राण बचाने चाहिये। इसी के विरुद्ध फ्रांस देश के रहने वालों ने एक डूबते हुये जहाज पर से अपने प्राण तो बचाए, किन्तु उस पोत पर जितनी स्त्रियाँ और बच्चे थे, उन सबों को उसी पर छोड़ दिया। इस नीच कर्म की सारे संसार में निन्दा हुई। इसी प्रकार जो लोग स्वार्थी होकर अपने कर्त्तव्य पर ध्यान नहीं देते, वे संसार में लज्जित होते हैं और सब लोग उनसे घृणा करते हैं।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) कर्त्तव्य किसे कहते हैं ? साधारण काम और कर्त्तव्य मे क्या अन्तर हैं ? (२) सबसे पहले इसका आरम्भ कहाँ से होता है और कैसे ? (३) हम लोगों को बुरे कामों की ओर से कौन रोकता है ? (४) किसी काम के करने में मन हिचकचाने पर क्या करना चाहिए ? (५) धर्म और कर्त्तव्य के पालन में सब से अधिक बाधा किससे पहुँचती है ? (६) कर्त्तव्य-पालन की महिमा का उदाहरण देकर समझाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोग और व्याकरण—

(१) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ और वाक्यों में उनका प्रयोग करो—व्यय, धनवान्, कंगाल, असत्यपरता, हिचकिचाना ।

(२) नीचे लिखे पदों में समास बताओ—

माता-पिता, स्वामी-सेवक, स्त्रीपुरुष, कर्त्तव्य-मार्ग ।

---

(९) कबीर-बानी

रचयिता : संत कबीर

कवि-परिचय—संत कबीर एक बहुत बड़े महापुरुष थे। उन्होंने अपनी बानी द्वारा उपदेश दिया है कि—आपसी मत-भेद भुलाकर और दिखावटी पाखंड छोड़कर सच्चे हृदय से भगवान् को प्रेम करना चाहिए । उन्होंने नीति के भी उपदेश दिए हैं।

'कबिरा' संगति साधु की, ज्यों गंधी को बास ।
जो कुछ गंधी दे नहीं, तौ भी बास सुबास ॥ १ ॥
कुमोदिनी जलहर बसै, चन्दा बसै अकास ।
जो जाही की भावना, सो ताही के पास ॥ २ ॥
निंदक दूर न कीजिए, दीजै आदर-मान ।
तन-मन सब निरमल करै, बकि बकि आनहिं आन ॥ ३ ॥
'कबिरा' घास न निंदिए, जो पावों तर होय ।
उड़ि कै परै जो आंख में, खरा दुहेला होय ॥ ४ ॥
ऊँचे कुल का जनमिया, करनी ऊँच न होय ।
सुवरन कलस सुरा-भरा, साधू निंदै सोय ॥ ५ ॥
माला फेरत जुग गया, गया न मन का फेर ।
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर ॥ ६ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मूड़ मुड़ाए हरि मिलें, सब कोइ लेय मुड़ाय।
बार-बार के मूड़ते, भेड़ न वैकुँठ जाय ॥ ७ ॥
लघुता से प्रभुता मिलै, प्रभुता से प्रभु दूरि।
चींटी ले शक्कर चली, हाथी के सिर धूरि ॥ ८ ॥
छमा बड़न को चाहिए छोटन को उतपात।
कहा विष्णु को घटि गयो, जो भृगु मारी लात ॥ ९ ॥
खोद-खाद धरती सहै, काट कूट बनराय।
संत सहैं दुर्जन वचन, औरन सहा न जाय ॥ १० ॥
मूरख के समझावते, ज्ञान गाँठ को जाय।
कोयला होय न ऊजरा, सौ मन साबुन लाय ॥ ११ ॥
साँचे साप न लागई, साँचे काल न खाय।
साँचे को साँचा मिलै, साँचे माहि समाय ॥ १२ ॥
तेरा साईं तोहि में, ज्यों पुहुपन में वास।
कस्तूरी का मिरग ज्यों, फिरि-फिरि ढूँढै घास ॥ १३ ॥
पपिहा पन को ना तजै, तजै तो तन बेकाज।
तन छूटे तो कछु नहीं, पन छूटे है लाज ॥ १४ ॥
जा घट प्रेम न संचरै, सो घट जान मसान।
जैसे खाल लोहार की, साँस लेत बिनु प्रान ॥ १५ ॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) साधु की संगति क्यों अच्छी कही गई है ?

(२) निंदक को दूर क्यों न करना चाहिए ?

(३) 'माला फेरना' और 'मूड़ मुड़ाना'—इनसे भगवान् क्यों नहीं मिलते ?

(४) चींटी शक्कर लेकर क्यों चलती है और हाथी के सिर धूल क्यों रहती है ?

(५) १३ और १४ संख्यक पद्यों की व्याख्या करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोग और व्याकरण—

(१) इनमें जो ५ पद्य अच्छे लगें उन्हें कंठस्थ करके सुनाओ।

(२) नीचे की पंक्तयों में कौन अलंकार हैं—

'कबिरा संगति······वास'। मूरख के समझावते······साबुन लाय।

(१०) स्वामी रामतीर्थ

(सम्पादकीय)

परिचय—आधुनिक युग में जिन महात्माओं ने विदेशों में भारत का मस्तक ऊँचा किया उनमें स्वामी रामतीर्थ का बड़ा ही प्रमुख स्थान है। यह पंजाब के रहने वाले और गोस्वामी तुलसीदास के वंशज बताये जाते हैं। छात्रावस्था से ही इनकी तीव्र बुद्धि और सदाचरण की छाप लोगों पर पड़ने लगी थी। अन्त में ये संन्यासी हो गये और विदेशों में भारतीय दर्शन के गौरव की धूम मचा दी। इनके व्याख्यान एवं लेख अत्यन्त प्राणवान होते थे।

भारतवर्ष आदिकाल से ही अनेक महर्षियों और महात्माओं की जन्म-भूमि रहा है। वेदों के आविर्भाव-काल से इस देश में बड़े-बड़े विद्वान्, महात्मा, सन्त और साधक होते आए हैं। कपिल और कणाद, गौतम और पतञ्जलि, बुद्ध और महावीर, कालिदास और पाणिनि, शंकराचार्य और कुमारिल भट्ट, कबीर और नानक, सूर और तुलसी, महात्मा गांधी और संत विनोबा भावे आदि अनेक महापुरुषों ने यहाँ जन्म लिया। इन लोगों ने अपने ज्ञान और उपदेश में इस देश को ऊँचा उठाया। आज के युग में भी कवीन्द्र रवीन्द्र और महर्षि अरविन्द जैसे महापुरुषों ने इस देश का महत्त्व संसार के सामने सिद्ध कर दिया।

उन्नीसवीं शताब्दी में दो महापुरुष इस देश में ऐसे हुए जिन्होंने विदेशों में जाकर, विशेषतः अमेरिका में भारत का संदेश सुनाया और भारतवर्ष का आध्यात्मिक महत्त्व सबके सामने सिद्ध किया। स्वामी विवेकानन्द और स्वामी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारत की आत्मा के संदेश-वाहक

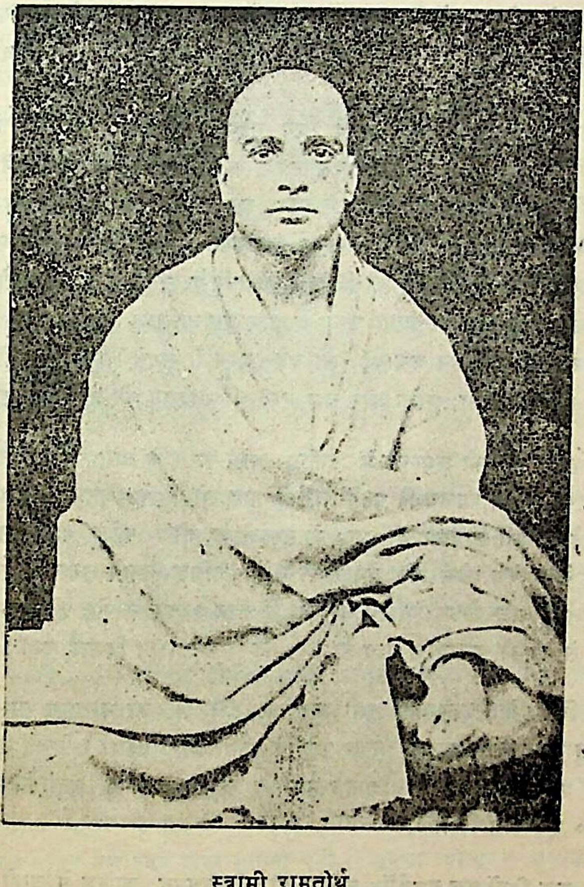

स्वामी रामतीर्थ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रामतीर्थ ने अमेरिका में जाकर यहाँ की जो ज्ञानभरी बातें सुनाई उन्हें सुन-कर वहाँ के विचारकों के मस्तक श्रद्धा से भारत के सामने झुक गए और आध्यात्मिक ज्ञान के विचार से उन्होंने भारत का महत्त्व स्वीकार किया।

स्वामी रामतीर्थ भारत माँ के प्रिय सुपुत्र थे। पंजाब के गुजरानवाला जिले में १८७३ ई० की बाईसवीं अक्टूबर को मुराली नामक गांव में इन्होंने जन्म लिया। गाँव की पाठशाला में पढ़ाई समाप्त करने के बाद गुजरानवाला जिले के हाई स्कूल में उन्होंने पढ़ना आरम्भ किया। पिता के एक मित्र, भगत धन्नारामजी के यहां, जो कि बड़े वेदान्ती थे, उन दिनों रामतीर्थ रहते थे। वहाँ साधु-महात्मा आया करते थे और योगवाशिष्ठ की कथा हुआ करती थी। रामतीर्थ भी इन कथाओं को बड़े चाव से सुनते थे और उन्हीं दिनों उनके हृदय में ज्ञान, भक्ति और धर्म सम्बन्धी भावना की जड़ जम गई।

पन्द्रह वर्ष की अवस्था में इन्ट्रेन्स पास करने के बाद पिता के विरोध करने पर भी वे कालेज में पढ़ने लगे। कुछ लोगों के चिढ़ाने पर एक दिन उन्होंने फारसी छोड़कर बी० ए० में संस्कृत ले ली। पहले कभी संस्कृत न पढ़ने के कारण कोर्स की तैयारी में उन्हें अधिक समय लगाना पड़ा और संस्कृत में पास होकर भी वे अंग्रेजी में चार नम्बर से फेल हो गए। फेल होने से उनकी छात्रवृत्ति बन्द हो गई, पढ़ना छूटता-सा दिखाई पड़ा।

विवाह हो चुका था। इसी कारण स्त्री के खर्च का भी प्रश्न सामने था। किन्तु मौसा की सहायता पाकर उन्होंने पढना जारी रक्खा। अच्छे नम्बरों से बी० ए० पास करने के बाद इक्कीस वर्ष की अवस्था में उन्होंने गणित से एम० ए० पास किया।

कुछ दिनों तक गवर्नमेंट कालेज और क्रिश्चियन कालेज में उन्होंने प्रोफे-सरी और सियालकोट के स्कूल में हेडमास्टरी भी की। दो छोटे-छोटे लड़के हो चुके थे, इस कारण कुटुम्ब के पालन का बोझ और उनका बन्धन था,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फिर भी दिन-रात उनका मन ईश्वर-चिन्ता और वैराग्य की ओर लगा रहा।

एक बार द्वारिकापीठ के शंकराचार्य लाहौर आए। उन दिनों रामतीर्थ सनातनधर्मसभा के मंत्री थे। उसी नाते रामतीर्थ ने उनका स्वागत किया। इनकी सेवा से प्रसन्न होकर शंकराचार्य—जो कि बड़े भारी वेदान्ती और दर्शन के विद्वान थे—रामतीर्थ को अपने साथ कश्मीर ले गए।

उनके सत्संग में ज्ञान की बातें और ईश्वर-चर्चा होती रही। वहां से लौटने पर दो वर्ष बाद स्त्री-बच्चों को—और जो कुछ पैसा रुपया एकत्र किया था उसे—पिता के पास भेजकर रामतीर्थ ने संन्यास ले लिया और हरिद्वार पहुँच कर उन्होंने लंगोटी धारण की। वहां से भी आगे बढ़कर कुछ दिनों तक हृषीकेश में रहे। एकबार अमरनाथ की यात्रा करते समय कपड़े की कमी से उन्हें निमोनियां भी हो गया था। पर स्वामीजी ने उसकी परवाह न की।

लाहौर में वे अत्यन्त विख्यात हो गये थे। रामतीर्थ की ज्ञानभरी बातें सुनने के लिए बहुत से लोग उनके आश्रम में पहुँचा करते थे। उनके व्याख्यान सुनकर श्रोता-गण पुलकित हो जाते थे। कुछ दिनों बाद उन्होंने बदरीनारायण की भी यात्रा की जिसका वर्णन स्वयं उन्होंने अंगरेजी में लिखा है।

उनकी अधिक प्रसिद्धि 'शान्ति-आश्रम' मथुरा की ओर से होने वाली तीन दिनों की उस सभा से हुई, जिसमें हिन्दू, मुसलमान, ईसाई वगैरह सभी सम्मिलित हुए। स्वामीजी ही सभापति थे। इस सभा में एक पादरी ने कृष्ण की निन्दा की। लोग बड़े क्रुद्ध हुए। पर स्वामीजी ने अपनी तर्कयुक्त और मीठी बातों से पादरी को ऐसा समझाया कि अपनी भूल के लिए लज्जित होकर उसे स्वयं क्षमा मांगनी पड़ी। उनका व्याख्यान सुन कर लोग मुग्ध हो गये और सभा समाप्त होने के बाद भी कुछ दिनों तक उन्हें मथुरा में ही लोगों का आग्रह देखकर रहना पड़ा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसके पश्चात् स्वामीजी घूमते-घूमते टेहरी नरेश के यहाँ पहुँचे। यहाँ राजमहल में नहीं बल्कि एक कुटी में रहने लगे। वहाँ जाकर और भूमि पर बैठकर स्वयं टेहरी नरेश उनके उपदेश सुनते थे।

कुछ दिनों बाद वे कलकत्ता होते हुए जापान गए और टोकियो-यूनिवर्सिटी में 'सफलता के रहस्य' पर दिए गए उनके भाषण को सुनकर लोग मुग्ध हो गए। कुछ ही दिनों बाद वे जापान से अमेरिका चल पड़े। उनका पहनावा देखकर जहाज में लोग आश्चर्य करते। जहाज में ही अमेरिकी संवाददाता से उनकी भेंट हो गयी और अमेरिका पहुँचने के पहले ही उनके स्वागत की तैयारी बड़े धूमधाम से और बड़े उत्साह के साथ की गयी थी।

अमेरिका में उनका भव्य स्वागत हुआ। उनके भाषणों की वहां धूम मच गई। आदर के साथ लोग जगह-जगह उनके व्याख्यान कराते। धार्मिक भेद-भाव भूलकर, ईश्वर को एक मानकर भगवान् के स्मरण का वे उपदेश देते। उन्हीं व्याख्यानों के सिलसिले में भारतवासियों की दुर्दशा और अंग्रेजों द्वारा यहां के उद्योग-धन्धों को नष्ट करने और यहां की संस्कृति के भ्रष्ट किए जाने का उन्होंने सुन्दर प्रचार किया।

स्वामीजी के पहले विवेकानन्द ने भारत की महत्ता वहां स्थापित कर दी थी। वहां के लोगों में उत्सुकता थी, आदर था और सहानुभूति थी। स्वामी रामतीर्थ के पहुँचने पर तीन वर्षों तक वहां इनके भाषण और ज्ञानोपदेश को सुनने की धूम मची रही। अमेरिका वालों के बहुत आग्रह करने पर भी अमेरिका में वे अधिक न रुके। अपने देश की सेवा करने और यहां फैले हुए अज्ञान को दूर करने के विचार से वे भारत लौट आए। अमेरिका की प्रसिद्धि के कारण बड़े ठाट-बाट से यहां उनका स्वागत हुआ। देश भर का दौरा करके दार्शनिक ज्ञान का उन्होंने प्रचार किया। उनकी जादूभरी वाणी देशवासियों ने बड़े प्रेम से सुनी। साल भर बाद उनका स्वास्थ्य कुछ खराब हुआ। कुछ दिन वे व्यासाश्रम में रहे पर अन्त में टेहरी नरेश के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आग्रह पर राजधानी से पांच मील दूर गंगा किनारे मालिदेवल नामक गांव में रहने लगे।

पर उनका स्वास्थ्य सुधर न सका। अन्त में १९०६ ई० की सत्रहवीं अक्टूबर को उन्होंने अपनी मृत्यु के सम्बन्ध में एक पत्र लिखा और अपने सब लेख वगैरह एकत्र कर बस्ते में रख दिए। तदनन्तर स्नान करने के लिये वे भागीरथी की वेग से बहती धारा में गए और पांव फिसलने से उन्होंने गङ्गा में ही समाधि ले ली। बहुत ढूँढ-खोज करने के बाद उनका प्राण-रहित शरीर समाधि-मुद्रा में बैठा हुआ मिला जो बक्स में बन्द कर भागीरथी में बहा दिया गया।

अनित्य शरीर के न रहने पर भी उनके अमूल्य उपदेश सदा रहेंगे। उनकी वाणी बड़ी शक्तिशाली थी। उनके प्रत्येक शब्द में ज्ञान भरा था। उन्हें अपने में और संसार में, चारों-ओर, ईश्वर का ही रूप दिखाई पड़ता था। वे सभी को ईश्वर का पुतला कहते थे। सब जगह वर्तमान रहने पर भी उसके न मिलने का कारण स्वामी जी यह बतलाते थे कि लोग ईश्वर को पाने के लिए कांटों भरे मार्ग पर चलना नहीं चाहते। बिना साधना के ईश्वर नहीं मिलता।

उनका उपदेश था कि स्वार्थ त्यागकर और मजहबों का पचड़ा छोड़कर सत्यस्वरूप ईश्वर का ध्यान करना चाहिए। देश-सेवा करनी चाहिये। मातृभक्ति करनी चाहिए। अज्ञान के भ्रम को दूर करके निष्काम कर्म करना सच्चा त्याग है। त्याग से सभी कुछ पवित्र होता है। सत्य को पहचानने से पाप दूर होता है, भय और दण्ड से नहीं। सत्य की कसौटी पर कसा हुआ धर्म ही स्वीकार करना चाहिए। परमात्मा का अनुभव ब्राह्मण-भाव से होता है और परमानन्द का अनुभव क्षत्रिय और वैश्य भाव से, अर्थात् देश के लिए अपने को, अपनी शक्ति को और अपनी सम्पत्ति को समर्पित कर देने से होता है।

विद्या और ज्ञान का दान सर्वश्रेष्ठ दान है। मनुष्य अपने भाग्य की रचना करता है। प्रेम ही उसके जीवन में स्वर्ग है, सारा संसार उसका घर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है और परोपकार उसका धर्म है। सत्य पर दृढ़ रहना, सत्य को ठीक-ठीक जानना और किसी चीज की इच्छा न करना मनुष्य के जीवन की सच्ची उन्नति का मूल है। वे कहते थे कि भ्रम को त्यागो, जागो और स्वतंत्र बनो।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) अमेरिका जाकर किन दो महापुरुषों ने भारत का आध्यात्मिक सन्देश सुनाया ?

(२) बालक 'राम' के हृदय में भक्ति और धर्म की भावना कैसे जम गई ?

(३) उनके विद्यार्थी-जीवन का हाल बताओ।

(४) स्वामी जी की प्रसिद्ध कब और कहाँ हुई ?

(५) अमेरिका में उनका कैसा स्वागत हुआ ?

(६) स्वामी जी ने अमेरिका में क्या किया ?

प्रयोग और व्याकरण—

(क) पाठ के आधार पर स्वामी रामतीर्थ के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का लिखित वर्णन करो।

(ख) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ और स्वरचित वाक्यों में उनका प्रयोग करो— आध्यात्मिक, तर्कयुक्त, दार्शनिक, ओजस्विनी, प्राणरहित।

(ग) नीचे के समस्त पदों का विग्रह करके उनका अर्थ बताओ— आदिकाल, महापुरुष, प्राणरहित, संवाददाता, समाधिमुद्रा।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(११) हिमालय

रचयिता : श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

परिचय—रामधारी सिंह 'दिनकर' आधुनिक युग के बड़े सशक्त कवि थे। उत्साह वीरता और ओजस्वी भावों की कविता में आज उनके समान हिन्दी में कोई कवि नहीं है। भारतीय संस्कृति के प्रति अपार प्रेम भी इनकी रचना में रहता है। 'कुरुक्षेत्र', 'हुंकार' रश्मिरथी' 'उर्वशी' आदि इनके बहुत से प्रसिद्ध काव्य हैं।

मेरे नगपपि ! मेरे विशाल !

साकार दिव्य गौरव विराट !
पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल !
मेरी जननी के हिमकिरीट !
मेरे भारत के भव्य भाल !
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

युग-युग अजेय, निर्बन्ध मुक्त !
युग-युग गर्वोन्नत नित महान् !
निस्सीम व्योम में तान रहा
युग से किस महिमा का वितान ?
कैसी अखंड यह चिर समाधि ?
यतिवर ! कैसा यह अमर-ध्यान !
तू महाशून्य में खोज रहा
किस जटिल समस्या का निदान ?
उलझन का कैसा विषम जाल !
मेरे नगपति ! मेरे विशाल !

ओ मौन तपस्या-लीन यती !
पल-भर को तो कर दृगोन्मेष,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रे ज्वालाओं से दग्ध विकल,
है तड़प रहा पद पर स्वदेश ।
सुखसिंधु, पञ्चनद, ब्रह्मपुत्र,
गंगा-यमुना की अमिय धार,
जिस पुण्य भूमि की ओर बही,
तेरी विगलित करुणा उदार ।
जिसके द्वारों पर खड़ा क्रांत,
सीमापति तूने की पुकार—
'पददलित इसे करना पीछे,
पहले ले मेरा सिर उतार ।'
उस पुण्यभूमि पर आज तपी,
रे आन पड़ा संकट कराल ।
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे,
डँस रहे चतुर्दिक् विविध व्याल ।
कितनी मणियां लुट गयीं मिटा,
कितना मेरा वैभव अशेष ?
तू ध्यानमग्न ही रहा, इधर
वीरान हुआ प्यारा स्वदेश !
किन द्रौपदियों के बाल खुले ?
कितनी कलियों का हुआ अन्त ?
कह हृदय खोल चित्तौर, यहां
कितने दिन ज्वाल वसंत हुआ ?
पूछे, सिकता कण से हिमपति,
तेरा वह राजस्थान कहां ?
बन-बन स्वतन्त्रता-दीप लिए,
फिरने वाला बलवान कहाँ ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारत का प्रहरी

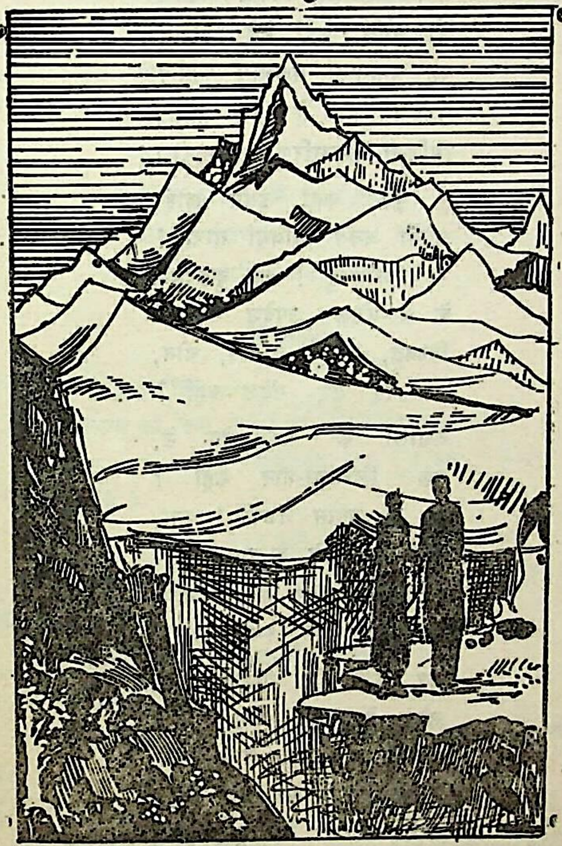

हिमालय

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू पूछ अवध से राम कहाँ ?
वृंदा ! बोलो, घनश्याम कहाँ ?
ओ मगध ! कहाँ मेरे अशोक ?
वह चन्द्रगुप्त बलधाम कहाँ ?
पैरों पर हो है पड़ी हुई ,
मिथिला भिखारिणी सुकुमारी ।
तू पूछ, कहाँ इसने खोईं,
अपनी अनंत निधियाँ सारी !
रा कपिलवस्तु ! कह, बुद्धदेव–
के वे मंगल उपदेश कहाँ ?
तिब्बत, इरान, जापान, चीन,
तक गए हुए संदेश कहाँ ?
वैशाली के भग्नावशेष से,
पूछ लिच्छवी-शान कहाँ ?
ओ री उदास गंडकी ! बता,
विद्यापति कवि के गान कहाँ ?
रे रोक युधिष्ठिर को न यहाँ,
जाने दे उनको स्वर्ग धीर ।
पर फिरा हमें गांडीव, गदा,
लौटा दे अर्जुन, भीम वीर !!
कह दे शंकर से आज करें,
वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार !
सारे भारत में गूँज उठे,
'हर-हर बम' का फिर महोच्चार !
ले अँगड़ाई उठ हिले धरा,
कर निज विराट स्वर में निनाद ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तू शैलराट् हुँकार भरे;
फट जाय कुहा, भागे प्रमाद ।
तू मौन त्याग, कर सिंहनाद,
रे तपी ! आज तप का न काल ।
नवयुग-शंखध्वनि जगा रही,
तू जाग, जाग, मेरे विशाल ।
मेरी जननी के हिम-किरीट !
नवयुग-शंखध्वनि जगा रही,
जागो नगपति ! जागो विशाल !

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) हिमालय को किस जननी का हिमकिरीट कहा गया है ?

(२) अमर ध्यान लगाकर हिमालय क्या ढूंढ़ रहा है ? और क्यों ढूंढ़ रहा है ?

(३) पद पर पड़ा कौन तड़प रहा है ? कहां संकट आ पड़ा है ?

(४) भारत की जिन-जिन प्राचीन विभूतियों का स्मरण कवि कर रहा है, उनका वर्णन करो ।

(५) नगपति को कवि क्यों जगाना चाहता है ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) इस पूरी कविता का संक्षिप्त सारांश लिखकर कवि का उद्देश्य बताओ ।

(२) इस पाठ से दस नये शब्द चुनकर अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

(४) इस पाठ में से चुन-चुन कर उपमा और रूपक अलंकारों के छह उदाहरण दो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१२) वीर-बाला

—एकाङ्की नाटक—

(सम्पादकीय)

प्रथम दृश्य

स्थान -वन में शून्य मार्ग।

समय—सायङ्काल सूर्यास्त हो रहा है।

[राजा अजीतसिंह मार्ग के एक वृक्ष का सहारा लेकर खड़े हैं। वे अत्यन्त चिन्तामग्न दिखाई पड़ रहे हैं, उनकी मुख-मुद्रा रह-रहकर अत्यन्त गम्भीर हो जाती है। कभी-कभी वे अपने आप कुछ बड़बड़ाने लगते हैं और उनका हाथ अपनी कमर में लटकती हुई तलवार पर जा पड़ता है।]

अजीतसिंह—(अपने आप) प्रताप सिंह ने कलावती की वीरता से मुग्ध होकर उसके साथ विवाह करने का प्रस्ताव भेजा है। वह कलावती के सर्वथा उपयुक्त वर हैं। किन्तु यह व्याह मुझे चोरी से करना पड़ेगा। बड़ी धूम-धाम से कलावती का विवाह करने की साध मैंने हृदय में सँजो रखी थी। उस विवाह का उत्सव ठाट-बाट से करने के जो सारे उल्लास थे वे निर्जन वन में विकसित कुसुम की भांति क्या हृदय में ही सूख जायँगे ? (उसकी आंखों में आंसू छलकने लगते हैं। वह चुप हो जाता है। वह इसी प्रकार चिन्ता में खड़ा है कि इतने में एक आगन्तुक आकर उसे सलाम करता है और वह चौंककर उसे देखने लगता है।)

अजीतसिंह—(तीव्रस्वर से) तुम कौन ?

आगन्तुक - जनाब, मैं दाऊदखाँ का दूत हूँ।

(उसकी बात सुनते ही राजा का मुख क्रोध से लाल हो जाता है।)

अजीतसिंह—(क्रोध और घृणा मिश्रित कर्कश स्वर से) तुम दाऊदखा के दूत· · ·तो फिर यहाँ क्यों आए ? क्या तुम्हारे बादशाह के हृदय की जलन—मेरे सोने के संसार को मिट्टी का बनाकर भी शान्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नहीं हुई। क्या उसके हृदय में मेरे इस निर्जन जङ्गल का निवास भी काटों-सा चुभ रहा है ?

दूत—हुजूर, मैं बादशाह का एक खत आपके पास ले आया हूँ। (दूत अपने पास से पत्र निकालकर राजा अजीतसिंह को दे देता है। राजा उसे लेकर घृणा से देखते हुए पढ़ने लगता है। ज्यों-ज्यों वह पत्र पड़ता जाता है त्यों-त्यों उसके मुख पर क्रोध, घृणा, क्षोभ और चिन्ता की रेखायें खिचने लगती हैं। अन्त में पत्र समाप्त कर वह क्रोध में भर उठता है। पत्र को दूत के ऊपर फेंक देता है।)

अजीतसिंह—(क्रोध से) व्यभिचारी और अत्याचारी नराधम दाऊद, कलावती से विवाह करने की तेरी लालसा ! नीच, अधम, राजमद से मतवाले, तेरा यह साहस ! (बड़े कर्कश स्वर से चिल्लाते हुए) नहीं-नहीं, यह कदापि नहीं हो सकता। जब तक मेरे शरीर मे एक बूंद भी रक्त रहेगा तब तक दाऊद की क्या मजाल कि वह कलावती की ओर आँख उठा कर भी देखे।

दूत—(पलभर रुक कर धीरे-धीरे) तो हुजूर...बस...बस, जवाब।

राजा—चुप शैतान (राजा का हाथ अनायास कमर में लटकती हुई करवाल पर जा पहुंचता है और वह उसे आधा निकाल भी लेता है। पर कुछ सोचता हुआ धीरे-धीरे करवाल को पुनः म्यान में डाल देता है। दूत की ओर देखते हुए कहता है) इस समय ठहरो। कल उत्तर दिया जायगा, उसे लेकर कल जाना। (दूत डरता हुआ जिधर से आया था उधर ही चला जाता है। दूसरी ओर से एक वीर-बाला का प्रवेश)।

बाला—(राजा की ओर देखते हुए कुछ चिन्तित स्वर से) बाबूजी, आप तो सर्वदा चिन्ता से जलते रहते हैं। यदि अब आगे से आप प्रसन्न न रहियेगा, चिन्ता कीजियेगा तो मैं आप से न बोलूंगी।

राजा—(पास आने पर बाला के सिर पर हाथ फेरते हुए) मेरी प्यारी बेटी, आज मेरे सिर पर एक नई विपत्ति और आ गई। दाऊदखाँ का एक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दूत उसकी चिट्ठी लेकर आया है। उस चिट्ठी में लिखा है—'यदि तुम कलावती की शादी मेरे साथ कर दो तो तुम्हारा राज्य वापस मिल जायगा, नहीं तो मैं जबरदस्ती कलावती को तो तुमसे ले लूँगा ही, और राज्य भी तुम न पाओगे।' (कुछ देर रुककर) बेटी, मेरी इच्छा तो यही है कि दूत का सिर धड़ से अलग कर दूँ। पर मैंने सोचा कि जो कुछ भी करूँ अच्छी तरह से सोच-विचार कर ही करूँ जिससे क्षणिक आवेश में कुछ करके पछताना न पड़े। अतः मैंने दूत को रोक लिया है। कल उसे उत्तर देना है। (बालिका की मुखमुद्रा गम्भीर हो जाती है। वह कुछ सोचने लगती है। राजा कुछ रुकते-रुकते पुनः बोलने लगता है।) दाऊद बड़ा अत्याचारी और क्रूर है। वह अपनी बात पूरी न होते देखकर अवश्यमेव कोई न कोई भीषण कृत्य करेगा। (राजा चुप हो जाता है।)

कलावती—(कुछ देर तक मौन रहकर सोच चुकने के पश्चात् (आप दूत से कह दें कि मुझे स्वीकार है। (राजा स्तब्ध हो कलावती की ओर देखने लगता है। उसके मुख पर कभी आश्चर्य दिखाई पड़ता है और कभी उसकी आँखों में घृणा और तिरस्कार दिखाई देते हैं। वह मुस्कुराती हुई पुनः बोलने लगती है) बाबूजी, आप किसी तरह की शङ्का न करें (क्रोध से उसके पतले ओंठ काँपने लगते हैं, भृकुटी टेढ़ी हो जाती है।) बाबूजी, मैं उस नीच दाऊद को, उसी के दुष्कर्मों की ज्वाला में जलाकर भस्म करना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि वह वासना का गुलाम, मदान्ध गीदड़ देख ले कि केसरी-नन्दिनी के उपहास का क्या फल होता है ! बाबूजी, उस नीच का इतना साहस कि वह (जोर देकर) आपकी कन्या के साथ विवाह करने की इच्छा मन में भी लावे ! इस पाप का परिणाम उसे अवश्य भोगना होगा। बाबूजी, मैं उससे आपके अपमान का बदला लूँगी। आप दूत से कह दें कि मुझे स्वीकार है।

राजा—(आश्चर्यचकित होकर कोमल स्वर से) पर बेटी, आखिर तू करना क्या चाहती है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कलावती—बाबूजी, आप पहले दूत को उत्तर देकर वापस कीजिए। और मैं करना क्या चाहती हूँ, यह स्वयं मैं भी नहीं जानती। पर यह मैं जानती हूँ कि दाऊद अवश्य अपनी करतूत का फल पावेगा और पश्चात्ताप की अग्नि में जलेगा। (मुख नीचा करके) मैं अपने कर्त्तव्यपथ का निश्चय प्रतापसिंह की संमति से करूँगी।

(पटाक्षेप)

द्वितीय दृश्य

स्थान—दाऊद खाँ का कक्ष (दरबार खास)

समय—मध्याह्न।

(एक ऊंचे रत्नजटित सिंहासन पर दाऊदखाँ बैठा। उसके पास नीचे कुछ अन्य चापलूस मित्र भी बैठे हैं। पास में ही उनका दीवान किसी की प्रतीक्षा में बैठा है। दाऊद सर झुकाए मौन-मुद्रा में बैठा कुछ सोच रहा है। इस समय दाऊद के मुख पर विलास की रेखा नाच रही है।)

(चोबदार एक सैनिक को लेकर घुसता है और दोनों लम्बा अभिवादन करते हैं।)

चोबदार—बादशाह सलामत, यही सैनिक आपसे अति शीघ्र मिलना चाहता था।

बादशाह—(उसकी ओर देखकर) तुम कौन हो, किसने तुम्हें भेजा है ?

आगन्तुक—मैं एक राजपूत सैनिक हूँ। राजा अजीतसिंह की दुलारी कन्या आप के यहाँ आ रही है। मैं भी उसी के साथ था। रास्ते में उसे छोड़ कर आपको समाचार देने के लिए मैं यहाँ भेजा गया हूँ।

(दाऊद के ओठों पर मुस्कराहट दौड़ पड़ती है।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दाऊद—(उत्कण्ठा से) क्या सचमुच ?

सैनिक—जी महाराज, अब वह पहुँचना ही चाहती है।

दाऊद—(जल्दी से) अभी उसे आने में कितनी देर लगेगी ? अ कितनी दूर है ?—

सैनिक—अब वह यहाँ से एक कोस भी न होगी।

दाउद—(दीवान की ओर देखकर) कलावती की अगवानी की तैयार करो। (दूत की ओर घूमकर—उँगली में से अपनी अँगूठी निकालकर उ देते हुए) लो, अभी इसे ले लो। और इनाम फिर मिलेगा।

सैनिक—महाराज ! धृष्टता क्षमा कीजियेगा। राजपूत किसी का जू वस्त्राभूषण नहीं ग्रहण करते।

दाऊद—(कुछ क्रोध के साथ देखकर) अच्छा जाओ, तुम्हारा इना तुम्हें फिर दे दिया जायगा। (दरवारियों की ओर देखते हुए) आज क दरवार कलावती के आने की खुशी में वरखास्त किया जा रहा है।

(सभी दरबारी धीरे-धीरे उठकर दाऊद को सलाम करते हुए चले जा हैं। नेपथ्य में बाजे की ध्वनि सुनाई पड़ती है और वह धीरे-धीरे तीव्र होत जाती है। बादशाह उठकर प्रतीक्षा में इधर-उधर टहलने लगता है। इत में एक चोवदार जल्दी से आकर लम्बी कोनिश करते हुए कहता है)

चोवदार—शाही महल के दरवाजे तक बेगम साहब की सवारी अ गई है।

दाऊद—सखी-सहेलियों के साथ उसे जल्दी यहीं दरबारे खास ले आओ।

(एक मखमली कारचोवी के आवरण से आवृत पालकी आगे-आ आती है और पीछे कुछ और पालकियाँ आती हैं और वहाँ रख जाती हैं।)

(बादशाह धीरे-धीरे पालकी के पास आता है और प्रत्येक वस्तु क प्रेम-दृष्टि से देखता है। धीरे-धीरे कारचोवीवाली पालकी का आवर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

उठता है। भीतर से सुन्दर राजपूत के वीरवेश में धनुष-वाण से सज्जित कलावती निकल आती है। दाऊदखां क्रोध, घृणा, निराशा और आश्चर्य से चीख उठता है।)

(पटाक्षेप)

तृतीय दृश्य

स्थान—दाऊदखाँ के महल से थोडी दूर पर प्रतापसिंह के शिविर के पास का मार्ग।

समय—रात्रि, पर चन्द्रिका का प्रकाश फैला है।

(दो प्रहरी सैनिक टहलते हुए परस्पर वार्तालाप कर रहे हैं।)

प्रथम सैनिक—संग्रामसिंह, अब क्या समय हुआ होगा ?

संग्रा०—रात्रि का तीसरा पहर समाप्त हो रहा है।

प्रथम सै०—पर भाई, कुमारी कलावती ने आज अद्भुत वीरता दिखाई।

संग्राम०—हाँ जयसिंह, यदि आज राजकुमारी न होती तो महाराजा प्रतापसिंह की क्या दशा होती, यह सोच कर भी हृदय चञ्चल हो उठता है।

जय०—भाई, राजकुमारी का वाण लक्ष्य से कभी नहीं चूकता। उनके वाण अमोघ हैं। ओह, वह दृश्य भी देखने ही योग्य था। महाराज अपनी रणसङ्गिनी कालभुजङ्गिनी-सी तलवार के द्वारा झुण्ड के झुण्ड यवन-सैनिकों को छिन्न-भिन्न कर रहे थे। मुझे तो उन्हें देखकर यही प्रतीत हो रहा था कि शत्रुनाशिनी रणचण्डिका ने शत्रु-रक्त-रञ्जित विद्युच्चपल अपना करवाल आज महाराज को दे दिया था। ऐसा आभासित हो रहा था कि कुछ ही क्षण से सम्पूर्ण यवन सेना विनष्ट होकर धराशायी हो जायगी।

संग्राम०—पर जयसिंह, महाराज अपनी अद्भुत वीरता दिखाते हुए भी अतीव सङ्कटापन्न परिस्थिति में पड़ गये थे। यदि एकदम उचित

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अवसर पर राजकुमारी के अमोघ बाण दो बार दाऊद को घायल न करते तो सम्भवतः अब तक महाराज की अवस्था अत्यन्त दुःखजनक होती।

जय०—राजकुमारी ने पहले भी तो एक बार महाराज की प्राणरक्षा की थी। जिस समय महाराज ने वन में विचरण करती हुई और धनुष को धारण करनेवाली वनदेवी-सी भासमान राजकुमारी को देखा था और उस पर मुग्ध हुए थे, उसके कुछ ही क्षण पूर्व तो महाराज के प्राणों की रक्षा राजकुमारी ने अपने बाणों से उस जंगली बाघ को मार कर की थी।

संग्राम०—सचमुच भाई, राजकुमारी के गुरु ने बाण-विद्या में इन्हें बड़ा ही निपुण बनाया है।

जय०—इसी से तो महाराज राजकुमारी पर मुग्ध हैं।

संग्रा०—जयसिंह, आज ही प्रातःकाल होने के बाद तो बंदी दाऊद दण्ड-व्यवस्था के लिये महाराज के सामने उपस्थित किया जायेगा।

जय०—जाने महाराज उसे क्या दण्ड देंगे। मेरे मत में तो महाराज अजीतसिंह के प्रति की गई उसकी नीचताओं और राजकुमारी कलावती के प्रति किये गये दुःसाहस को देखकर, उसे भूमि में गड़वा कर कुत्तों से नुचवाने का दण्ड देना चाहिये। पर सम्भवतः महाराज प्रतापसिंह तो उससे महाराज अजीतसिंह का राज्य लेकर उसे केवल देश-निकाल देंगे।

संग्रा०—जयसिंह, यदि मैं दण्ड का विधाता होता तो काँटों की शय्या पर सुला-सुलाकर उसे मरवा डालता। उसे भी यह ज्ञात हो जाता की पचास वर्ष की अवस्था में पन्द्रह वर्ष की बाला के साथ व्याह करने की इच्छा प्रकट करने का क्या परिणाम होता है!

जय०—अच्छा चलो, हम लोग थोड़ा सो लें कल बड़ा शुभ दिन होगा। नीच दाऊद को प्रातःकाल दण्ड भी दिया जायगा और सायंकाल राजकुमारी के साथ महाराज प्रतापसिंह का विवाह भी होगा।

(पटाक्षेप)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चतुर्थ दृश्य

स्थान—महाराज प्रतापसिंह का शिविर।

समय—प्रातःकाल का उत्तरार्द्ध। दिन का द्वितीय प्रहर।

(महाराज प्रतापसिंह एक ऊँचे आसन पर बैठे हैं। सामने एक-दूसरे आसन पर दाऊद खाँ बन्दीवेश में उदास बैठा है। कुछ अन्य राजपूत सरदार पास बैठे हैं। कुछ प्रहरी सैनिक दाऊद के पास खड़े हैं।)

प्रताप—(गम्भीर से) दाऊद, तुम्हारे अपराधों की सजा अत्यन्त भीषण होगी। तुम उसके पूर्व अपनी निर्दोषता के बारे में जो कुछ कहना चाहते हो, शीघ्र, संक्षेप में कह लो।

दाऊद—(क्रोध से) प्रतापसिंह ! एक स्त्री की धोखेबाजी और उसकी मदद से कल तू बच गया और तूने मुझे कैद कर लिया। आज तू मुझे सजा देने वाला बना है। पर मैं यदि कैदी न होता तो तेरा जवाब अच्छी तरह देता।

प्रताप—दाऊद, तुम्हारा लड़ने का हौसला अभी पूरा नहीं हुआ ? क्या तुम्हें प्रतापसिंह के बल की थाह अभी नहीं मिली ? अस्तु, इसी क्षण मैं तुम्हारे साथ द्वन्द्व-युद्ध को प्रस्तुत हूँ।

दाऊद—(क्रोध से दाँत पीसते हुए) तो फिर मुझे छोड़ दो और देख लो कि कलावती कौन पाता है। कलावती भी शेर के बच्चे दाऊद की ताकत देख ले। यदि वह दगाबाज छोकरी और धोखेबाज अजीतसिंह मुझे मिलें तो मैं उनको—उनकी चालबाजियों का मजा चखा दूँ। दोनों दगाबाजों के चकमे में पड़कर आज मेरी यह फजीहत हो रही है। अजीत ! तुम्हारी इतनी हिम्मत कि तुम कलावती की शादी के बहाने दाऊद पर चढ़ाई कर दो। दगाबाज अजीत !! मक्कार अजीत !! (इतने में कलावती को साथ लिए महाराज अजीतसिंह का प्रवेश। दाऊद उनकी ओर क्रोध से देखते हुए चुप हो जाता है।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अजीत—(ओठ क्रोध से कांप रहे हैं) नीच ! कामुक !! हत्यारे !!! हम अपने राज्य को लेने का यत्न कर रहे हैं तो धोखेबाज और मक्कार हैं और तू छल एवं विश्वासघात की मूर्ति, पापियों का मुकुट और अत्याचारियों का अवतार, तू वीर और धर्मात्मा है ?

दाऊद—(क्रोध,कर्कश स्वर से) अपनी लड़की की खूबसूरती बेचकर प्रतापसिंह को खरीदनेवाले अजीत ! और एक औरत की मदद से फतह पानेवाले प्रताप !

प्रताप- (बीच में ही बात काटकर) बस दाऊद, बस, अपना मुँह बन्द कर मेरे सम्मुख यदि तेरे मुख से महाराज अजीतसिंह अथवा कलावती के सम्बन्ध में आगे एक भी अपमान-जनक शब्द निकला तो तेरा मस्तक पृथ्वी पर नाचता दिखाई देगा ।

(कमर में लटकते हुए खड्ग को म्यान से बाहर निकाल लेता है)

अजीत—दाऊद ! तूने सती कलावती के साथ विवाह करने का साहस कैसे किया ? क्या तूने नहीं समझा था कि वह राजपूत-बाला है और अपने मान की रक्षा करना जानती है ?

(क्रोधावेश से दाऊद की नाक फड़कने लगती है । उसके होठ काँपने लगते हैं । वह कुछ कहने जा ही रहा था कि कलावतो बोल उठती है ।)

कला०—(प्रतापसिंह की ओर देख कर पुनः नीचे देखते हुए संकोच से महाराज ! इसने मेरा ही तो अपमान किया है । अतएव यदि आज के दंडनिर्णय का अधिकार मुझे दे दिया जाय तो मैं इससे अपने अपमान का बदला यथेच्छ ले लूं ।

प्रताप०—(प्रसन्नतापूर्वक) राजकुमारी, केवल अपमानित होने के कारण ही नहीं वरन मेरे प्राणों की रक्षा करने के कारण तुम मेरे प्राणों और शरीर—दोनों की स्वामिनी हो तो फिर आज का दंड-निर्णय तुम्ही को करना होगा ।

कला०—(प्रताप की बात से कुछ लज्जित होते हुए दाऊद की ओर देखकर) दाऊद ! तुम्हारी नीचताओं की तुलना में प्राण-दण्ड तो बहुत छोटा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। अतः पिता का राज्य उन्हें वापस दिलाते हुए मैं तुम्हें आज मुक्त करती हूँ, जिसमें कि तुम सदा पश्चात्ताप की आग में जलते रहो। (अपने पिता अजीतसिंह की ओर देखकर) बाबू जी, अपने राज्य में से कुछ अंश इसे दे दीजिए जिससे यह भी राजपूतों के वीर, क्षमा-शील, एवं उदार हृदय का पता पा जावे।

(सभी स्तब्ध और अवाक् हो जाते हैं। दाऊद तो चकित होकर आत्म-विस्मृत हो जाता है।)

प्रताप—जाओ दाऊद, आज तुम राजकुमारी की इच्छानुसार मुक्त हुए। पर स्मरण रखना, भविष्य में किसी आर्य-ललना पर वासना की दृष्टि डालने का साहस न करना। हाँ, मेरे साथ युद्ध की जब तुम्हारी इच्छा हो, जब कभी तुम अपने को शक्तियुक्त समझ पाओ, चले आना। मैं तुम्हारे स्वागत के लिए सदा प्रस्तुत रहूँगा।

दाऊद—(आश्चर्य से कलावती को देखकर अजीतसिंह की ओर देखते हुए) महाराज, आज मैं आपसे अपनी सभी गलतियों की माफी चाहता हूँ। उम्मीद है कि राजकुमारी भी मुझे माफ करेंगी। वस्तुतः आज मेरी हार हुई और राजकुमारी की जीत ! आज से वे मेरी माता हैं।

अजीत०—मैं अपनी प्यारी पुत्री कलावती की इच्छानुसार आज तुम्हारे सभी अपराधों को क्षमा करता हूँ और राज्य का तृतीयांश जीवन-निर्वाह के लिए तुम्हें देता हूँ। (प्रतापसिंह और कलावती को बुलाते हुए) वीर प्रताप-सिंह और प्यारी बेटी कलावती, तुम दोनों यहाँ आओ। (प्रताप से) तुम्हें मैं आज यह अपनी आँख की पुतली दे रहा हूँ। मुझे विश्वास कि तुम्हारे बलवान हाथ उसकी रक्षा करेंगे। पर प्रताप, मुझे तुम से एक बिनती करनी है—तुम इस वनवासिनी स्वच्छन्द प्रकृति की बाला के अपराधों को क्षमा करना। (अपनी पुत्री की ओर देखकर) और बेटी ! तुम सदैव प्रताप की इच्छाओं को ही अपनी इच्छा समझ मन, वचन और शरीर से सदा इन्हें प्रसन्न रखना।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(कलावती का हाथ प्रताप के हाथ पर रखते हुए) भगवान् दोनों को सुखी रखे ।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) अजीतसिंह प्रारम्भ में क्यों चिन्तित था ?

(२) दूत की बात से उसको क्यों क्रोध हुआ ?

(३) पालकी के भीतर से कलावती किस वेश में निकलती है ?

(४) रणभूमि में प्रतापसिंह की प्राण-रक्षा किसने की ?

(५) कलावती ने किस प्रकार क्षमा किया ?

(६) व्याख्या करो—महाराज को अपनी रणसङ्गिनी........ .....

प्रयोग और व्याकरण—

(१) नीचे लिखे समस्त पदों का विग्रह करते हुए समास बताओ और उनके अर्थ लिखो—रणसंगिनी, कालभुजंगिनी, शत्रु-रक्त-रंजित, विद्युच्चपल ।

(२) संग्राम-सिंह और जयसिंह की बात-चीत से द्वितीय दृश्य के बाद और तृतीय दृश्य के पहले की जिन घटनाओं का पता चलता है, उनका वर्णन करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१३) अहिंसा देवी का दर्शन

भारत में महात्मा जी का चम्पारन में प्रथम सत्याग्रह

लेखक : महात्मा गांधी

परिचय—महात्मा गांधी के 'मेरे सत्य के प्रयोग या आत्मकथा' नामक ग्रन्थ से यह अंश लिया गया है। उनकी अपनी जीवनी और अपने काम करने का आरम्भिक इतिहास इसमें मिलता है। यह भी ज्ञात हो जाता है कि किस प्रकार प्रारम्भ से ही महात्मा गांधी का जीवन आदर्शमय और संघर्षों से भरा था। यह पुस्तक विद्यार्थियों को अवश्य पढ़नी चाहिए।

[प्रसंग—यह अंश—उस समय की घटना का है जब महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रिका में सत्याग्रह-द्वारा विजय पाकर और अफ्रीकी भारतवासियों के कष्टों को बहुत कुछ कम करके भारत लौटे थे। भारत लौटने पर कुछ दिनों तक देश का दौरा करते रहे। इसी समय चम्पारन में राजकुमार शुक्ल नामक एक किसान के आग्रह पर वे चम्पारन आये। भारत में पहले-पहल अहिंसा देवी का उन्हें यहीं साक्षात्कार हुआ और सत्याग्रह तथा अहिंसा में यहीं सफलता प्राप्त हुई। भारत में यह महात्मा जी का पहला सत्याग्रह था।

नील का रोजगार करने वाले निलहे गोरे लोग किसानों पर बड़ा अत्याचार करते थे। उस समय एक 'तिनकठिया' प्रथा प्रचलित थी। उसी का विरोध करने महात्मा जी आए थे। वहीं पर महात्माजी की राजेन्द्र बाबू और उस समय के एक प्रसिद्ध वकील तथा राजेन्द्र बाबू के भाई बृजकिशोर बाबू से घनिष्टता बढ़ी। किसानों की हालत की जांच करने के लिए वे श्री बृजकिशोर बाबू तथा श्री राजेन्द्र बाबू से कैसी सहायता चाहते हैं, इसी प्रसंग से यह अंश प्रारम्भ होता है।]

इस मित्र-मंडल ने इस विषय में मेरा मीठा उलाहना प्रेम के साथ सुना। उन्होंने उसका उलटा अर्थ नहीं लगाया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मैंने कहा—'उन मुकदमों की मिसलें देखने के बाद मेरी तो यह राय होती है कि हम यह मुकदमेबाजी अब छोड़ दें। ऐसे मुकदमों से बहुत कम लाभ होता है। जहाँ प्रजा इतनी कुचली जाती है, जहां सब लोग इतने भयभीत रहते हैं, वहाँ अदालतों के द्वारा बहुत कम राहत मिल सकती है। इसका सच्चा इलाज तो है लोगों के दिल से डर को निकाल देना। इसलिए अब जब तक यह 'तिनकठिया' प्रथा मिट नहीं जाती तबतक हम आराम से नहीं बैठ सकते। मैं तो अभी दो दिन में जितना देख सकूं, देखने के लिए आया हूँ। परन्तु मैं देखता हूँ कि इस काम में दो वर्ष भी लग सकते हैं। परन्तु इतने समय की जरूरत हो तो मैं देने के लिए तैयार हूँ। यह तो मुझे सूझ रहा है कि मुझे क्या करना चाहिए, परन्तु आप की मदद की जरूरत है।'

मैंने देखा कि वृजकिशोर बाबू निश्चित विचार के आदमी हैं। उन्होंने शान्ति के साथ उत्तर दिया—'हम से जो कुछ बन सकेगी वह मदद हम जरूर करेंगे, परन्तु हमें बतलाएँ कि आप किस तरह की मदद चाहते हैं।'

हम लोग रात भर बैठकर इस विषय पर विचार करते रहे। मैंने कहा—'मुझे आप की वकालत की सहायता की जरूरत कम होगी। आप-जैसों से मैं लेखक और दुभाषिये के रूप में सहायता चाहता हूं। संभव है, इस काम से जेल जाने की भी नौबत आ जाय। यदि आप इस जोखिम में पड़ सकें तो मैं इसे पसंद करूँगा, परन्तु यदि आप न पड़ना चाहें तो भी कोई बात नहीं। वकालत को अनिश्चित समय के लिए बन्द करके लेखक के रूप में काम करना भी मेरी कुछ कम मांग नहीं है। यहां की बोली समझने में मुझे बहुत दिक्कत पड़ती है। कागज-पत्र सब उर्दू या कैथी में लिखे होते हैं, जिन्हें मैं पढ़ नहीं सकता। उनके अनुवाद की मैं आपसे आशा रखता हूँ। रुपये लेकर यह काम करना चाहें तो अपनी सामर्थ्य के बाहर है। यह सब सेवा-भाव से, विना पैसे के होना चाहिए।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

राष्ट्र-पिता

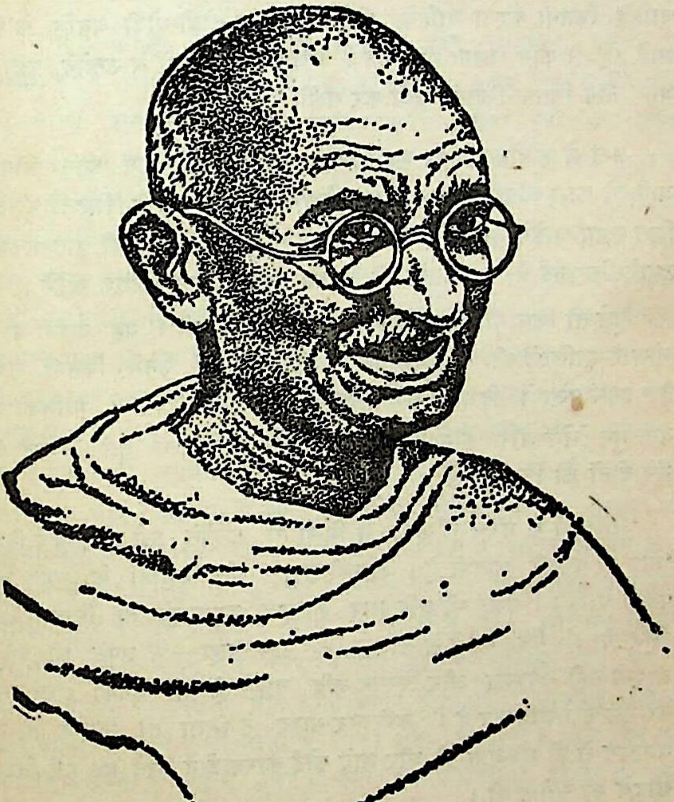

'बापू'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वृजकिशोर वावू मेरी वात को समझ तो गये परन्तु उन्होंने मुझसे तथा अपने साथियों से जिरह शुरू की। मेरी वातों का फलितार्थ उन्हें वताया। मुझसे पूछा—'आप के अंदाज में कब तक वकीलों को यह त्याग करना चाहिये, कितना करना चाहिये, थोड़े-थोड़े लोग थोड़ी-थोड़ी अवधि के लिए आते रहें तो काम चलेगा या नहीं?' इत्यादि। वकीलों से उन्होंने पूछा कि आप लोग कितना-कितना त्याग कर सकेंगे?

अन्त में उन्होंने अपना यह निश्चय प्रकट किया—'हम इतने लोग तो आप जो काम सौंपेंगे करने के लिए तैयार रहेंगे। इनमें से जितनों को आप जिस समय चाहेंगे आपके पास हाजिर रहेंगे। जेल जाने की वात अलवत्ता हमारे लिए नई है, पर उसकी भी हिम्मत करने की हम कोशिश करेंगे।'

मुझे तो किसानों की हालत की जाँच करनी थी। यह देखना था कि नील के मालिकों की जो शिकायत किसानों को थी, उनमें कितनी सचाई है। इसमें हजारों किसानों से मिलने-जुलने के पहले, निलहे मालिकों की वात सुन लेने और कमिश्नर से मिलने की आवश्यकता मुझे दिखाई दी। मैंने दोनों को चिट्ठी लिखी।

मालिकों के मंडल के मंत्री से मिला तो उन्होंने मुझे साफ कह दिया, 'आप तो वाहरी आदमी हैं। आपको हमारे और किसानों के झगड़े में न पड़ना चाहिये। फिर भी यदि आप को कुछ कहना हो तो लिखकर भेज दीजिएगा।' मैंने मन्त्री से सौजन्य के साथ कहा—'मैं अपने को वाहरी आदमी नहीं समझता और किसान यदि चाहते हों तो उनकी जांच करने का मुझे पूरा अधिकार है।' कमिश्नर साहव से मिला तो उन्होंने तो मुझे धमकाने से ही शुरूआत की और आगे कोई कारवाई न करते हुए मुझे तिरहुत छोड़ने की सलाह दी।

मैंने साथियों से ये सव वातें करके कहा कि संभव है, सरकार जांच करने से मुझे रोके और जेल-यात्रा का समय शायद मेरे अन्दाज से पहले

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ही आ जाय। यदि पकड़े जाने का ही मौका आवे तो मुझे मोतिहारी और हो सके तो वेतिया में गिरफ्तार होना चाहिए। इसलिए जितनी जल्दी हो सके मुझे वहां पहुँच जाना चाहिए।

चंपारन तिरहुत जिले का एक भाग था और मोतिहारी उसका एक मुख्य शहर। वेतिया के ही आसपास राजकुमार शुक्ल का मकान था। और उसके आसपास कोठियों के किसान सबसे ज्यादा गरीब थे। उनकी हालत दिखाने का लोभ राजकुमार शुक्ल को था और मुझे अब उन्हीं को देखने की इच्छा थी, इसलिए साथियों को लेकर मैं उसी दिन मोतिहारी जाने के लिए रवाना हुआ। मोतिहारी में गोरख बाबू ने आश्रय दिया और उनका घर खासा धर्मशाला बन गया। हम सब ज्यों-त्यों करके उसमें सभा सकते थे। जिस दिन हम पहुँचे उसी दिन हमने सुना कि मोतिहारी से पांच मिल दूर एक किसान रहता था और उस पर बहुत अत्याचार हुआ था। निश्चय हुआ कि उसे देखने के लिए धरनीधर प्रसाद वकील को लेकर सुबह जाऊँ। तदनुसार सुबह होते ही हम हाथी पर सवार होकर चल पड़े। चंपारन में हाथी लगभग वही काम देता है जो गुजरात में बैलगाड़ी देती है। हम आधे रास्ते पहुँचे होंगे कि पुलिस सुपरिटेंडेंट का सिपाही आ पहुँचा और उसने मुझसे कहा—'सुपरिटेंडेंट साहब ने आपको सलाम भेजा है।' मैं उसका मतलब समझ गया। धरनी बाबू से मैंने कहा, 'आप आगे चलिए' और मैं उस जासूस के साथ उस गाड़ी में बैठा, जो वह किराये पर लाया था। उसने मुझे चम्पारन छोड़ देने की नोटिस दी। घर ले जाकर उस पर मेरे दस्तखत माँगे। मैंने जवाब दिया कि 'मैं चंपारन छोड़ना नहीं चाहता। आगे मुफस्सिलात में जाकर जाँच करनी है।' इस हुक्म का अनादर करने के अपराध में दूसरे ही दिन मुझे अदालत में हाजिर होने का समन मिला।

सारी रात जाग कर मैंने जगह-जगह आवश्यक पत्र लिखे और जो-जो आवश्यक बातें थीं वे बृजकिशोर बाबू को समझा दीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

समन की बात एक क्षण में चारों ओर फैल गई और लोग कहते थे कि ऐसा दृश्य मोतिहारी में पहले कभी नहीं देखा गया था। गोरखबाबू के घर और अदालत में खचाखच भीड़ हो गई। खुशकिस्मती से मैंने अपना सारा काम रात को ही खतम कर लिया था, उससे इस भीड़ का मैं इन्तजाम कर सका। इस समय अपने साथियों की पूरी-पूरी कीमत देखने का मुझे मौका मिला। वे लोगों को नियम के अन्दर रखने में जुट पड़े। अदालत में जहाँ जाता वहीं लोगों की भीड़ मेरे पीछे-पीछे जाती। कलेक्टर, मजिस्टेट, सुपरिंटेंडेंट वगैरह के और मेरे दरमियान भी एक तरह का अच्छा सम्बन्ध हो गया। सरकारी नोटिस इत्यादि का अगर मैं बाकायदा विरोध करता तो कर सकता था, परन्तु ऐसा करने के बजाय मैंने उनकी तमाम नोटिसों को मंजूर कर लिया। फिर राज-कर्मचारियों के साथ मेरे अपने जाती तालुल्कात (निजी व्यवहार) में जिस मिठास का मैंने अवलम्बन किया उससे वे समझ गए कि मैं उनका विरोध नहीं करना चाहता। बल्कि उनके हुक्म का सविनय विरोध करना चाहता हूँ। इससे वे एक प्रकार से निश्चिन्त हुए। मुझे दिक करनेके बजाय उन्होंनें लोगों को नियम में रखने के काम में मेरी और मेरे साथियों की सहायता खुशी से ली, पर साथ ही वे यह भी समझ गए कि आज से हमारी सत्ता यहाँ से उठ गई। लोग थोड़ी देर के लिए सत्ता का भय छोड़ कर अपने नये मित्र के प्रेम की सत्ता के अधीन हो गए।

यहाँ पाठक याद रक्खें कि चंपारन में मुझे कोई पहचानता न था। किसान लोग बिलकुल अनपढ़ थे। चंपारन गंगा के उस पार, ठेठ हिमालय की तराई में नैपाल के नजदीक का हिस्सा है। उसे नई दुनिया ही कहना चाहिए। यहां कांग्रेस का नाम-निशान भी नहीं था, न उसके कोई मेम्बर ही थे। जिन लोगों ने कांग्रेस का नाम सुन रखा था वे उसका नाम लेते हुए और उसमें शरीक होते हुए डरते थे। पर आज वहाँ कांग्रेस के नाम के बिना कांग्रेस ने और सेवकों ने प्रवेश किया और कांग्रेस की दुहाई घूम गई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

साथियों के साथ सलाह करके मैंने यह तो निश्चय किया था कि कांग्रेस के नाम पर कुछ भी काम यहाँ न किया जाय । हमको नाम से नहीं काम से मतलब है । 'कथनी की नहीं, करनी की' जरूरत है । कांग्रेस का अर्थ है वकीलों की तू-तू मैं-मैं, कानून की गलियों में निकल भागने की कोशिश । कांग्रेस का अर्थ यहां है बम-गोले और कहना कुछ करना कुछ । ऐसा खयाल, कांग्रेस के बारे में यहां सरकार और सरकार की सरकार यानी निलहे मालिकों के मन में था । परन्तु हमें यह साबित करना था कि कांग्रेस ऐसी नहीं, दूसरी ही वस्तु है । इसलिए हमने यह निश्चय किया था कि कहीं भी कांग्रेस का नाम न लिया जाय और लोगों को कांग्रेस की भौतिक देह का भी परिचय न कराया जाय । हमने सोचा कि वे कांग्रेस के अक्षर को - नाम को न जानते हुए उसकी आत्मा को जानें और उसका अनुसरण करें तो बस है । यही वास्तविक बात है ।

इसलिए कांग्रेस की तरफ से किसी छिपे या प्रकट दूतों के द्वारा कोई जमीन तैयार नही कराई गई थी, कोई पेशबन्दी नहीं की गई थी । राजकुमार शुक्ल में हजारों लोगों में प्रवेश करने का सामर्थ्य नहीं था, वहां लोगों के अन्दर किसी ने भी आज तक कोई राजनीतिक काम नहीं किया था । चम्पारन के सिवा बाहर का दुनिया को वे जानते ही न थे । फिर भी उनका और मेरा मिलाप किसी पुराने मित्र के मिलाप जैसा था । अतएव कहने में मुझे कोई अत्युक्ति नहीं मालूम होती, बल्कि यह अक्षरशः सत्य है कि मैंने यहां ईश्वर का, अहिंसा का और सत्य का साक्षात्कार किया । जब साक्षात्कार-विषयक अपने इस अधिकार पर विचार करता हूँ तो मुझे उसमें लोगों के प्रति प्रेम के सिवा दूसरी कोई बात नहीं दिखाई पड़ती और यह प्रेम अथवा अहिंसा के प्रति मेरे अचल श्रद्धा के सिवा और कुछ नहीं है ।

चम्पारन का यह दिन मेरे जीवन में ऐसा था जिसे मैं कभी नहीं भूल सकता । यह मेरे तथा किसानों के लिए उत्सव का दिन था । मुझ पर सरकारी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कानून के मुताबित मुकदमा चलाया जाने वाला था । परन्तु सच पूछा जाय तो मुकदमा सरकार पर चल रहा था । कमिश्नर ने जो जाल मेरे लिए फैलाया था उसमें उसने सरकार को ही फंसा मारा ।

मुकदमा चला । सरकारी वकील मजिस्ट्रेट वगैरह चिन्तित हो रहे थे। उन्हें सूझ नहीं पड़ता था कि क्या करें । सरकारी वकील तारीख बढ़ाने की कोशिश कर रहा था । मैं बीच में पड़ा और मैंने अर्ज किया कि 'तारीख बढ़ाने की कोई जरूरत नहीं है, क्योंकि मैं अपना यह अपराध कबूल करना चाहता हूँ कि मैंने चम्पारन छोड़ने की नोटिस का अनादर किया है ।' यह कहकर मैंने जो अपना छोटा-सा वक्तव्य तैयार किया था वह पढ़ सुनाया । मुकदमे की सुनवाई मुल्तबी रखने को तो कुछ कारण ही नहीं रह गया था, परन्तु मजिस्ट्रेट या सरकारी वकील इस परिणाम की आशा नहीं रखते थे । अतएव सजा के लिए अदालत ने फैसला मुल्तवी रक्खा । मैंने वाइसराय को तार द्वारा सब हालत की सूचना दे दी थी, पटना भी तार दे दिया था । भारत भूषण पंडित मालवीय जी वगैरा को भी तार द्वारा समाचार भेज दिया था। अब सजा सुनने के लिए अदालत में जाने का समय आने के पहले ही मुझे मजिस्ट्रेट का हुक्म मिला कि लाट साहब के हुक्म से मुकदमा उठा लिया गया है और कलेक्टर की चिट्ठी मिली कि आप जो-कुछ जांच करना चाहें शौक से करें और उसमें जो कुछ मदद सरकारी कर्मचारियों की ओर से लेना चाहें, लें । ऐसे तत्काल और शुभ परिणाम की आशा हममें से किसी ने नहीं की थी ।

× ×

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) अदालतों द्वारा गांधी जी ने क्यों कम लाभ होना बताया?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'तिनकठिया' प्रथा के विषय में वे क्या करना चाहते थे ? (२) गांधी जी किस तरह काम करना चाहते थे ? (३) 'निलहे मालिक' किस बहाने से उन्हें टालना चाहते थे ? (४) गांधीजी किस प्रकार गिरफ्तार किए गए थे ? अदालत में हाजिर होने से पहले सारी रात वे क्या करते रहे ? (५) उनके मुकदमे का और उनकी रिहाई का हाल बताओ। (६) उनके विरोधी और किस गुण के कारण उन पर कड़ाई नहीं कर पर पाते थे ? (७) 'कथनी की—कहने की—नहीं, करनी की जरूरत है' इस बात को महात्मा जी ने कैसे चरितार्थ किया ? (८) महात्मा जी को सत्य और अहिंसा का कैसे साक्षात्कार हुआ ? (९) क्यों विरोधियों के प्रति प्रेम के सिवा उन्हें कुछ नहीं दिखाई देता था ? (१०) नीचे के शब्दों में समास बताओ—मित्र-मंडल, सेवा-भाव, बैलगाड़ी, अनादर।

(१४) कृष्ण-वन्दना

रचयिता : भक्तवर सूरदास

कवि-परिचय—कविवर सूरदास ब्रज भाषा के अतिमहान कवि थे। वे कृष्ण के बड़े भारी भक्त थे। भगवान् कृष्ण की बाललीला और गोपी-प्रेम पर उन्होंने हजारों पद बनाए। उनका सबसे प्रसिद्ध ग्रन्थ सूर-सागर है। इसमें उनके पदों का संग्रह है। उनके पद सरल और मधुर होते हैं।

[१]

बंदौं चरन-कमल हरिराई।
जाकी कृपा पंगु गिरि लंघै अंधे को सब कछु दरसाई।
बहिरो सुनै मूक पुनि बोलै रंक चलै सिर छत्र धराई।
सूरदास स्वामी करुनामय ! बार बार बन्दौं तेहि पाई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[२]

मेरो मन अनत कहां सचु पावै।
जैसे उड़ि जहाज को पंछी फिरि जहाज पर आवै॥
कमल-नैन को छाँड़ि महातम और देव को धावै।
परम गंग को छाँड़ि पियासो दुर्मति कूप खनावै।
जिन मधुकर कमलन-रस चाख्यौ क्यों करील फल खावै।
सूरदास प्रभु कामधेनु तजि छेरी कौन दुहावै॥

[३]

प्रभु मेरे औगुन चित न धरो।
समदरसी है नाम तिहारो अपने पनहि करो॥
इक लोहा पूजा में राखत, इक घर बधिक परो।
यह दुविधा पारस नहीं जानत, कंचन करत खरो॥
एक नदिया एक नार कहावत, मैलो नीर भरो।
जब मिलिकै दोऊ एक बरन भए, सुरसरि नाम परो॥
एक जीव एक ब्रह्म कहावत, 'सूर स्याम' झगरो।
प्रभु, अब की मोहिं पार उतारो, नहिं पन जात टरो॥

[४]

(कृष्ण का वचन अर्जुन से)

हम भक्तन के भक्त हमारे।
सुन अर्जुन परतिग्या मेरी, यह ब्रत टरत न टारे॥
भक्तै काज, लाज हिय धरिकै, पाइ पयादे धाऊँ।
जहँ जहँ भीर परै भक्तन पै तहँ तहँ जाइ छुड़ाऊँ॥
जो मम भक्तन सो बैर करत है, सो निज बैरी मेरो।
देखि विचारि भक्त हित कारन हाँकत हौं रथ तेरो॥
जीते जीत भक्त अपने की, हारे हार विचारौं।
सूरदास सुनि भक्त-विरोधी चक्र सुदरसन जारौं॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) भगवान के चरण-कमल की कृपा की महिमा बताओ।

(२) भगवान की भक्ति छोड़कर दूसरे कामों में समय लगाना क्यों मूर्खता बताया गया है ?

(३) सूरदास जी प्रभु से क्यों कह रहे हैं कि 'मेरे अवगुण को आप चित्त में न रखिए ?

(४) भक्तों की रक्षा के लिए भगवान क्या-क्या करते हैं ? उन्होंने जो-जो किया है, उसे उदाहरण देकर बताओ। भगवान के यह कहने का 'हम भक्तन के भक्त हमारे' क्या भाव है ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) ऊपर के पदों के आधार पर श्रीकृष्ण भगवान के चरित्र की विशेषताएँ बताओ।

(२) नीचे लिखे शब्दों के तत्सम रूप बनाओ—परतिग्या, हिय, काज, लाज, समदरसी।

---

(१५) चन्द्रलोक

(सम्पादकीय)

[चन्द्रमा को हम नित्य देखते हैं पर उसके विषय में हमें बहुत जानकारी नहीं थी। पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाने वाले उपग्रह चन्द्रमा के धरातल और लोक की बहुत सी बातें इस लेख में बताई गई हैं। १६ जुलाई १९६९ ई० को अमेरिकास्थित केप केनेडी नामक स्थान से भारतीय समय के अनुसार सायं ७ बजकर २ मिनट पर अपोलो–११ नामक अंतरिक्षयान चन्द्रलोक की यात्रा के लिये प्रक्षिप्त हुआ। इनमें ३ यात्री थे। २२६९७० मील (लगभग पौने चार लाख किलोमीटर) यात्रा करके अपोलो—११ का ईगल नामक

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चन्द्रकक्ष २० जुलाई ६९ को रात १ बजकर ४७ मिनट पर चन्द्रधरातल के शांतसागर नामक स्थान पर उतरा। चन्द्रखण्ड वहाँ लगभग २२ घण्टे रहा। नील आर्मस्ट्रांग प्रथम मानव थे जिन्होंने चन्द्रतल पर पाँव रखा। उनके दूसरे साथी थे एडविन एल्ड्रिन। प्रायः ढाई घण्टे तक इन चन्द्र यात्रियों ने चन्द्रतल पर सोल्लास विचरण किया। २१ जुलाई की रात में ११ बजकर २८ मिनट पर वहाँ से चन्द्रयात्री भूलोक के लिए वापस हुए। चन्द्रतल की धूल और चट्टानों के टुकड़ों को लेकर वे २४ जुलाई ६९ को रात १० बजकर १९ मिनट पर पृथ्वी के प्रशान्त महासागर में उतरे। (विशेष विवरण परिशिष्ट में देखें—सम्पादक) अतः आज चन्द्रसम्बन्धी बहुत-सा नया ज्ञान—वैज्ञानिकों को प्राप्त हो चुका है।]

कुछ वर्षों पूर्व चन्द्रमा के बारे में हमारी वैज्ञानिक जानकारी बहुत कम थी। पुराणों के अनुसार चन्द्रमा समुद्र का पुत्र है। अमृत के लिए देवताओं और दैत्यों ने मिलकर जब समुद्र का मंथन किया था तब चौदह रत्न समुद्र के अन्दर से निकले थे। उन्हीं में से एक चन्द्रमा भी माना गया है। पुराणों में चन्द्र-सम्बन्धी अनेक कहानियां हैं।

कवियों ने भी चन्द्रमा के सम्बन्ध में बहुत सी कविताएँ की हैं। शायद ही कोई प्रसिद्ध कवि हो जिसने इस विषय पर कुछ न कहा हो। बच्चों के मनबहलाव का तो चन्दा मामा खिलौना ही रहा है। चन्द्रमा के बीच हरिण के आकार का जो काला धब्बा दिखाई पड़ता है, उसके कारण में उसका नाम मृगाङ्क या शशाङ्क पड़ गया है। उस सम्बन्ध में भी बहुत सी बातें कही गई हैं।

लगभग ३०० वर्ष पूर्व सुप्रसिद्ध वैज्ञानिक गैलीलियो ने अपनी बनाई दूरबीन से निरीक्षण किया था और पहले-पहल बताया था कि चन्द्रमा पृथ्वी के ही समान ऊबड़-खाबड़ पर्वत और कन्दरा से भरी हुई दुनिया है। आज ३०० वर्षों बाद चन्द्र धरातल पर २१ जुलाई ६९ को उतरे हुए पृथ्वी के दो मानवों (अन्तरिक्ष यात्रियों—नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन) द्वारा वह निकट से देखा जा चुका है। शक्तिशाली टेलीविजन और चन्द्रतल पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

स्थापित 'लेसर रिफ्लेक्टर' आदि नवीन यन्त्रों द्वारा वहाँ से कई हजार चित्र और सूचनाएँ पृथ्वी पर भेजी जा चुकी हैं। इस सब से बहुत सी नयी जानकारी प्राप्त हुई है।

आकाश-मंडल में चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे निकट है। फिर भी उसकी दूरी भूतल से करीब दो लाख सत्ताईस हजार मील (लगभग पौने चार लाख किलोमीटर) है। पहले वैज्ञानिक समझते थे कि वहाँ पहुँच कर हमारे लिए कदाचित् जी सकना सम्भव न हो सकेगा। चन्द्रमा में बहुत-से छोटे-छोटे और बड़े से बड़े गर्त्त दूरबीन से दिखाई पड़ते थे। पर इनमें तनिक भी पानी नहीं समझा जाता था। बादलों के न रहने से वहाँ के धरातल पर सूर्य की किरणें सारे दिन लगातार पड़ती हैं। माना जाता था कि वहाँ दिन भी २४ घण्टे का नहीं होता। वहाँ का एक दिन यहाँ के पूरे पन्द्रह दिन के बराबर होता होगा। इस कारण गर्मी भी वहाँ इतनी अधिक रहती होगी कि यहाँ का मनुष्य वहाँ भुन उठेगा।

शक्तिशाली दूरबीन से देखने पर चन्द्रलोक के धरातल पर बड़े-बड़े गड्ढे, लम्बे-चौड़े मैदान, ऊँचे-ऊँचे पर्वत के साथ ही साथ ज्वालामुखी पर्वत के छोटे-बड़े बहुत से क्रेटर भी दिखाई पड़ते रहे हैं। आधुनिक ज्योतिषियों का अनुमान था कि चन्द्र के धरातल पर इन क्रेटरों की उत्पत्ति ज्वालामुखी के उद्गारों की वजह से है, क्योंकि इनके अन्दर ज्वालामुखी की राख और लावा भी दिखाई पड़ते थे। कुछ वैज्ञानिकों का दृढ़ मत है कि ये क्रेटर ज्वालामुखी के उद्गार से नहीं उत्पन्न हुए वरन् चन्द्रमा के धरातल पर गिरे हुए बाहरी दुनिया के उल्कापिण्डों के आघातों से बने हैं। परन्तु अपोलो ८ और १० तथा सब से बढ़कर अपोलो-११ के अंतरिक्ष यानों की यात्रा द्वारा अब बहुत सी प्रत्यक्ष जानकारी पाई जा चुकी है। कुछ लोगों का यह भी अनुमान है कि पृथ्वी से टूटकर अलग जा पड़ने के बाद जब चन्द्रमा ठंडा हो रहा था तब उसके धरातल में बहुत सी सिकुड़नें पड़ गईं और वही क्रेटर बन गईं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वहाँ के धरातल में बहुत सो लम्बी-लम्बी दरारें भी दिखाई पड़ती हैं। उनकी चौढ़ाई बड़ी दूर तक जान पड़ती है और लम्बाई तो कहीं-कहीं सौ मील से भी अधिक है।

पृथ्वी के धरातल पर भी उल्कापिंड बराबर गिरते हैं और चन्द्र के धरातल पर भी। पृथ्वी पर गिरने वाले उल्कापिडों का वेग वायुमण्डल की रगड़ से कम हो जाता है और वे भो शीतल हो जाते हैं। ऐसा माना जाता था कि—चन्द्रलोक में वायुमण्डल के अभाव से उल्कापिंड पूरे वेग से धरातल पर गिरकर टकराते रहते हैं। इसके कारण वहाँ शायद गरम पत्थरों की सदा वर्षा-सी होती रहती है। विश्व के परम प्रसिद्ध ज्योतिर्विद्या विशारद सर जौन्स के मतानुसार चन्द्र के धरातल पर प्रतिदिन दस लाख उल्कापात होते रहते हैं और उनकी गति राइफल की गोली से भी सैकड़ों गुना अधिक होती रही है।

चन्द्रमा की आकर्षण-शक्ति भी हमारे लोक की अपेक्षा केवल $\frac{1}{6}$ है। यदि हम आकाश से ढेला फेंकते हैं तो ऊपर कुछ देर जाने के बाद पृथ्वी की आकर्षण-शक्ति के प्रभाव के कारण वह फिर पृथ्वी पर आ गिरता है। यदि यह शक्ति न हो तो ऊपर फेंका हुआ ढेला नीचे न लौट कर कदाचित् वहीं टँगा रह जाय।

अब अमेरिका के मानव अंतरिक्षयात्री चन्द्रतल पर उतर कर वहाँ ढाई घण्टे तक विचरण कर चुके हैं। चन्द्रतलका प्रत्यक्ष दर्शन कर चुके हैं। वहाँ की जानकारी प्राप्त करने के लिए, कंपन सूचक, टेलीविजन के चित्र-प्रेषक आदि तक अनेक वैज्ञानिक यन्त्र वहाँ चन्द्रतल पर स्थापित हैं। इनसे कुछ समय वहाँ की जानकारी मिलती रहेगी। वहाँ तल पर बहुत से गर्त्त हैं, पहाड़ियाँ हैं, अनेक रंगवाली पत्थर की चट्टान हैं, ज्वालामुखी के गर्त्त हैं। वहाँ बहुत से सूखे समुद्र-सागर हैं। वहाँ से पृथ्वी चमकती हुई और आकार में चन्द्रमा से बड़ी दिखाई देती है। वहाँ जब नील आर्मस्ट्रांग और एडविन एल्ड्रिन का चन्द्रखण्ड—२० जुलाई ६९ की रात में १. बजकर ४७ मिनट पर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(अर्थात् २१।७।६९ को) उतरा तब वहाँ चारों ओर धूल उड़ने लगी थी। यान का वह चन्द्रखण्ड जहाँ उतरा था उस स्थान को पृथिवीवासी वैज्ञानिकों ने शान्तसागर कहा है। वहाँ अपेक्षाकृत समतल तल था। पर धरती से अत्यन्त सुन्दर और चमकता दिखाई पड़ने वाले शीतलता-दायक, चन्द्र का तल--वीरान, धूसर, जीवहीन, जलहीन, सूखा, वसस्पति-रहित और अत्यन्त उष्ण मिला। वहाँ रूस का भी अमानव अन्तरिक्षयान लूना--१५ उत्तर चुका है। विश्व और विशेषत: अमेरिका के वैज्ञानिक--चन्द्रलोक से आए चट्टानों और धूल की वैज्ञानिक परीक्षा कर रहे हैं।

कुछ वैज्ञानिकों का यह भी अनुमान है कि चन्द्रलोक पृथ्वी से दूर हटता जा रहा है। पृथ्वी का आकर्षण भी चन्द्रमा पर कम होता जा रहा है। इस कारण यह भी सम्भव है कि लाखों वर्षो के पश्चात् चन्द्रमा पृथ्वी करिक्रमा करने वाला भू-मण्डल का उपग्रह न रहेगा वह अनन्त में न जाने कहाँ चला जायगा। और तब उसकी क्या गति होगी, कोई नहीं जानता। विस्तृत और उपयोगी जानकारी के हेतु वहाँ जाने की तैयारी करने वाले वैज्ञानिकों की दृष्टि में ये सभी बातें हैं। निकटतर भविष्य का इतिहास ही उनकी सफलता बता सकेगा।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

चन्द्ररूप के बारे में पुराणों में क्या कहा गया है ? शक्तिशाली दूरबीन से देखने पर वहाँ के धरातल में क्या-क्या पदार्थ दिखाई देते थे ? क्रेटरों की उत्पत्ति के बारे विभिन्न मत क्या हैं ? चन्द्रलोक के धरातल के बारे में जो तुम जानते हो उसका वर्णन करो।

प्रयोग और व्याकरण—

(१) संक्षेप में चन्द्रलोक का वर्णन लिखो।

(२) नीचे लिखे शब्दों का अर्थ बताओ--

आकर्षणशक्ति, वैज्ञानिक, उपनिवेश, साम्राज्य, उल्कापिंड।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१३) पंचवटी

रचयिता : श्री मैथिलीशरण गुप्त

परिचय--राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त हिन्दी के सुविख्यात महाकवि थे। वे खड़ी बोली में कविता करते थे। उनकी कविता सरल और आदर्श-भावों से भरी है। 'भारत भारती' की रचना से वे बड़े प्रसिद्ध हुए। 'साकेत', 'यशोधरा', 'सिद्धराज', 'जयद्रथ-वध' और 'द्वापर' आदि उनके अनेक पौराणिक तथा ऐतिहासिक काव्य हैं। 'पंचवटी' उनका एक खण्ड काव्य है। उसी में से यह अंश लिया गया है। 'पंचवटी' की प्राकृतिक शोभा और वहाँ के सहज जीवन की चर्चा कर रहे हैं।

[१]

आ आकर विचित्र पशु-पक्षी
यहाँ विताते दोपहरी,
भाभी भोजन देतीं उनको,
पञ्चवटी छाया गहरी।
चारु चपल बाल ज्यों मिलकर
माँ को घेर खिझाते हैं,
खेल-खिझाकर भी आर्या को
वे सब यहाँ रिझाते हैं!

[२]

गोदावरी नदी का तट वह
ताल दे रहा है अब भी,
चञ्चल जल कल-कल कर मानो
तान ले रहा है अब भी।
नाच रहे हैं अब भी पत्ते
मन-से सुमन महकते हैं,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

चन्द्र और नक्षत्र ललक कर,
लालच भरे लहकते हैं ॥

[३]

वैतालिक विहङ्ग भाभी के
सम्प्रति ध्यान-लग्न-से हैं,
नये गान की रचना में वे
कवि-कुल—तुल्य मग्न-से हैं।
बीच-बीच में नर्तक केकी
मानो यह कह देता है—
मैं तो प्रस्तुत हूँ, देखें कल
कौन बड़ाई लेता है ॥

[४]

आँखों के आगे हरियाली
रहती है हर घड़ी यहाँ,
जहाँ तहाँ झाड़ी में फिरती—
है झरनों की झड़ी यहाँ।
वन की एक-एक हिम-कणिका,
जैसी सरस और शुचि है,
क्या सौ-सौ नागरिक जनों की,
वैसी विमल रम्य रुचि है ?

[५]

मुनियों का सत्सङ्ग यहाँ है
जिन्हें हुआ है तत्त्व-ज्ञान,
सुनने को मिलते हैं उनसे
नित्य नये अनुपम आख्यान।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जितने कष्ट कंटकों में हैं
जिनका जीवन-सुमन खिला,
गौरव-गन्ध उन्हें उतना ही
अत्र, तत्र, सर्वत्र मिला ॥

[६]

शुभ सिद्धान्त वाक्य पढ़ते हैं
शुक-सारी भी आश्रम के,
मुनि–कन्याएँ यश गाती हैं
क्या ही पुण्य–पराक्रम के।
अहा ! आर्य के विपिन-राज्य में
सुख-पूर्वक सब जीते हैं,
सिंह और मृग एक घाट पर
आकर पानी पीते है ॥

[७]

गुह, निषाद, शबरों तक का मन
रखते हैं प्रभु कानन में,
क्या ही सरल वचन रहते हैं,
इनके भोले आनन में।
इन्हें समाज नीच कहता है,
पर हैं ये भी तो प्राणी,
इनमें भी मन और भाव हैं
किन्तु नहीं वैसी वाणी ॥

[८]

कभी विपिन में हमें व्यंजन का
पड़ता नहीं प्रयोजन है,
निर्मल जल, मधु, कन्द, मूल, फल,
आयोजनमय भोजन है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मनः प्रसाद चाहिए केवल,
क्या कुटीर फिर क्या प्रासाद !
भाभी का आह्लाद अतुल है,
मझली माँ का विपुल विषाद ॥

[९]

अपने पौधों में जब भाभी
भर भर पानी देती हैं,
खुरपी लेकर आप निरातीं
जब वे अपनी खेती हैं,
पाती हैं तब कितना गौरव,
कितना सुख कितना सन्तोष,
स्वावलम्ब की एक झलक पर
न्यौछावर कुबेर का कोष ॥

[१०]

सांसारिकता में मिलती है
यहाँ निराली निःस्पृहता,
अत्रि और अनसूया की-सी
होगी कहाँ पुण्य-गृहता ?
मानो है यह भुवन भिन्न ही,
कृत्रिमता का काम नहीं,
प्रकृति अधिष्ठात्री है इसकी,
कहीं विकृति का नाम नहीं ॥

[११]

स्वजनों की चिन्ता है हमको
होगा उन्हे हमारा सोच,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

यही एक इस विपिन-वास में
दोनों ओर रहा संकोच।
सब सह सकता है, परोक्ष ही
कभी नहीं सह सकता प्रेम,
बस, प्रत्यक्ष भाव में उसका
रक्षित-सा रहता है क्षेम॥

[१२]

इच्छा होती है, स्वजनों को
एक बार वन ले आऊँ,
और यहाँ की अनुपम महिमा
उन्हें घुमाकर दिखलाऊँ।
विस्मित होंगे देख आर्य को
वे घर की ही भाँति प्रसन्न;
मानो वन-विहार में रत हैं
ये वैसे ही श्री-सम्पन्न॥

[१३]

यदि बाधाएँ हुईं हमें तो
उन बाधाओं के ही साथ,
जिससे बाधा-बोध न हो, वह
सहन-शक्ति भी आई हाथ।
जब बाधाएँ न भी रहेंगी
तब भी शक्ति रहेगी यह,
पुर में जाने पर भी वन की
स्मृति-अनुरक्ति रहेगी यह॥

[१४]

नहीं जानतीं हाय! हमारा—
माताएँ, आमोद—प्रमोद,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मिली हमें है कितती कोमल,
कितनी बड़ी प्रकृति की गोद ।
इसी खेल को कहते हैं क्या
विद्वज्जन जीवन—संग्राम ?
तो इसमें सुनाम कर लेना
है कितना साधारण काम ॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) पंचवटी का यह वर्णन कौन कर रहा है ? कौन पशु-पक्षियों को भोजन देता है ?
(२) पंचवटी के प्राकृतिक सौन्दर्य का अपनी भाषा में वर्णन करो ।
(३) वहां प्राकृतिक रमणीयता का यह पूर्वोक्त वर्णन, लक्ष्मण जी के हृदय के किन भावों को सूचित करता है ?
(४) प्राकृतिक सुन्दरता के अतिरिक्त वहाँ और कौन-कौन से लाभ हैं?
(५) श्रीराम का विपिन राज्य कैसा है ?
(६) वहाँ राम, लक्ष्मण, सीता के दिन किस प्रकार वीतते हैं ?
(७) स्वजनों को लक्ष्मण जी क्यों वहां लाना चाहते हैं ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) पठित अंश के आधार पर पंचवटी का वर्णन लिखो जिसमें ऊपर के पाठ में कही हुई सभी मुख्य बातें आ जायें ।
(२) इस वर्णन से लक्ष्मण और सीता के चरित्र की क्या विशेषताएँ प्रकट होती है ?
(६) इस पाठ के पदों के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ हैं ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(१७) ताड़ से गुड़

(सम्पादकीय)

हमारे देश में वनस्पतियों और वृक्षों के रूप में इतना धन बिखरा पड़ा है कि यदि हम समझ से काम लें और उनका ठीक-ठीक उपयोग करें तो न केवल हमारा देश धनवान हो सकता है बल्कि हमारे बीच जो बेरोजगारी और गरीबी है, जो बेकारी है, वह भी बहुत कुछ दूर हो सकती है। आवश्यकता इस बात की है कि हम बड़े-बड़े नगरों के कल-कारखानों की जगह छोटे-छोटे उद्योग-धंधे कायम करें। ये ग्रामीण घरेलू उद्योग-धंधे कस्बे और गांवों में सरलतापूर्वक चलाए जा सकते। हमारे देश में गन्ने से गुड़ बनाने का रिवाज बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा है। पर गन्ने के अतिरिक्त ताड़ और खजूर से तथा चोकन्दर से भी गुड़ बनाया जा सकता है और ये गुड़ गन्ने के गुड़ से कहीं अधिक पौष्टिक होते हैं।

हमारे देश के पूर्वी-समुद्र के किनारे के प्रदेशों में तो ताड़ और खजूर के पेड़ बहुतायत से हैं। वैसे थोड़ी बहुत संख्या में सभी प्रान्तों में ये वृक्ष पाए जाते हैं। अनुमान है कि भारत में लगभग चार करोड़ ताड़ के और करोड़ खजूर के वृक्ष पड़े हुए हैं। यदि हम इनका उचित उपयोग करें तो न केवल सस्ता और पौष्टिक गुड़ ही हमें पर्याप्त मात्रा में मिल सकेगा बल्कि लगभग पचास लाख परिवारों को जीविकोपार्जन का एक धंधा भी मिल जायगा। इसके अतिरिक्त इस कार्य के लिए आवश्लक औजार और मटके आदि के रूप में लुहारों और कुम्हारों को भी काफी काम मिलेगा। वैसे बंगाल और मद्रास में अनेक स्थानों पर इनके रस से गुड़ तथा कहीं-कहीं मिश्री बनाने का धंधा बहुत दिनों से चला आ रहा है। परन्तु सुधार और विकास करके उसे सुचारु रूप से संगठित करने की आवश्यकता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

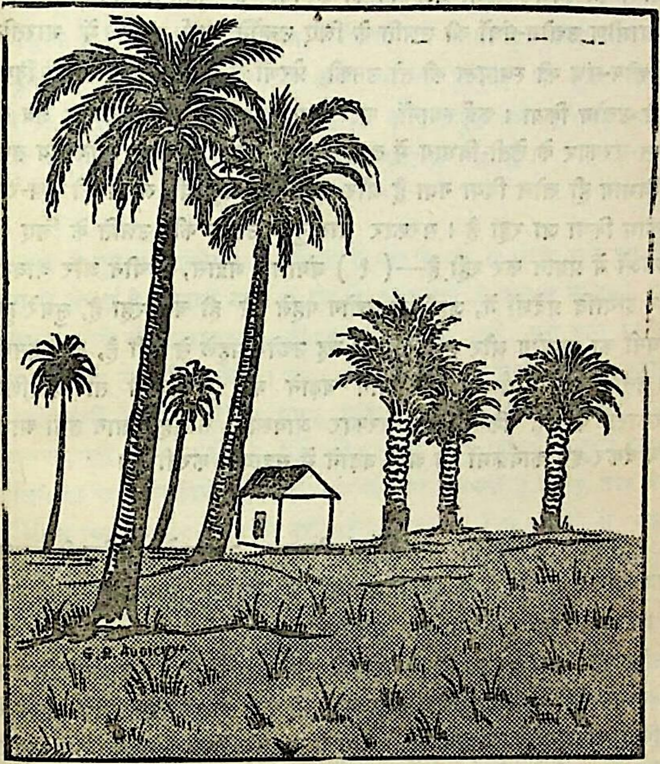

ताड़ और खजूर के वृक्ष

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

महात्मा गांधी इस उद्योग से होने वाले लाभ और इसके द्वारा लाखों परिवारों को मिलने वाली जीविका की कल्पना से बहुत प्रभावित थे और जब ग्रामीण उद्योग-धंधों की उन्नति के लिए उन्होंने वर्धा नगर में भारतीय-ग्रामोद्योग-संघ की स्थापना की तो उनकी प्रेरणा से कार्यकर्ताओं ने इस दिशा में भी उद्योग किया। कई स्थानों पर काम शुरू भी किया गया। अब तो भारत-सरकार के खेती-विभाग में ताड़गुड़ के लिए एक अलग कार्यालय तथा उपविभाग ही खोल दिया गया है और वर्धा के अनुभवी लोगों की देख-रेख में काम किया जा रहा है। सरकार ताड़-गुड़ उद्योग की उन्नति के लिए दो दिशाओं में प्रयत्न कर रही है—(१) बंगाल, मद्रास, कोचीन और त्रावन-कोर इत्यादि प्रदेशों में, जहाँ यह उद्योग पहले से ही चल रहा है, सुधरे हुए साधनों का उपयोग और (२) जहाँ यह उद्योग पहले से नहीं है, वहाँ इसकी स्थापना। इन कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने की जिम्मेदारी तो प्रादेशिक सरकारों पर हैं किन्तु भारत-सरकार आवश्यक सलाह, ज्ञान तथा आधा खर्च देकर इन कार्यक्रमों को आगे बढ़ाने में सहायता करती है।

बम्बई, मध्यप्रदेश, पञ्जाब, हरियाना, उत्तरप्रदेश, पश्चिमी बंगाल, राजस्थान तथा भूपाल में इन योजनाओं के अनुसार काम आरम्भ हो गया है। बम्बई, बिहार, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, और पश्चिमी बंगाल, में तो इस उद्योग की शिक्षा देने के लिए केन्द्रों की स्थापना भी हो गई है। जो शिक्षण-लेने आते हैं। उन्हे शिक्षण काल में (जो कम से कम एक और अधिक से अधिक चार महीने का होता है) तीस से चालीस रुपये मासिक तक छात्र-वृत्ति दी जाती है और शिक्षा पूरी हो जाने के बाद ताड़ से गुड़ बनाने का उद्योग आरम्भ करने के लिए पचास से सौ रुपये तक की आर्थिक सहायता भी दी जाती है।

इन प्रादेशिक केन्द्रों के अतिरिक्त इस उद्योग में दिलचस्पी रखने

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वाले कार्यंताओं को ट्रेनिंग देने के उद्देश्य से भारत सरकार ते दक्षिण भारत के कन्नड़ जिले में एक केन्द्रीय ताड़-गुण शिक्षणशाला खोली है। इसमें ताड़-गुड़ उद्योग के विविध अंगों के विषय में शिक्षा दी जाती है। सीरा और गुड़ को सुरक्षित रखने, ईंधन के खर्च में कमी करने, भट्टियों में सुधार करने आदि की समस्याओं के संबंध में भारतीय कृषि-अनुसन्धान परिषद् द्वारा विहार में स्थित पुराने 'पूसा फार्म' में शोध किया जा रहा है।

ताड़ के गुड़ का उद्योग कई दृष्टियों से गन्ने के रस से बनने वाले गुड़ के उद्योग से अच्छा है। पहली बात तो यह कि गन्ने की तरह ताड़ के वृक्षों को हर साल लगाने की आवश्यकता नहीं पड़ती। एक बार लग जाने पर ये अनेक वर्षों तक रस देते रहते हैं। फिर ताड़ के वृक्ष लगाने में उपजाऊ भूमि की बचत होती है क्योंकि ये वृक्ष बंजर भूमि में उगते हैं खाद या सिंचाई की भी जरूरत नहीं होती। गन्ने की खेती को ग्रामीण एवं जङ्गली-पशुओं द्वारा चर लिये या नष्ट कर दिये जाने की आशंका सदा लगती है किन्तु, ताड़ के वृक्षों को वे किसी प्रकार की हानि नहीं पहुँचा सकते। फिर ताड़ से गुड़ बनाने का ढंग इतना सरल है कि एक परिवार भी रस निकालने से बनाने तक का कार्य स्वतंत्र रूप से कर सकता है।

खजूर के ६० पेड़ों से साल में लगभग ६००० पौंड गुड़ बनाया जा सकता है। और इतना गुड़ बनाने में डेढ़ सौ से दो सौ खर्च होंगे। शेष रकम मजदूरी के रूप में बच जायगी। कई दृष्टियों से विचार करके देखा गया है कि यह धंधा बड़ा लाभप्रद है। यदि हम लोग प्रयत्न करें तो इस प्रकार के अगणित छोटे-मोटे उद्योग-धंधे देश भर में स्थापित किए जा सकते हैं। उनके द्वारा इस देश में एक बार फिर समृद्धि और सम्पन्नता की नदी बहाई जा जा सकती है। आओ, हम सब इस दिशा में उद्योग करें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभ्यास और प्रयोग

(१) भारतवर्ष में ताड़ और खजूर के कितने वृक्ष बताए गए हैं ! (२) ताड़ से गुड़ बनाने का धंधा किन प्रदेशों में पहले से जारी है ? (३) भारत सरकार इस उद्योग की उन्नति के लिए क्या उपाय कर रही है ? (४) ताड़ के गुड़ का धंधा गन्ने की खेती की अपेक्षा क्यों लाभप्रद है ? (५) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखो और अपने वाक्यों में उनका प्रयोग करो--वनस्पति, पौष्टिक, समस्याएँ, छात्रवृत्ति। (६) निम्नलिखित शब्दों में सन्धियां बताओ और वे किन शब्दों के योग से बने हैं--वह भी लिखो--

समुद्रतट, जीविकोपार्जन, ग्रामोद्योग।

(१८) रामबाण इलाज

लेखक : श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

परिचय—चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य भारत के प्रसिद्ध नेताओं में थे। वे पहले गांधी जी के एक विश्वस्त सहयोगी रहे। वर्षों तक वे कांग्रेस कार्यसमिति के सदस्य रहे। वे मद्रास प्रान्त के प्रधान मन्त्री, बंगाल के गवर्नर तथा भारत के अन्तिम गवर्नर जेनरल रह चुके थे। वे बौद्धिक शक्ति में कांग्रेस नेताओं के बीच प्रशंसित रहे। वे प्राचीन भारतीय सभ्यता के समर्थक हैं तथा एक मँजे हुए लेखक और विचारक भी थे। पहले वे हिन्दी के समर्थक थे और उसे राष्ट्र भाषा बनाने के पक्ष में थे। पर अन्त में वे अंग्रेजी-भक्त हो गए। राजा जी भारत में स्वतन्त्र दल के जन्मदाता और सर्वोच्च नेता थे।

जो बातें हमारे सामाजिक और राष्ट्रीय-जीवन पर असर डालती हैं और जिनको नियन्त्रण में रखने अथवा बदलने की हम आशा कर सकते हैं, वे चाहे अच्छी हों या बुरी, उन सब की जड़ें हमारे हृदयों के भीतर है। उनका बाहरी रूप प्रकृति के ऐसे नियमों के अनुसार निर्धारित होता और बनता है,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

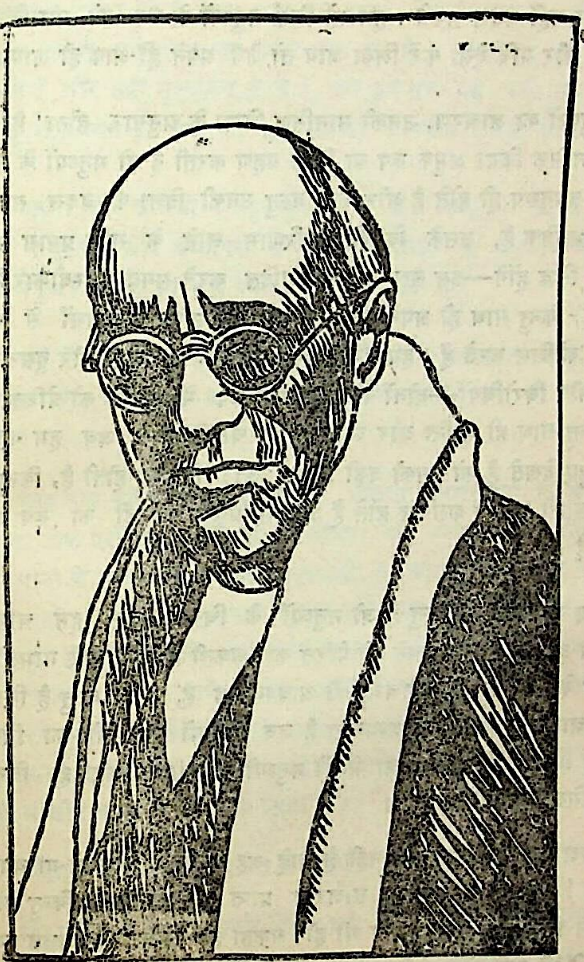

स्व० चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जिन्हें हम नहीं बदल सकते। हम तो सिर्फ मनुष्यों के मन को प्रभावित कर सकते हैं और यदि ऐसा कर लिया जाय तो शेष अपने ही आप हो जायगा।

मनुष्यों का आचरण, उनकी मानसिक क्रिया के अनुसार होता है और यदि मानसिक क्रिया अमुक रूप या दिशा ग्रहण करती है तो मनुष्यों के आचरण भी तदनुरूप ही होते हैं और कोई वस्तु उनकी दिशा को बदल सकती। जो स्वाभाविक है, उसके विपरीत परिणाम लाने के सभी प्रयास अवश्य निष्फल सिद्ध होंगे--इस सत्य को प्रतिपादित करते समय तो स्वीकार किया जाता है, किन्तु साथ ही अपने नित्य के कामों में उसके फलितार्थों से बचने की हम कोशिश करते हैं। हम हिंसात्मक रूप में सोचते हैं और दूसरों को, मित्रों और विरोधियों--दोनों को हिंसात्मक रूप में सोचने को प्रेरित करते हैं। किन्तु साथ ही शान्ति और व्यवस्था भी चाहते हैं। जब हम गड़बड़ी फैलते हुए देखते हैं को हमको बड़ी चिन्ता और निराशा होती है, किन्तु हम खुद शुरू की भूल में शामिल होते हैं जो इस प्रकार गड़बड़ी का रूप धारण करती है।

तब वह कौन सी वस्तु है जो मनुष्यों के चित्त को जैसा हम चाहते हैं उस रूप और दिशा में सोचने को प्रेरित कर सकती है? हमारे मामलों को सुधारने के लिए केवल उसी वस्तु की आवश्यकता है। वह वस्तु है शिक्षा। इस शिक्षा की उस समय आवश्यकता है जब मनुष्यों के मनों का निर्माण होता है। यों थोड़ी-बहुत मात्रा में तो मनुष्यों को जीवन भर ही निरन्तर शिक्षा मिलती रहनी चाहिए।

शिक्षा का अर्थ साक्षरता नहीं है चाहे वह बच्चों के लिए हो या वयस्कों के लिए! स्कूल के परिश्रम से साक्षरता प्राप्त हो सकती है, किन्तु साक्षर व्यक्ति में शिक्षा का घोर अभाव भी हो सकता है। शिक्षा का मतलब ज्यादा जानकारी भी नहीं होता। शिक्षा का फल यह होना चाहिए कि मनुष्य सही दिशा में सोचने लगे और वस्तुओं का ठीक मूल्यांकन करे। स्कूल और कालेज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इसकी भी शिक्षा देते हैं किन्तु जहां तक हमारे देश के पचास करोड़ लोगों का सम्बन्ध है, धर्म ही उनका सबसे बड़ा गुरु है । जिस हद तक लोग ठीक सोचते हैं और सही मूल्यांकन करते हैं, उस हद तक यह धर्म का प्रभाव है, किन्तु बहुत लोग इस बात को नहीं समझते या स्पीकार नहीं करते ।

स्कूलों और कालेजों नें बहुत-कुछ किया है । किन्तु हम स्कूलों और कालेजों में पुस्तकों और अध्यापकों से जो कुछ सीखते हैं उन सब की अपेक्षा धर्म मनुष्यों के मन का कहीं ज्यादा निर्माण करता है ।

धर्म के नाम पर हममें बहुतेरा मर्मकाण्ड, पक्षपात और अहंकार प्रचलित है । वास्तविक अर्थ में इस समय हममें धर्म की मात्रा काफी नहीं है ।

कुछ लोग कहेंगे कि धर्म ही हमारी मौजूदा परेशानियों का कारण है । यह तो ठीक ऐसी बात होगी कि हम बीमार पड़ें गन्दा पानी पीने से और दोष पानी के मत्थे डालें । पानी की गन्दगी के कारण तरह-तरह की बीमारियाँ होती हैं, किन्तु इस कारण मनुष्य पानी पीना बन्द नहीं कर सकता । यह बहुत ही जरूरी है कि वस्तुओं का असली मूल्य ग्रहण किया जाय । व्यक्ति अपने चारों ओर रहने वाले जीवित प्राणियों के संसार के प्रति सही दृष्टिकोण रखे और जो अज्ञेय है उसके प्रति आदर-भावना रखी जाय । यही धर्म है, जिसको तत्त्वज्ञानियों नें और उनसे भी अधिक सन्तों और भक्तों नें विविध रूपों में और मार्गों से विकसित किया है ।

पांडित्य नहीं, धर्म ही चरित का निर्माण करता है ।

हिन्दुओं से मैं कहूंगा, उनसे विशेष रूप से अपील करूंगा कि वे अपने प्राचीन धर्मग्रन्थों को मातृभाषा में पढ़ें अथवा सुनें, ताकि हम केवल पांडित्य में धर्म को न गँवा दें । उन्हे रामायण और महाभारत को बार-बार पढ़ना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अथवा सुनना चाहिए। यही रामबाण इलाज है। इस तरह हम अच्छे मनुष्य बन सकेंगे। अपने देश को सुखी और समृद्ध बनाने का यही मार्ग है। अपने ऋषियों का अनुसरण करो और फिर सब कुछ शुभ होगा।

अभ्यास

आवृत्ति—(१) निम्नलिखित शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्यों में प्रयोग करो—नियंत्रण, निर्धारित, फलितार्थ, निर्माण, साक्षरता, अज्ञेय। (२) इस लेख के लेखक कौन हैं और उनके विषय में तुम क्या जानते हो ? (३) पाण्डित्य से नहीं बल्कि धर्म से ही कैसे चरित्र का निर्माण होता है ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) वर्तमान गड़बड़ी का जो इलाज लेखक ने सुझाया है, उससे तुम कहाँ तक सहमत हो ? (२) अन्तिम पैरा में आई संज्ञाओं को भेद सहित लिखो।

(१९) ऐसे युवक चले दल के दल

रचयिता : श्री रामनरेश त्रिपाठी

कविपरिचय—पहले दिया जा चुका है।

संदर्भ—एक देश पर विदेशी शत्रु ने चढ़ाई कर दी। देश के राजा ने शत्रु का सामना किया पर उसे जीत न सका। तब उसने अपने देशवासियों से अनुरोध किया कि वे मिल कर देश की रक्षा करें, नहीं तो वे पराधीन हो जायेंगे। यह सूचना पाकर देश के प्रत्येक कोने से, घर-घर से, युवक निकल कर सेना में भरती होने और शत्रु से लड़ने लगे। गांवों तक युद्ध के समाचार पहुँचे जिसका पुत्र देश के लिए मारा जाता, उसे लोग बधाई देते। इन्हीं दृश्यों का वर्णन नीचे लिखे पद्यों में है। ये पद्य—कवि के लोकप्रिय काव्य 'स्वप्न' से लिए गए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[१]

वे न जानते थे भूतल पर
जीवित रहना पराधीन बन।
न्याय और स्वातंत्र्य जगत में
उनके थे दो ही जीवन-धन।
सुन नृप की घोषणा, शत्रु की
प्रबल शक्ति का पाकर परिचय।
किया उन्होंने शीघ्र शत्रु को
उचित दंड देने का निश्चय॥

[२]

जय के दृढ़ विश्वास-युक्त थे
दीप्तिमान जिनके मुख-मंड।
पर्वत को भी खड-खंड कर
रजकण कर देने को चंचल।
फड़क रहे थे अति प्रचंड भुज-
दंड शत्रु-मर्दन को विह्वल।
ग्राम-ग्राम से निकल-निकल कर
ऐसे युवक चले दल के दल॥

[३]

अपने शयनागार वन्द कर
दिए, नवोढाओं ने तत्क्षण।
बाँध दिए पतियों की कटि में
असि, कलाइयों में रण-कंकण।
माताओं ने विजय-तिलक कर
छिड़के थे जिनपर पवित्र जल।
ग्राम-ग्राम से निकल-निकल कर
ऐसे युवक चले दल के दल॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[४]

अरिमर्दन के मनोभाव थे
जिनकी सुख-आकृति में लक्षित ।
जिनके हृदय पूर्व-पुरुषों की
वीर-कथाओं से थे रक्षित ।
जिनके शारीरिक बल से था
कहीं अधिक उद्दाम मनोबल ।
ग्राम-ग्राम से निकल-निकल कर
ऐसे युवक चले दल के दल ।।

[५]

जिनकी नस-नस में विद्युत् थी,
आँखों में था क्रोध प्रज्वलित ।
छाती में उत्साह भरा था
वाणी में था प्राण प्रवाहित ।
मातृभूमि के लिए हृदय में,
जिनके भरी शक्ति थी अविरल ।
ग्राम-ग्राम से निकल-निकल कर
ऐसे युवक चले दल के दल ।।

[६]

माँ ने कहा—दूध की मेरे
लज्जा रखना रण में हे सुत ।
स्त्री ने कहा लौटना घर को
आर्यपुत्र ! तुम विजय-श्री-युत ।
इन वचनों से गूंज रहे थे
जिनके श्रवण और अन्तःस्थल ।
ग्राम-ग्राम से निकल-निकल कर
ऐसे युवक चले दल के दल ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[७]

रहता था उत्साह प्रवाहित
गाँवों में राहों पर दिनभर।
घर से निकल खड़ी रहती थीं
माताएँ भोजन जल लेकर।
सैनिक युवकों को रणवर्ती
निज पुत्रों के तुल्य मानकर।
खिला-पिलाकर सुख पाती थीं
प्रेम-सहित दृग मूंद ध्यान धर॥

[८]

बहनें कहती थीं—हे भाई !
वैरी का अभिमान चूर्ण कर।
विजयी योद्धा के बानक में
इसी राह होकर जाना घर।
हम गायेंगी गीत विजय के
फूल और लाजा बरसाकर।
बहनों को आनन्दित करना
हर्ष हमारा सुना-सुनाकर।

[६]

करता था जब समरांगण में
कोई योद्धा प्राप्त वीरगति।
उसके जननी-जनक गाँव में
होते थे तब संमानित अति।
उन्हें राष्ट्र-रक्षक कहकर सब
सादर करते थे मस्तक नत।
क्षण में हो जाता था उनका
पुत्र-वियोग गर्व में परिणत॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[१०]

होता था जब समर-भूमि में
कोई सैनिक लड़कर आहत।
उसकी वीर-प्रसू के अद्भुत
हो जाते थे भाव मनोगत।
अपनी कोख पवित्र मानकर
वह कहती होकर आनन्दित।
वीर कर्म का मेरे सुत के तन
पर है स्मृति-चह्न अलंकृत॥

अभ्यास

(१) देश-रक्षा के लिए आने वाले युवकों की मनोवृत्ति कैसी थी ?
(२) देश की कठिन परिस्थिति में पत्नियों और बहनों ने क्या किया ?
(३) तीसरे तथा पाँचवें पद्यों के अर्थ अपनी भाषा में समझाकर लिखो।
(४) समास बताओ—
ग्राम-ग्राम रण-कंकण, जननी-जनक, वीर-प्रसू।
(५) नवें-दसवें पद्यों में आये हुए विशेषणों को चुनकर बताओ और उनके सामने उनके विशेष्य लिखो।
(६) अपने मन से एक छोटा सा निबन्ध लिखो। इस निबन्ध में उन सब बातों की चर्चा करो जिनका वर्णन इस कविता में कवि ने किया है।
(७) प्रथम और द्वितीय छंदों को गद्यरूप में लिखो।
(८) उक्त गद्यान्तरित अंश के सात शब्दों की पदव्याख्या करो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२०) विनोदी बापू की स्मृतियां

लेखक : रामनाथ 'सुमन'

बापू जी की सबसे बड़ी विशेषता यही थी कि उनमें मानव के प्रति सहानुभूति का भाव बड़ा प्रबल था। इसीलिए वह आदमी के दिल को छूते थे और इसीलिए कठिन से कठिन परिस्थिति में निश्चल रहते थे। उनमें दूसरा बहुत बड़ा गुण उनका आनन्दी और विनोदी स्वभाव था। कठिनाइयों और विरोधों को वे अपनी हँसी से परास्त कर देते थे। उन्होंने स्वयं ही एक बार कहा था कि मेरे जीवन में इतना दुःख और संताप आया है कि यदि मुझमें विनोद-प्रियता न होती तो मैं पागल हो जाता। विनोद-विनोद में वह गहरी शिक्षा देने वाली बातें भी कह जाते थे। उनके विनोदी स्वभाव की कुछ स्मृतियाँ यहाँ दी जाती हैं।

[१]

हस्ताक्षरों के लिए लोग गांधी जी को बहुत तंग किया करते थे। गांधी जी यह भी जानते थे कि यह सिर्फ एक शौक है और इससे लाभ उठाने वाले बहुत कम होते हैं। इनसे बचने के लिए उन्होंने हस्ताक्षर की फीस पाँच रुपये रख दी। इससे जो रुपया प्राप्त होता था वह हरिजनों की सहायता में लगता था। एक बार प्रार्थना के पश्चात् एक लड़की ने बापू को पाँच रुपये देकर उनके हस्ताक्षर माँगे। बापू ने हस्ताक्षर कर दिये।

बालिका ने कहा—कुछ लिख दीजिए।

बापू ने पूछा—क्या लिखूँ ?

बालिका—जो आप के मन में आवे वही लिख दीजिए।

बापू—तुम्हारे पिता जी क्या करते हैं ?

बालिका—तम्बाकू की दुकान।

बापू ने झट लिखा दिया—'तम्बाकू पीना बुरा है।'

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[२]

एक वार एक पगड़ीधारी सेठ जी उनसे मिलने आए। बातचीत के सिलसिले में सेठ जी ने बापू से प्रश्न किया--'आप के नाम की टोपी तो शहर भर में चल निकली है, जिसे देखो गांधी टोपी पहने हुए है पर आप न जाने क्यों टोपी नहीं पहनते।'

गांधीजी हँसकर बोले--'बीस टोपियों के बराबरा का कपड़ा तो आप अपनी पगड़ी में ही पहने हुए हैं, वाकी उन्नीस व्यक्तियों को नंगे सिर रहना ही पड़ेगा और शायद मैं उन्हीं उन्नीस लोगों में से एक हूँ!'

[३]

उन दिनों श्री वनारसीदास चतुर्वेदी हिन्दी के अच्छे लेखक माने जाते थे। एक वार वह बापू से मिले। चतुर्वेदी जी बोले--'बापू, मैं तो आपके विरुद्ध बहुत लिखता हूँ।'

वापू ने तुरन्त उत्तर दिया—'लिखते हो सो तो ठीक है। पर तुम्हारी कोई सुनता भी है?'

[४]

फोटोग्राफरों से गांधी जी वहुत बचते थे। उनके आश्रम में सदैव किसी न किसी अखबार के फोटोग्राफर आते थे। एक दिन संध्या समय भ्रमण के लिए वे कुटिया से बाहर जाने वाले थे कि कई फोटोग्राफर दरवाजे के पास खड़े हो गए। गांधी जी ने उन्हें देखा तो मजाक में बोले--'आप लोग तो फोटो खींच लेते हैं। पर हमें फोटो नहीं मिलती।' यह सुनकर सब फोटोग्राफर हंसने लगे।

[५]

आगाखाँ महल* की वात है। वापू का जन्म-दिवस था। निश्चय हुआ कि वैडमिंटन का खेल खेला जाय। आग्रह करके वापू को भी खेलने

* इस स्थान पर वापू जी, दो तीन-सहयोगियों के साथ, नजरबंद रखे गये थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के लिए लाया गया। बापू ने वह खेल कभी खेला न था। फिर भी लोगों के आग्रह पर श्रीमती सरोजिनी नायडू* के विपक्ष में खेलने के लिए खड़े हो गये। श्रीमती नायडू बायें हाथ से खेलने, लगीं। बापू ने बल्ला बायें हाथ में ले लिया। श्रीमती नायडू ने पूछा--'आप बायें हाथ से क्यों खेलते हैं ?'

बापू ने कहा---'इसलिऐ कि तुम बायें हाथ से खेल रही हो।'

सरोजिनी देवी ने कहा---'मैं तो बायें हाथ से इसलिए खेल रही हूँ कि मेरे दाहिने हाथ की कलाई में दर्द है।'

बापू ने तुरन्त उत्तर दिया---'मैं मर्द ठहरा ! तुम्हारे दर्द का लाभ कैसे ले सकता हूँ।'

[६]

एक बार जापान के प्रसिद्ध कवि योन नागूची, गांधीजी से मिलने सेवामग्राम † आये हुए थे। जिस समय वे गांधीजी के पास पहुँचे, उस समय गांधीजी अपने सिर पर गीली मिट्टी सूती कपड़े में लपेट कर रखे हुए थे। गांधीजी प्राकृतिक चिकित्सा ‡ को ही सर्वश्रेष्ठ चिकित्सा मानते थे और उनका विचार था कि हिन्दुस्तान-जैसे गरीब देश में प्राकृतिक चिकित्सा ही लाभदायक है। वे दवाओं से दूर रहते थे।

योन नागूची ने गांधीजी से पूछा---'आप के सिर पर यह क्या है ?'

गांधीजी ने मुस्कुराते हुए कहा---'मैं हिन्दुस्तान की मिट्टी में पैदा हुआ हूँ। और यही हिन्दुस्तान की मिट्टी मेरे सर का ताज है।'

---

* सरोजिनी देवी भारत के प्रसिद्ध नेताओं में एक थीं। यह अंग्रेजी की एक बड़ी कवयित्री भी थीं। बाद में हमारे प्रान्त की गवर्नर हो गई थीं और यहीं उनका देहान्त भी हुआ। † सेवाग्राम--मध्यप्रान्त के वर्धा नगर के निकट का स्थान है जिसमें गांधीजी का आश्रम था। ‡ प्राकृतिक चिकित्सा-प्रकृति की सहायता (उपवास, मिट्टी, जल, धूप इत्यादि) से रोग के मूल कारणों को दूर कर देने की प्रणाली।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[७]

एक वार प्रातः भ्रमण के बाद गांधी जी सेवाग्राम में 'वा'* की कुटिया में पहुँचे। 'वा' ने उन्हें नाश्ता दिया। नाश्ते में संतरे की छिली हुई फाँकों और छिले हुए लहसुन का मिश्रण था। बापू ने चम्मच से खाना शुरू किया और फिर 'वा' से पूछा—'तुमने नाश्ता ले लिया है ?'

'मैं ले लूंगी।' 'बा' ने कहा।

'तुमको तो मुझसे पहिले नाश्ना लेना चाहिए था'—बापू ने हँसते हुए कहा।

मुस्कुराते हुए 'वा' ने पूछा—'क्यों ?'

'अरे तू मुझसे बड़ी है न !'

'जव देखो तब यही वात' झुंभलाकर 'वा' ने कहा।

'तो क्या यह सच नहीं है ?' वापू ने मुस्कुराते हुए पूछा और फिर आस-पास खड़े हुए व्यक्तियों की ओर देख कर अपनी मधुर मुस्कान के साथ कहा—'आप लोगों को मालूम है या नहीं कि 'वा' मुझसे कुछ महीने वड़ी हैं।' इतना कह कर वापू जी जोर से हँस पड़े।

[८]

एक बार की बात है कि एक मद्रासी युवक ने दस रुपये देकर बापू से हस्ताक्षर चाहे और कहा—'वापू' वड़ी कृपा होगी, यदि आप तमिल में † हस्ताक्षर करें।'

बापू ने थोड़ा सोचा और तमिल में अपना नाम लिख दिया। युवक ने हस्ताक्षर देखे और कहा—'आपने विलकुल सही लिखा है।'

* बा—वापू की पत्नी कस्तूर बा। † तमिल—मद्रास प्रान्त की एक बहुत पुरानी भाषा और लिपि है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बापू तुरन्त बोल उठे—मेरी इस याददाश्त के लिए मुझे कुछ नहीं दोगे ?

युवक ने दस रुपये निकाल कर दे दिये। बापू मुस्करा कर बोले—'चंद सेकेंडों का यह सौदा बुरा नहीं है।'

[९]

अनेक कार्यों में व्यस्त रहते हुए भी बापू सेवाग्राम के रोगियों की परिचर्या स्वयं ही करते थे। उनकी चिकित्सा में तरह-तरह के, कोढ़ तक के रोगी थे। यह सब देख कर एक बार सरदार पटेल* ने कहा—'बापू' तुम तो अपने चारों ओर शिव जी की बरात संजाये फिरते हो।'

बापू खिलखिला कर हँस पड़े और कहने लगे—'हाँ, देखो न। शीशियों में साँप-बिच्छू तक तो रक्खे हैं !'

[१०]

एक बार लगभग पचास-साठ विद्यार्थी बापू के पास आये। बापू ने सबको बिठाया और कहा—'मैं बहुत गरीब हूँ, आप लोगों का क्या सत्कार करूँ ! खिलाने को भी कुछ नहीं और पिलाने को भी कुछ नहीं। हाँ, एक चीज है जिससे आप पेट भर सकते हैं।' पास के कुएँ की ओर इशारा करते हुए बोले—'वह है बड़ा मीठा पानी। जी भर कर पीजिए।'

अभ्यास

(१) बापू के सर्वोत्तम दो गुणों का वर्णन करो। (२) 'बा' कौन थीं और उनसे बापू ने क्या मजाक किया ? (३) पगड़ीधारी सेठ के प्रति बापू के व्यङ्ग का क्या आशय था ? (४) पदव्याख्या करो—'मैं हिन्दुस्तान की मिट्टी में पैदा हुआ हूँ।'

---

* सरदार पटेल—हमारे देश के एक बहुत बड़े नेता। सरदार वल्लभभाई पटेल, भारत सरकार के उपप्रधानमन्त्री थे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२१) युगावतार

रचयिता : श्री सोहनलाल द्विवेदी

परिचय—श्री सोहनलाल द्विवेदी आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक लब्ध-प्रतिष्ठ कवि हैं। यह फतेहपुर जिले के विन्दकी कस्वे के निवासी हैं। ओज़पूर्ण राष्ट्रीय कविताओं की रचना के लिए इनकी प्रसिद्धि है। कुणाल, भैरवी, वासवदत्ता आदि इनके प्रसिद्ध काव्य-ग्रन्थ हैं। इन्होंने बालोपयोगी कविताएँ भी लिखी हैं। प्रस्तुत कविता में बापू के प्रभाव का बड़ा अच्छा वर्णन है।

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
गड़ गए कोटि दृग उसी ओर ?

जिसके शिर पर निज धरा हाथ
उसके शिर-रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गए उसी पर कोटि माथ;

हे कोटि-चरण, हे कोटि-बाहु !
हे कोटि-रूप, हे कोटि-नाम।
तुम एक मूर्ति, प्रतिमूर्ति-कोटि
हे कोटि-मूर्ति तुमको प्रणाम !

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी रेख
युग हटा तुम्हारी भृकुटि रेख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

तुम बोल उठे, जग बोल उठा
तुम मौन बने, युग मौन बना,
कुछ कर्म तुम्हारे सञ्चित कर
युग-कर्म जगा, युग-धर्म तना,

युग-परिवर्त्तक, युग-संस्थापक
युग सञ्चालक, हे युगावतार ?
युग-निर्माता, युग-मूर्त्ति ! तुम्हें
युग युग तक युग का नमस्कार !

तुम युग-युग की रूढ़ियाँ तोड़
रचते रहते नित नयी सृष्टि,
उठती नव जीवन की नीवें
ले नव चेतन की दिव्य दृष्टि,

धर्माडम्बर के खँडहर पर
कर पद-प्रहार, कर धरा ध्वस्त
मानवता का पावन मन्दिर
निर्माण कर रहे सृजन व्यस्त !

बढ़ते ही जाते दिग्विजयी !
गढ़ते तुम अपना राम-राज,
आत्माहुति के मणि-माणिक से,
मढ़ते जननी का स्वर्णताज !

तुम काल चक्र के रक्त सने
दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़,
मानव को दानव के मुँह से
ला रहे खींच बाहर बढ़ बढ़ !

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पिसती कराहती जगती के
प्राणों में भरते अभयदान,
अधमरे देखते हैं तुमको,
किसने आकर यह किया त्राण !

दृढ़ चरण, सुदृढ़ कर-संपुट से
तुम काल चक्र की चाल रोक
नित महाकाल की छांती पर
लिखते करुणा के पुण्य श्लोक !

कँपता असत्य, कँपती मिथ्या,
वर्बरता कँपती है थर-थर !
कँपते सिंहासन, राजमुकुट
कँपते खिसके आते भू पर,

हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित लुंठित,
सेनायें करतीं गृह-प्रयाण !
रणभेरी तेरी बजती हैं,
उड़ता है तेरा ध्वज निशान !

हे युग-द्रष्टा, हे युग-स्रष्टा,
पढ़ते कैसा यह मोक्ष-मन्त्र
इस राजतन्त्र के खँडहर में
उगता अभिनव भारत स्वतंत्र !

आवृत्ति और अभ्यास—

(१) कौन युगावतार कहा गया है और क्यों ? युग किसके इशारों पर चलता रहा है ? युगावतार कैसे कोटिचरण, कोटिबाहु कह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गया है ? कौन धर्माडम्बर को ध्वस्त कर मानवता का निर्माण कर रहा है ? महाकाल की छाती पर कौन करुणा का पुण्य श्लोक लिख रहा है ?

(२) अर्थ लिखो—(क) तुम युग·········सृजन व्यस्त । (ख) नित महाकाल······खिसके आते भू पर ।

प्रयोग और व्याकरण—

(१) 'महात्माजी' को किस कारण युगावतार कहा गया है ? एक छोटा सा निवन्ध लिख कर अपने विचार प्रकट करो ।

(२) समास वताओ—युगावतार, युग-परिवर्तक, दिग्विजयी, नवजीन, कोटिचरण, धर्माडंवर, मणि-माणिक ।

(२२) मन का शरीर पर प्रभाव

लेखक : श्री आनन्दवर्द्धन

परिचय—श्री 'आनन्दवर्द्धन' के नाम से श्रीमहावीरप्रसाद पोद्दार जी बहुत दिनों से हिन्दी में स्वस्थ और नैतिक विषयों पर लेख लिख रहे हैं। पोद्दार जी हिन्दी के बहुत पुराने लेखक और एक मौन लोक-सेवक हैं । उनकी भाषा बहुत सरल और मुहावरेदार होती है तथा शैली मनोरञ्जक । प्रामाणिक अनुवाद के लिए भी वह विख्यात हैं । इनके द्वारा अनूदित ग्रन्थ 'टाम काका की कुटिया' बहुत प्रसिद्ध है ।

रोग क्या है, यह वताने की जरूरत नहीं जान पड़ती । बूढ़े से लेकर वेजबान बच्चा तक, बड़े-बड़े पण्डित से लगाय बज्र देहाती तक जानते हैं कि किसी तरह की तकलीफ का नाम रोग है, इसी को वीमारी भी कहते हैं; देहात वाले 'वेराम' कहते हैं । वीमारी अर्थात् 'वेराम'—जिसमें आराम न हो, चैन न हो वेचैनी हो । ऐसा कौन है जो कभी बीमार न पड़ा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

हो ? कुछ लोगों का तो कहना है कि पड़ने की बात जाने दीजिए, ऐसा कौन है माई का लाल 'जो बीमार न हो ?' उनके मत के अनुसार तो पूर्ण नीरोग मनुष्य मिलना ही कठिन है । हाँ, कोई कम है, कोई जब तब अवसाद का शिकार है और कोई दिन-रात खाट पर पड़ा कराह रहा है । इस मत वाले कहते हैं, पूर्ण नीरोग तो हम उसे मानते हैं कि जिसके स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास हो । इस कसौटी पर खरे उतरने वाले आज तो दिखाई नहीं देते हैं ।

जिनके मनोजित होने का कुछ ख्याल होता है वे भी रोग-पीड़ित पाए जाते हैं ।

पर जान यह पड़ता है कि सिद्धान्त गलत नहीं है । इसमें संभव बात ही कही गई है । मनोजयी हो तो शरीर अवश्य स्वस्थ रहना चाहिए । ढोंगी की बात छोड़ दीजिए । क्योंकि मन और शरीर का अति निकट सम्बन्ध है । जहाँ सोचने से बात हरेक के ध्यान में आने योग्य है । मन में खिन्नता आते ही शरीर अवसन्न हो जाता है, मन में विकार आते ही शरीर में विकार व्यापता है और मन से विकार जाते ही शरीर से चला जाता है । जैसे डोर और पतंग का सम्बन्ध है, डोर तानिए पतंग तन जाता है, डोर ढीली कीजिए पतंग ढीला पड जाता है । लोगों को आँखों से काम लेने की ऐसी आदत पड़ी हुई है की जो चीज इन दो आँखों से दिखाई नहीं देती उसे हम जल्दी से मानते ही नहीं । कहते हैं पतंग की डोर तो आँखों से दिखाई देती है पर कहाँ तो मन और कहाँ शरीर के साथ उसका ताल्लुक जोड़ने वाली डोर ? अब इन भाइयों को कैसे यह समझाया जाय कि सारी चीजें तो निरी आँखों से नहीं दिखाई जा सकतीं । आवाज को, हवा को, स्वाद को, गन्ध को आप कहाँ देखते हैं ? वाह, यह क्या कहते हैं आप ? सब काम आँखों से कैसे होगा ? इसके लिए तो भगवान ने हमें दो कान, नाक, जीभ और त्वचा दी है । तब यह क्यों नहीं मानते कि इसी तरह भगवान ने हमें एक मन भी दिया है ? पर कान,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

नाक, जीभ तो हमें आँखों से दिखाई देते हैं, पर मन कहाँ दिखाई देता है ? तो क्या दुनिया में जो दिखाई न दे वह है ही नहीं ? तब आप कैसे कहेंगे, हटाइए यह सब बकवास, हमारे मन में सुनने की चाह नहीं। नीबू का नाम सुनकर मुँह में पानी भर आता है, क्यों ? कान और मुँह जुड़े हुए हैं सही, पर नेनुआ का नाम सुनकर तो मुंह में पानी नहीं आता। सोचिए जरा तो, आपका कोई भी काम मन के बिना होता नहीं जान पड़ेगा। आँखें तो, आप कह देंगे कि, जब सोते हैं तब वन्द रहती हैं; पर कान के छेदों में तो आप रुई डालकर नहीं सोते, फिर सोते हुए आप लोगों की वातें क्यों नहीं सुनते ?

'अरे, आप कहाँ लिए जा रहे हैं हमे ? चले आराम वे-आराम की बातें बताने और लगे समझाने मन की बात ?'

मैं ठीक चल रहा हूँ। कहिए रोग की पीड़ा अनुभव करने के लिए आपके पास कौन सा औजार, आला या इन्द्रिय है ? मैं तो नहीं देखता कोई। एक बार एक से मैंने कहा, आप कहते हैं 'सिर में दर्द है, बड़े जोरों का। सिर फटा जा रहा है।' पर मुझे तो कहीं फूटा या फटा नहीं दिखाई देता। साबित सिर है, आपका, वह दर्द है कहाँ ? 'अरे सिर में है, सिर में, कहाँ क्या ?' 'अंगुली रखकर वताइए तो खोजें कि कोई निशान है क्या कहीं ?' 'अरे सारे सिर में है मेरे भाई, तंग मत करो, कुछ दवा बताओ।' 'कैसे जाना जाय मेरे भोले भाई ?' 'खबरदार, भोले वगैरह मत बनाइए, आप हमें बेवकूफ समझे बैठे हैं, हम वेवकूफ नहीं हैं। बस, झगड़ा हो जायगा।' इस पर मैंने कहा, 'लीजिए, एक उदाहरण यही आपने उपस्थित कर दिया। मैंने आपको न थप्पड़ मारा, न और कोई चोट पहुँचाई। भोले कहने पर ही आप इतने गर्म हो गए, माथे पर बल पड़ गए, आँखों में सुर्खी आ गई, क्यों ?' कानों में आवाज जो पड़ी। 'सो तो देर से आवाज पड़ रही थी, पर आप गर्म नहीं हुए थे। इसी आवाज से क्यों गर्म हुए ? आपके मन ने कहा कि यह आवाज

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खराब है और तुरन्त आपके तेवर बदल गए।' यही मन और शरीर का सम्बन्ध है।

इस हिसाब से अगर मन का शरीर पर इतना कब्जा है तो फिर हम मन से मान लें कि हम बीमार नहीं हैं तो क्या हमारी बीमारी मिट जायेगी ?' बेशक, बहुत सी बीमारियाँ मिट जायँगी। कुछ जगहों में इस तरह के इलाज चल भी रहे हैं कि रोगी के मन में बिठाया जाता है कि रोग नहीं है और उसे आराम कर दिया जाता है। पर यह जरा मुश्किल यों हो जाता है कि रोग है यह भी आप ही का मन मानता है, तो रोग नहीं है यह भी आपके उसी मन से मनवाना जरा कठिन जान पड़ता है। पर जिन्हें इस फन में महारत हो गई है वे यह खूब कर सकते हैं।

हम सारे रोग मन से ही मोल लेते हैं। जैसे 'मन एव मनुष्याणां कारणं बन्धमोक्षयोः' कहा है वैसे ही योगवाशिष्ठकार ने रोगों का कारण बहुत कुछ मन को बतलाया है। 'कैसे ? कौन चाहता है, मैं रोगी हो जाऊँ ?' 'नहीं, यह तो कोई नहीं चाहता, सभी चाहते हैं हम नीरोग रहें, सुखी रहें, मौन में रहें। पर इसके साथ ही वे यह जो चाहते हैं कि गलत रास्ते पर जाकर भी अपने गन्तव्य स्थल पर पहुँच जायँ।' यह कैसे सम्भव होगा ? आप इन्द्रियों का गलत प्रयोग करके भी नीरोग कैसे रह सकतें हैं ? उनका उचित उपयोग समझ लें और तदनुसार चलें तो अवश्य नीरोग रहेंगे। सब आपके मन से समझने की बात है और मनसे चलने की। आप न समझें और न चलें और फिर बीमार पड़ें तो इसमें कसूर किसका है ? 'मानो हमारी बीमारी के कारण हम ही ठहर गये। दुःख भी हम भोगें और कसूरवार भी हम ही। यह तो खूब रही !' 'है ही, यह जो कसूर आपने किया तो दुःख कौन भोगेगा ? इसी से एक ने कहा है, बीमार दुष्ट है। लोग समझते हैं, बीमारियाँ अपने आप हो जाती हैं या भाग्य से हो जाती हैं। पर सही मानिए कि यह सब आपके कर्मों का भोग है। कर्म माने भाग्य नहीं 'करतब'। प्रत्येक छोटे-छोटे रोग भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

आपकी असावधानी से होते हैं। 'कैसे ?' मानिए कि आपकी इस वक्त शौच जाने की आदत है। हाजत हुई। पर आप मेरे साथ बातों में लगे हैं, मुरव्वत में पड़े हैं, न यही कह सकते हैं कि मैं यहाँ पाखाने जाऊँगा और न उठकर अपने घर ही जाते हैं। हिन्दुस्तानी घरों में पाखाना तो जनानखाने में होता है, वहां होता है पर्दा, और पाखाना भी होता है इतना गन्दा कि कोई अपने पाखाने में दूसरे को ले नहीं जाना चाहता। पाखाना तो दूर रहा, पेशाव की हाजत के लिए घण्टों वैठे रहते हैं। अव इसका नतीजा क्या होगा? समझ लीजिये कब्ज की इमारत की नींवस्वरूप पहली ईंट धरी गयी। फिर कभी अलसाकर नहीं गये या राह चलते रहे या और किसी तरह भी वक्त टल गया। समझ लीजिये पूरी नींव भर गई। अब हाजत बन्द हो जायगी— जायँगे आप जरूर, पर काँखेंगे, हवा निकलेगी, मुश्किल से पाखाना होगा। या नहीं भी होगा। वहुत जोर-जार लगाने से थोड़ा-सा निकल जायेगा, बाकी इधर-उधर मोटी (बड़ी) आँत में चिपटेगा, रूखेगा, सड़ेगा। बड़ी आँत मल में से पानी का हिस्सा सोखकर खून में देती है। बस उस सड़े हुए मल का अंश खून में जायेगा। और वह अंश जो वीमारी पैदा न करे तो कम ही समझिये।

अब खाने पर चलिए। रोज के खाने में क्या तत्त्व कम-ज्यादा है, इसका ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश आप नहीं करते सो तो है ही, बैठे-बिठाये मनमें आता है, आज जरा हलवा बन जाय, जरा मसालदार कचौड़ी बन जाय, जरा आलूदम बन जाय और क्या-क्या अला-बला बन जाय। 'कर दो किसी दोस्त की दावत, उसके बहाने भाँति-भाँति के खाने बना-बनाकर खाएँ, खिलाएँ।' यह सब मन का ही तो काम है।

सिनेमा गये। तङ्ग जगह में, गन्दे लोगों के साँस की वदबू से भरी हवा में घण्टों बैठे रहे। किसी का सिर न दुखता हो तो दुखने लगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

शतरञ्ज, ताश, चौपड़ में बैठ गये, रात के बारह बजा दिये, नींद पूरी नहीं हो पायी। शरीर तो जड़ है, जैसे मन से उसको चलाइयेगा, चलेगा, पतङ्ग अपने आप नहीं बढ़ेगा। डोर से उड़ाइयेगा तब उड़ेगा, जिधर घुमाइयेगा, घूमेगा। इसी प्रकार इस शरीर का कार-बार भी बहुधा मन के मार्फत ही चलता है। मन को सुधारिये, शरीर भी सुधरेगा। फिर ज्यों-त्यों शरीर सुधरता जायेगा, मन के अधिकाधिक सुधरने में उससे मदद मिलेगी। बिगड़ने की भी यही रीति है और सुधरने की भी। जाने और वापस आने का मार्ग एक ही है।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) मन को स्वस्थ रखने से शरीर को क्या लाभ है ?

(२) बीमार को दुष्ट क्यों कहा गया है ?

(३) शरीर का कार-बार मन की मार्फत चलता है—इसे सिद्ध करो।

व्याकरण—

निम्नलिखित शब्दों से भाववाचक संज्ञायें बनाओ—

आवश्यक, सम्भव, अनुभावक, प्रयत्नशील।

—oo:o:oo—

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२३) वीर बादल

रचयिता : श्री शरदेन्दु

परिचय--श्री शरदेन्दु हिन्दी के ख्यात कवि हैं। आप अभी नवयुवक हैं। फिर भी कवित्व की प्रतिभा आप में वर्त्तमान है। आपमें नवीनता भी है भाषा शुद्ध, मँजी हुई, प्रभावशाली और सरल है। आपकी रचनायें पत्र-पत्रिकाओं में बहुधा छपती रही हैं। आशा है, एक दिन आपका हिन्दी साहित्य में सम्मानित स्थान होगा। आप अलीगढ़ के निवासी हैं।

[**प्रसंग**—पद्मिनी की सुन्दरता का वर्णन सुनकर अलाउद्दीन ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की। लड़ते-लड़ते थक कर उसने सन्धि-प्रस्ताव किया और धोखे से राणा भीमसिंह को कैद कर लिया। राणा का उद्धार करने के लिए गोरा और बादल—दो वीरों ने युद्ध में जो अद्भुत पराक्रम दिखाया, वह इतिहास की अमर कहानी है। इस पाठ में बालक बादल की अद्भुत वीरता का वर्णन—ओजभरी भाषा में हुआ है।]

[१]

सावधान ! यह राजपूत की चमक रही तलवार यहाँ,
सावधान ! यह मातृभूमि-हित प्राणों का व्यापार यहाँ।
सावधान ! बिजली के छल का होता है प्रतिकार यहाँ,
सावधान ! अब यवन-सैन्य का होता है संहार यहाँ॥

[२]

गरज उठा बादल सा बादल, गूँज उठी उसकी ललकार,
वीर ! आज तुम पर ही माँ की रक्षा का अवलम्बित भार !
अरे तुम्हारे रहते क्या बढ़ सकते हैं यवनों के पाँव ?
बढ़ो, ध्यान रख इतना केवल लगे शत्रु का एक न दाँव॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[३]

'आज तुम्हारे घर में घुस, बैठा है तस्कर एक ससैन्य,
बोलो क्या सह लेने दोगे माँ को उससे यों दुखदैन्य ?
हुआ अपावन आज यवन के पैरों से पावन चित्तौर,
तुम्हें रक्त से अपने धोना है अपनी कालिख का ठौर ॥

[४]

'बढ़ो बढ़ो बैरी के दल में फैला दो ऐसा आतंक,
भाग उठे जिससे वह डरकर असफलता का ओढ़ कलंक।
देखो जननी के मस्तक पर लगा न देना कहीं कलंक,
विद्युत-सम पिल पड़ो शत्रु-सेना पर तुम होकर निश्शंक ॥

[५]

सावधान ! यह आज प्रलय का उठता है तूफान यहाँ,
सावधान ! यह सर्वनाश की घूम रही संतान यहाँ।
सावधान ! अब रणचंडी को मिलता है सम्मान यहाँ,
सावधान ! दिल्लीपति का हो रहा खर्व अभिमान यहाँ' ॥

[६]

मूर्तिमान वीरत्व बना यह तरुण घूमता रण में कौन ?
जिसकी आँखों में चिनगारी, पर अधरों पर वुद्‌वुद मौन।
जिसकी बंकिम भ्रू पर खिंचती शर्वनाश की वंकिम रेख,
जिसके मुख पर नाच रही है प्रतिशोधों की छाया एक ॥

[७]

जो फूलों से भी सुन्दर है किन्तु वज्र से अधिक कठोर,
जिसमें चपला की चंचलता, जिसमें घन का गर्जन घोर।
जिसका खड्‌ग कर रहा अविरल शत्रु-सैन्य का शोणित पान,
जिसके सम्मुख भूल गए हैं बैरी अपना सारा ज्ञान ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[८]

जिसके वारों से विचलित हो, रखकर निज कानों पर हाथ,
भाग उठी दिल्ली की सेना होकर निर्बल, दीन, अनाथ।
जिसके संमुख अड़ने वाले सुरपुर को कर गए प्रयाण,
अथवा भाग समर से ही वे बचा सके कायर निज प्राण॥

[९ [

कौन रोक सकता है उसको ? वह लहराता व्याल रहा,
कौन रोक सकता है उसको ? वह यवनों का काल रहा।
कौन रोक सकता है उसको ? वह प्रचण्ड भूचाल रहा,
कौन रोक सकता है उसको ? वह जननी का लाल रहा॥

[१०]

तरुण वीर, मैं करता हूँ अभिवादन तुमको शत-शत बार,
तुम से वीरों से ही मस्तक ऊँचा रख सकता संसार।
मातृ-भूमि के लिए दानकर तन, मन, धन सब कुछ सोल्लास,
लिखा रक्त से तुमने अपने युग का गौरव-मय इतिहास॥

जब तक जग के वक्ष-स्थल पर
खड़ा हुआ मानो चित्तौर,
कौन भुला सकता है तुमको
जग में वीरों के शिरमौर॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध–परीक्षा—

(१) बादल क्यों लड़ा ? किसके विरुद्ध अपनी सेना में वह साहस भर रहा है ?

(२) 'कौन सी कालिख की ठौर' वीरों को अपने रक्त से धोना है ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(३) तृतीय पद्य की व्याख्या करो।

(४) वीर बालक बादल किन कारणों से मूर्तिमान वीरत्व जान पड़ रहा था ? उस लड़ते हुए वीर बालक की वीरमूर्ति का वर्णन करो।

(५) सामने आने पर उसके विरोधियों की क्या अवस्था होती थी ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) नीचे लिखे शब्दों के अर्थ बताकर उतका वाक्यों में प्रयोग करो– वक्षस्थल, व्याल, तस्कर, प्रतिशोध, रणचंडी, बुद्‌बुद, अविरल।

(२) पद्य ६ में कौन अलंकार है ? 'गरज उठा बादल सा बादल' और 'चपला सी चंचलता' में कौन अलंकार है ?

(३) पद्य १० के प्रत्येक चरण में कितनी मात्राएँ हैं ?

---

(२४) सैनिक शिक्षा और उसकी आवश्यकता

(सम्पादकीय)

हमारा देश भारतवर्ष अब स्वतंत्र हो गया है। भारतीय संविधान-परिषद ने बड़े परिश्रम के साथ एक संविधान भी बनाया है, जिसके अनुसार २८ जनवरी सन् १९५० ई० से यह देश सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र प्रजातन्त्रात्मक गणतन्त्र राज्य घोषित कर दिया गया है !

पर हमारी स्वतंत्रता सच्ची स्वतंत्रता तभी होगी जब हम सब प्रकार से योग्य हो जायँ और अपनी इस स्वतंत्रता की रक्षा कर सकें। हमारी बुद्धि का, हमारी उत्पादन शक्ति का, हमारी वैज्ञानिक योग्यता का और हमारी सैनिक शक्ति का इतना विकास होना चाहिये कि संसार के अन्य विकसित राष्ट्रों की पंक्ति में हम समान भाव से बैठ सकें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब तक सब दिशाओं में हमारी सभी शक्तियों का और हमारे सभी गुणों का पूर्ण विकास नहीं होता तब तक हम अपनी पायी हुई स्वतंत्रता की रक्षा नहीं कर सकेंगे। अतः सभी प्रकार की उन्नति के कार्यों में और सभी प्रकार की विकास-योजनाओं में पूर्ण सहयोग देना और देश को समुन्नत तथा शक्तिशाली बनाने के लिए प्रयत्न करना आज भारत के प्रत्येक नागरिक का परम कर्त्तव्य है।

सभी प्रकार से देश को समुन्नत बनाने के अन्तर्गत आज यह भी आवश्यक हो गया है कि हमारे देश की सैनिक शक्ति सुदृढ़ हो। जलसेना, वायुसेना और स्थलसेना—तीनों प्रकार के सैनिक-बल का सुदृढ़ और शक्ति-सम्पन्न होना देश की सुरक्षा के लिए बड़ा आवश्यक हो गया है। आज हमारे दो पड़ोसी राष्ट्र—पाकिस्तान और लाल चीन—हमारी सीमा पर अपनी-अपनी सेनाओं को लेकर खड़े हैं। किसी भी समय युद्ध छिड़ जाने का खतरा बना हुआ है।

हमारी सैनिक शक्ति का बलशाली होना इसलिए आवश्यक नहीं है कि हम दूसरों के देश पर आक्रमण करके अपना साम्राज्य स्थापित करना चाहते हैं। भारतवर्ष का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस देश ने अपने पड़ोसी दुर्बल देशों को न तो कभी सताया ही है न उनके राज्य को छीनकर उस पर अपना अधिकार स्थापित करने का ही प्रयत्न किया है। सैनिक दृष्टि से हम अपने को बलशाली इसलिए बनाना चाहते हैं कि हम अपनी सुरक्षा कर सकें।

हमारी सेना इतनी बलवती होनी चाहिए कि हमारी ओर आँखे उठाकर कोई भी देश देख न सके। तभी हमारे देश की प्रतिष्ठा हो सकेगी। तभी हमारे देश में शान्ति का साम्राज्य बना रह सकेगा। जो असक्त होता है, निर्बल होता है न तो कोई उसकी बात सुनता है और न उसका आदर होता है। दूसरे तभी हमारी बात सुनते और मानते हैं जब वे जानते हैं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कि हम इनकी बात न मानेंगे तो ये हमसे अपनी बात अवश्य ही मनवा लेंगे।

आज संसार में चारों ओर संघर्ष और मनमुटाव फैला हुआ है। चारों ओर लड़ाई का वातावरण छाया हुआ है।

तोप में जैसे बारुद भरी हो, केवल आग लगाने की देरी हो, उसी प्रकार आज संसार की अवस्था है। चारों ओर तैयारियाँ हो रही हैं। किसी समय भी आग लग जा सकती है और महायुद्ध का विस्फोट हो सकता है। इस बार जब युद्ध छिड़ेगा तब भयानक विनाश होगा, क्योंकि परमाणु बम और हाइड्रोजन-बम आदि ऐसे-संहारक अस्त्र आज बन गए हैं, जिनके द्वारा देश का देश, महाद्वीप आदि तक क्षणमात्र में नष्ट किये जा सकते हैं। कुछ लोगों का तो यह भी कहना है कि हाइड्रोजन-बम से समूची पृथ्वी का भी नाश हो सकता है।

ऐसी परिस्थिति में भारत को भी ऐसा सबल बन जाना है कि वह अपनी सुरक्षा कर सके। युद्ध से तटस्थ रह कर इस आग को बुझाने में वह समर्थ हो सके। युद्ध से तटस्थ वही राष्ट्र रह सकता है जो बलशाली हो। जो देश दुर्बल होगा वह न तो तटस्थ रह सकता है और न युद्ध को रोकने में ही समर्थ हो सकता है।

अतः आज हमें अपनी सैनिक शक्ति बढ़ानी है। भारत केवल ज्ञानियों और सन्त महात्माओं का ही देश नहीं है। इस देश में अनेक वीराङ्गनाएं और वीर भी हो चुके हैं। जगद्विजेता सिकन्दर सब देशों को जीतता हुआ भारत आया। पर यहाँ की वीरता देखकर उसे आगे बढ़ने का साहस न हुआ।

इसी देश में राम और हनुमान जैसे महावीर हो चुके हैं। इस देश में भीष्म और द्रोणाचार्य, परशुराम और अश्वत्थामा, भीम और

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अर्जुन आदि हुए हैं। इस देश के दुष्यन्त और पुरूरवा से उस समय देवता भी सहायता माँगते थे जब दैत्यों के आगे उनकी दैवी शक्ति बेकार हो जाती थी।

चन्द्रगुप्त मौर्य और पुष्यमित्र शुङ्, समुद्रगुप्त और हर्षवर्धन, यशोवर्मा और पुलकेशिन् जैसे वीर इस भारतभूमि में जन्म ले चुके हैं। मुंज और भोजराज, पृथ्वीराज और बाप्पा रावल, गोरा और बादल आज भी इतिहास में अमर हैं। महाराणा प्रताप और शिवाजी, दुर्गादास और अमरसिंह की वीरताभरी कहानियाँ हम आज भी पढ़ते हैं। रानी दुर्गावती और कलावती, ताराबाई और महारानी लक्ष्मीबाई के समान वीरांगनाओं का नाम आज भी लेकर हम अपने को धन्य समझते हैं।

आधुनिक युग में भी दो महायुद्धों में भारतीय सैनिकों ने जो वीरता दिखाई उसे सारा संसार जानता है। गत चीनी युद्ध में भी युद्ध-साधन से रहित भारत के जवानों ने अद्भुत शौर्य प्रकट किया। १९६५ की पाकिस्तानी लड़ाई में हमारे वीर जवानों ने जिस साहस, शौर्य, पराक्रम और देशभक्ति को प्रदर्शित किया, वह भारतीय वीरता की अमर कहानी है।

काश्मीर में पाकिस्तानी लुटेरे घुस आए थे। वहाँ उन लुटेरों ने बड़े-बढ़े भीषण और अमानुषिक अत्याचार, लूटमार, स्त्रियों को चुराना आदि अनेक लज्जाजनक कार्य करना आरम्भ कर दिया था। इस देश की वायुसेना अपने प्राणों को खतरे में डालकर वहां पहुँची, क्योंकि उस समय दूसरे सब रास्ते बन्द थे। कश्मीर जाने का मार्ग पाकिस्तान से होकर था। अतः वायुयानों द्वारा वीरों की सेना वहाँ भेजी गई और उन्हें पीछे हटाना प्रारम्भ किया। कुछ ही दिनों में कश्मीर के दो-तिहाई भूभाग से उन लुटेरों को इस सेना की वीरता ने मार भगाया। इसी प्रकार हैदराबाद में भी रजाकारों का अत्याचार होने पर भारत की सशस्त्र सैनिक पुलिस वहाँ जा

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पहुँची थी। सन् ६२ में चोनी और सन् ६५ में पाकिस्तानी आक्रमण होने पर भारतीय सेना ने अद्‌भुत वीरता दिखाई थी।

कहने का तात्पर्य यह है कि हमारे देश में आज भी वीरों और वीरांगनाओं की कमी नहीं है। इस देश के वीरों को विदेशी शासन पूरा अवसर नहीं देता था। किन्तु आज अपने देश में अपना राज है और राष्ट्र की अपनी सेना है। हमारे देश की समस्त सेना के प्रथम प्रधान सेनापति जेनरल करियप्पा नाम के भारतीय रह चुके हैं। वे बड़े योग्य और सेना-सम्बन्धी बातों के बड़े ज्ञाता रहे हैं। वे वीर, देशप्रेमी और देश की उन्नति चाहने वाले भी थे। उनकी संरक्षता में हमारे देश की स्वतन्त्र सरकार द्वारा सेना की शक्ति बढ़ाने के प्रयत्न का श्रीगणेश हुआ था और उसका कार्यक्रम निरंतर आगे बढ़ रहा है।

आज यह आवश्यक है कि देश का प्रत्येक व्यक्ति, चाहे वह सेनाविभाग में हो या न हो, सैनिक-शिक्षा पावे। सभी को युद्धविद्या आनी चाहिए। जो सैनिक नहीं हैं, केवल नागरिक ही हैं, वे भी सैनिक शिक्षा प्राप्त कर लें जिससे कि जब आवश्यकता पड़े तब देश की सुरक्षा, प्रतिष्ठा और सम्मान-रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति देने में वे समर्थ हो सकें।

अतः सरकार सब को सैनिक शिक्षा दिलाने के लिए प्रयत्नशील है। पुरुषों को ही नहीं स्त्रियों को भी सैनिक शिक्षा दी जा रही है। इस देश की हजारों वीर युवतियां आज सैनिक शिक्षा पा रही हैं। उनकी वीरता और योग्यता देखकर, सेना-कार्यों में उनकी कुशलता देखकर आश्चर्य-चकित हो जाना पड़ता है।

हम लोगों का—चाहे हम विद्यार्थी हों या अध्यापक अथवा और कोई—यह परम कर्त्तव्य है कि हम सैनिक शिक्षा अवश्य प्राप्त कर लें। अधिक से अधिक संख्या में नौसेना, वायुसेना और स्थलसेना में हमें सम्मिलित होना चाहिए। यदि सेना में न भी जाना चाहते हों तो भी सैनिक शिक्षा पाकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसा तो हमें अवश्य ही हो जाना चाहिए कि आवश्यकता पड़ने पर सेना में अपना नाम लिखा कर देशहित में अपने को लगा सकें।

हमारे देश के राज्यों में भी इसी उद्देश्य से अनेक संघटन स्थापित किये गये हैं। प्रदेश में भी रक्षा-कार्य में निपुण सैनिक बनाये जा रहे हैं। इसमें हमें भी यथाशक्ति सहयोग देना चाहिए और इसके द्वारा सैनिक शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। सैनिक बल की दृढ़ता पर ही हमारे देश का भविष्य बहुत कुछ निर्भर है। अतः इस महान् कार्य में हमें पूर्ण योग देना चाहिये। तभी हम भारत के सच्चे सपूत कहलाने के अधिकारी हो सकेंगे।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) हमारी स्वतन्त्रता कब सच्ची स्वतन्त्रता होगी ?

(२) कैसे हम इसकी प्रतिष्ठा बनाये रख सकते हैं ?

(३) सैनिक बल कितने प्रकार के होते हैं ?

(४) हम देश को बलशाली क्यों बनाना चाहते हैं ?

(५) आज संसार की कैसी अवस्था है ?

(६) भारत में कैसे-कैसे वीर हो चुके हैं ?

(७) आधुनिक युग में भारतीय-सेना ने कब-कब अपना शौर्य दिखाया है ?

(८) कश्मीर और हैदराबाद में भारतीय जवानों ने क्या किया ?

(९) देश की सैनिक शक्ति बढ़ाने के लिए हमारा क्या कर्तव्य है ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) नीचे लिखे शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करो—विकास-योजना, श्रीगणेश, वायुसेना, वातावरण, आहुति, यथाशक्ति, रक्षा-कार्य। (२) ऊपर के पाँच शब्दों में समास बताओ और विग्रह करो। (३) भारत के जिन वीरों के नाम निबन्ध में आये हैं उनमें से दो के विषय में विस्तृत वर्णन करो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२५) वन-पथ में राम

रचयिता : महात्मा तुलसीदास

कवि-परिचय—यह अंश रामायण का है—जिसका नाम 'रामचरित-मानस' है। मुगलकालीन भारत में गोस्वामी तुलसीदास ने इस अमर-महाकव्य का निर्माण किया। आज वे जगद्विख्यात कवि हैं। गोस्वामीजी राम के बहुत बड़े और अनन्य भक्त थे। भगवान् रामचन्द्र की कथा को लेकर उन्होंने अवधी भाषा में 'रामचरितमानस' की रचना की है। इसके अतिरिक्त 'गीतावली', 'दोहावली', 'विनयपत्रिका' आदि भी उनकी अनेक प्रसिद्ध रचनायें हैं। हिन्दीसाहित्य के इतिहास में गोस्वामीजी का स्थान अद्वितीय है। उनका 'रामचरितमानस' विश्वप्रसिद्ध और लोक-प्रिय ग्रन्थ है।

पुनि सिय राम लखन कर जोरी। जमुनहिं कीन्ह प्रनामु बहोरी॥
चले स-सीय मुदित दोउ भाई। रवि-तनुजा कँह करत बड़ाई॥
पथिक अनेक मिलहिं मग जाता। कहहिं सप्रेम देखि दोउ भ्राता॥
राम-लखन सब अङ्ग तुम्हारे। देखि सोगु अति हृदय हमारे॥
मारग चलहु पयादेहि पाएँ। ज्योतिष झूठ हमारे भाएँ॥
अगम पंथु गिरि-कानन भारी। तेहि मँह साथ नारि सुकुमारी॥
करि केहरि बन जाइ न जोई। हम सँग चलहिं, जो आयसु होई॥
जाब जहाँ लगि तहँ पहुँचाई। फिरब बहोरि तुम्हहिं सिरु नाई॥

दो०—एहि बिधि पूँछहिं प्रेम-बस, पुलक गात जलु नैन।
कृपासिंधु फेरहिं तिन्हहिं, कहि बिनीत मृदु बैन॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

'रामचरितमानस' के रचयिता

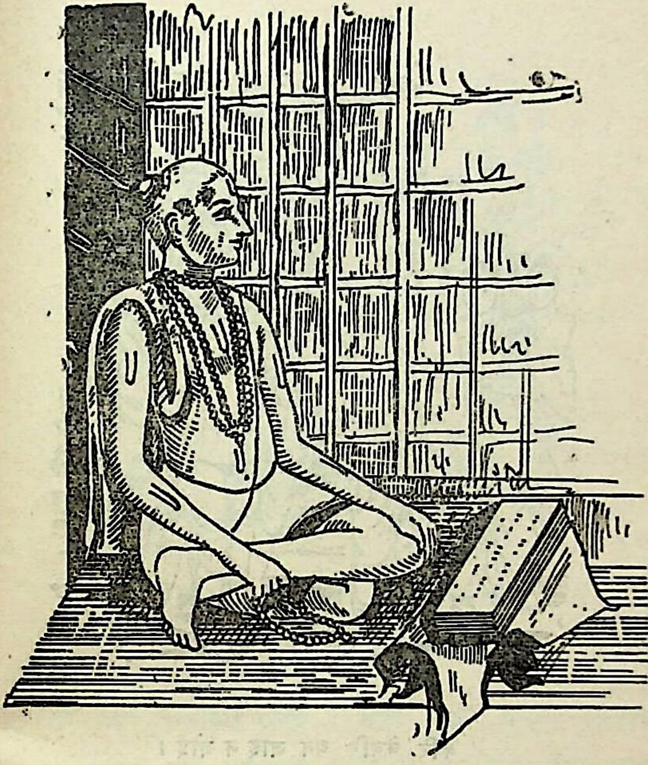

महात्मा तुलसीदास

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भगवान के प्रति पथिकों का प्रेम

करि केहरि वन जाइ न जोई ।
हम सँग चलहिं जो आयसु होई ।।

जे पुर गाँव बसहिं मग माहीं । तिन्हहिं नाग-सुर-नगर सिहाहीं ।।
केहि सुकृती केहि घरी बसाए । धन्य पुन्यमय परम सुहाए ।।
जहँ जहँ राम चरन चलि जाहीं । तिन्ह समान अमरावति नाहीं ।।
पुन्य-पुंज मग-निकट-निवासी । तिन्हहिं सराहहिं सुरपुरबासी ।।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

वन-पथ में चलते हुए

सीय राम पद अंक वरायें।
लखन चलहिं मगु दाहिन वायें ॥

जे भरि नयन बिलोकहिं रामहिं । सीता लखन सहित घनस्यामहिं ॥
जे सर, सरित, राम अवगाहहिं । तिन्हहिं देव सर सरित सराहहिं ॥
जेहिं तरु तर प्रभु बैठहिं जाई । करहिं कलपतरु तासु बड़ाई ॥
परसि राम पद पदुम परागा । मानति भूमि भूरि निज भागा ॥

दो०—छाँह करहिं घन बिबुधगन, बरसहिं सुमन सिहाहिं ।
देखत गिरि, वन, बिहग, मृग, राम चले मग जाहिं ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सीता-लखन-सहित रघुराई । गाँव-निकट जब निकसहिं जाई ॥
सुनि सब बाल वृद्ध नर नारी । चलहिं तुरत गृहकाजु विसारी ॥
राम-लखन-सिय रूप निहारी । पाइ नयन फलु होहिं सुखारी ॥
सजल विलोचन पुलक सरीरा । सब भए मगन देखि दोऊ बीरा ॥
बरनि न जाइ दसा तिन्ह केरि । लहि जनु रंकन्ह सुरमनि ढेरी ॥
एकन्ह एक बोलि सिख देहीं । लोचन-लाहु लेहु छन एहीं ॥
रामहिं देखि एक अनुरागे । चितवल चले जाहिं संग लागे ॥
एक नयन-मग छबि उर आनी । होहिं सिथिल, तन, मन, बर बानी ॥

दो०—एक देखि बट छाँह भलि, डासि मृदुल तृन पात ।
कहहि गवाँइअ छिनकु स्रमु, गवनव अबहिं कि प्रात ॥

एक कलस भरि आनहिं पानीं । अंचइय नाथ, कहहिं मृदु बानी ।
सुनि प्रिय बचन प्रीति अति देखी । राम कृपाल सुसील त्रिसेखी ॥
जानि स्रमित सीतहिं मन माही । घरिक विलंबु कीन्ह बट छाहीं ॥
मुदित नारि-नर देखहिं सोभा । रूप अनूप नयन मनु लोभा ॥
एक टक सब देखहिं चहुं ओरा । रामचन्द्र मुख-चन्द-चकोरा ॥
तरुन-तमाल-बरन तनु सोहा । देखत कोटि-मदन-मनु मोहा ॥
दामिनि बरन लखन सुठि नीके । नख सिख सुभग भावते जी के ॥
मुनिपट कटिन्ह कसे तूनीरा । सोहहिं कर-कमलनि धनु तीरा ॥

दो०—जटा-मुकुट सीसनि सुभग, उर भुज नयन बिसाल ।
सरद-परब-विधु-बदन बर, लसत स्वेद-कन जाल ॥

बरनि न जाइ मनोहर जोरी । सोभा बहुत थोरि मति मोरी ॥
राम लखन सिय सुन्दरताई । सब चितवहिं चित मन मति लाई ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

थके नारि नर प्रेम पियासे । मनहुँ मृगी मृग देखि दियासे ॥
सीय समीप ग्रामतिय जाहीं । पूछत अति सनेह सकुचाहीं ॥
बार बार सब लागहिं पाएँ । कहहिं बचन मृदु सरल सुभाएँ ॥
राजकुमारि बिनय हम करहीं । तिय सुभायँ कछु पूछत डरहीं ॥
स्वामिनि अबिनय छमबि हमारी । बिलगु न मानब जानि गवाँरी ॥
राजकुअँर दोउ सहज सलोने । इन्हतें लहि दुति मरकत सोने ॥

दो॰—स्यामल गौर किसोर बर सुन्दर सुखमा ऐन ।
सरद-सर्बरीनाथ मुखु, सरद सरोरुह नैन ॥

कोटि मनोज लजावनि हारे । सुमुखि कहहु, को आहिं तुम्हारे ॥
सुनि सनेहमय मंजुल बानी । सकुची, सिय, मन महुँ मुसुकानी ॥
तिन्हहिं बिलोकि बिलोकति घरनी । दुहुँ सकोच सकुचति बरबरनी ॥
सकुचि सप्रेम बाल-मृगनयनी । बोली मधुर बचन पिकबयनी ॥
सहज सुभाय सुभग तन गोरे । नामु लखनु लघु देवर मोरे ॥
बहुरि बदनु-बिधु अञ्चल ढाँकी । पिय तन चितइ भौंह करि बाँकी ॥
खञ्जन-मंजु तिरीछे नयननि । निजपति कहेउ तिन्हहिं सिय सयननि ॥
भईं मुदित सब ग्राम बधूटी । रंकन्ह राय रासि जनु लूटी ॥

दो॰—अति सप्रेम सिय पायँ परि, बहुबिधि देहिं असीस ।
सदा सोहागिनि होहु तुम्ह, जब लगि महि अहि सीस ॥

पारबती सम पतिप्रिय होहू । देवि न हमपर छाँड़ब छोहू ॥
पुनि पुनि बिनय करिअ कर जोरी । जौं एहि मारग फिरब बहोरी ॥
दरसनु देब जानि निज दासी । लखी सीयँ सब प्रेम पियासी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

मधुरं वचन कहि कहि परतोषी। जनु कुमुदिनी कौमुदी पोषी॥
तबहिं लखन रघुवर रुख जानी। पूंछेउ मगु लोगन्हि मृदु बानी॥
सुनत नारि नर भए दुखारी। पुलकित गात बिलोचन वारी॥
मिटा मोदु मन भए मलीनें। निधि विधि दीन्ह लेत जनु छीनें॥
समुझि करम-गति धीरजु कीन्हा। सोधि सुगम मगु तिन्ह कहि दीन्हा॥

दो०—लखन जानकी सहित तब, गवन कीन्ह रघुनाथ।
फेरे सब प्रिय वचन कहि, लिए लाइ मन साथ॥

फिरत नारि नर अति पछिताहीं। दैवहिं दोषु देहिं मन माहीं॥
सहित विषाद परस्पर कहहीं। विधि करतब उलटे सब अहहीं॥
निपट निरंकुस निठुर निसंकू। जेहि ससि कीन्ह सरुज सकलंकू॥
रूख कलपतरू, सागरु खारा। तेंहि पठए वन राजकुमारा॥
जौ पै इन्हहिं दीन्ह वनवासू। कीन्ह बादि विधि भोग बिलासू॥
ए विचरहिं मग विनु पदत्राना। रचे बादि विधि बाहन नाना॥
ए महि परहिं डास कुसपाता। सुभग सेज कत सृजत बिधाता॥
तरुतर वास इन्हहिं विधि दीन्हा। धवलधाम रचि-रचि स्रमु कीन्हा॥

दो०—जौ ए मुनिपट धर जटिल, सुन्दर सुठि सुकुमार।
विविध भाँति भूषन वसन, बादि किये करतार॥

जौं ए कन्द मूल फल खाहीं। बादि सुवादि असन जग माहीं॥
एक कहहिं ए सहज सुहाए। आपु प्रकट भए, विधि न बनाए॥
जहँ लगि वेद कही बिधि करनी। श्रवन नयन मन गोचर बरनी॥
देखहु खोजि भुवन दस चारी। कहँ अस पुरुष, कहाँ असि नारी॥
इन्हहिं देखि बिधि मनु अनुरागा। पटतर जोग बनावै लागा॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कीन्ह बहुत श्रम एक न आए। तेहिं इरिषा बन आनि दुराए॥
एक कहहिं हम बहुत न जानहिं। आपहिं परम धन्य कर मानहिं॥
ते पुनि पुन्य पुंज हम लेखे। जे देखहिं देखिहहिं जिन्ह देखे॥

दो०—एहि विधि कहि कहि बचन प्रिय, लेहिं नयन भरि नीर।
किमि चलहहिं मारग अगम, सुठि सुकुमार सरीर॥

नारि सनेह बिकल बस होहीं। चकई साँझ समय जनु सोहीं॥
मृदुपद-कमल कठिन मगु जानी। गहवरि हृदय कहहिं बरबानी॥
परसत मृदुल चरन अरुनारे। सकुचति महि जिमि हृदय हमारे॥
जौं जगदीस इन्हहि वनु दीन्हा। कस न सुमनमय मारगु कीन्हा॥
जौ माँगा पाइअ विधि पाहीं। ए रखिअहिं सखि आंखिन्ह माहीं॥
जे नर नारि न अवसर आए। तिन्ह सिय-रामु न देखन पाए॥
सुनि सरूप बूझहिं अकुलाई। अब लगि गए कहाँ लगि भाई॥
समरथ धाइ बिलोकहि जाई। प्रमुदित फिरहिं जनम फलु पाई॥

दो०—अबला बालक वृद्ध जन, कर मीजहि पछिताहिं।
होहिं प्रेमबस लोग इमि, राम जहाँ जहँ जाहिं॥

गाँव गाँव अस होइ अनन्दू। देखि भानुकुल कैरव चंदू॥
जे कछु समाचारि सुनि पावहिं। ते नृप रानिहि दोसु लगावहिं॥
कहहिं एक अति भल नरनाहू। दीन्ह हमहिं जोइ लोचन लाहू॥
कहहिं परस्पर लोग लोगाई। बातें सरल सनेह सुहाई॥
ते पितु मातु धन्य जिन्ह जाए। धन्य सो नगरु जहाँ तें आए॥
धन्य सो देसु सैल वन गाऊँ। जहँ जहँ जाहिं धन्य सोइ ठाऊँ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सुखु पायउ बिरंचि रचि तेही। ए जेहि के सब भांति सनेही ॥
रास लखन पथिकथा सुहाई। रही सकल मग कानन छाई ॥

दो०—एहि विधि रघुकुल कमल रवि, मग लोगन्ह सुख देत।
जाहिं चले देखत बिपिन, सिय सौमित्रि समेत ॥

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) राम को वन-मार्ग में देख कर पथिकों के हृदय में क्यों दुःख होता है ? वे ज्योतिष को झूठा क्यों समझते हैं ? (२) संग चलने के लिए उनका वहाना, उनके हृदय के किस भाव को सूचित करता है ? (३) जिस मार्ग से राम आदि जाते हैं वहाँ के तालाव, नदी, धूल, पेड़ आदि से—क्यों देवलोक, नागलोक आदि सिहाते हैं ? (४) राम आदि को देखकर ग्रामवासी आपस में क्या वातें करते हैं ? तरह-तरह की वातों के वहाने ग्रामीण नर-नारी राम आदि को क्यों रोकना चाहते हैं ? (५) ग्राम-वंधुओं ने सीता के पास जाकर किस प्रकार राम-लक्ष्मण के बारे में प्रश्न किया और सीता ने कैसे उत्तर दिया, इसका वर्णन करो। (६) सीता के प्रति उनकी शुभ-कामना—हृदय के किन भावों को प्रकट करती है ? (७) दैव को दोष देना ग्रामीणों के किस भाव का सूचक है ? (८) रामरुख पाकर लक्ष्मण के राह पूछने से ग्रामवासी क्यों दुःखी हुए ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) वनयात्रा में राम-लक्ष्मण-सीता को रास्ते में देखकर ग्रामवासी नर-नारियों के हृदय में कौन-कौन से भाव उठे और कैसे प्रकट हुए, इसका वर्णन करो। निम्नलिखित अंशों में अलंकार बताओ—(क) तरुन-तमाल वरन– (ख) रामचन्द्र-मुखचन्द्र-चकोरा, (ग) दामिनि-बरन, (घ) सरद परव-विधुवदन, (ङ) थके नारि-नर······देखि दियासे, (च) सरद-सरोरुहनैन, (छ) पिक-वयनी, (ज) भई मुदित······जनु लूटीं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२६) हमारे प्रान्त के छोटे उद्योग-धन्धे

लेखक : श्री रामनाथ 'सुमन'

हमारा प्रान्त, जिसे प्रजातन्त्र के नवीन विधान में उत्तर प्रदेश नाम दिया गया है, बहुत प्राचीन काल से भारत के हृदय के समान रहा है। इसी प्रान्त में राम-कृष्ण के अवतार हुए, इसी प्रदेश में बुद्ध नें अपने धर्म का उपदेश दिया। यहीं वह गङ्गा-यमुना हैं जिन्होंने माता की तरह अनादि काल से हमारा पालन-पोषण किया है तथा हमें एक ऊँचे आदर्श की ओर बढ़नें का बल दिया है। काशी, प्रयाग, अयोध्या, मथुरा, वृन्दावन और हरद्वार जैसे तीर्थ यहाँ हैं। संसार में अपने सौन्दर्य और निर्माण-कला के लिए विख्यात ताजमहल यहीं है। सचमुच, भारतीय होने का हमें गर्व होना चाहिए और इस प्रान्त में पैदा होने के लिए ईश्वर का कृतज्ञ।

यह प्रान्त कृषि के लिए प्रसिद्ध है। इस प्रदेश में सभी प्रकार के अन्न (गेहूँ, जौ, चावल, चना, मक्का, बाजरा आदि), सभी प्रकार के फल और प्रायः सब तरह की तरकारियाँ उत्पन्न होती हैं। पर कृषि के साथ अनेक प्रकार के उद्योग-धन्धों के लिए भी यह प्रदेश बहुत पुरानें जमाने से विख्यात है। प्राचीन काल में अधिकांश नगर नदियों के किनारे बसते थे और इन नगरों में अनेक प्रकार के उद्योग-धन्धे चलते थे। किसी जमाने में हथियारों, सिक्कों, गोला-बारूद बनाने में यह प्रदेश बहुत आगे था। रेशमी, ऊनी और सूती वस्त्र, मोती सोने, मणियों के व्यवसाय का केन्द्र था।

आज भी सूती कपड़ों के विषय में हमारा प्रान्त बहुतेरे प्रान्तों से आगे है। कानपुर में तो कपड़े की बहुत-सी मिलें हैं जिनमें १५ काफी बड़ी हैं और इनमें लगभग ७५ हजार आदमी काम करते हैं। आगरा, गोरखपुर, हाथरस, मऊ, वाराणसी आदि में भी अनेक कारखाने हैं। इनके अतिरिक्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बहुत से स्थानों में हाथ के सूत से बने कपड़े हाथ-करघे पर बुने जाते हैं। कुछ कस्बों में मिल के सूत से हाथ-करघे पर कपड़े तैयार किये जाते हैं। जूट के भी—जिससे रस्सियाँ और बोरे बनाये जाते हैं—तीन कारखाने हैं—दो कानपुर, एक गोरखपुर में। मेरठ, मुजफ्फरनगर, अल्मोड़ा, मिर्जापुर और इलाहाबाद में कम्बल के कारखाने हैं। भदोही और मिर्जापुर में कालीन बहुत अच्छे बनते हैं और विदेशों तक जाते हैं। वाराणसी के रेशमी बनारसी कपड़े अब तक भी विख्यात हैं।

चीनी के उद्यान में हम सबसे आगे हैं। सारे देश में जितनी चीनी बनती है उसकी लगभग दो तिहाई हमारे यहाँ बनती हैं। गोरखपुर, देवरिया, बस्ती जौनपुर, इलाहाबाद, गोंड़ा, बरेली, बाराबंकी, बिजनौर, कानपुर, मेरठ इत्यादि में शक्कर के कारखानों की भरमार हो गई है।

सहारनपुर में सिगरेट का एक बड़ा कारखाना है। बरेली जिले में दियासलाई का बहुत बड़ा कारखाना है। कानपुर और आगरा में गैस के कारखाने हैं। गाजियाबाद, बेगमाबाद, मोदीनगर, कानपुर आदि में वनस्पति तेल के (जिसे गलती से लोग घी कहते हैं) कई कारखाने हैं। सहारनपुर और लखनऊ में कागज की मिलें हैं। मेरठ और सहारनपुर में दफ्ती भी बनती है। फिरोजाबाद (आगरा) का चूड़ियों का कारबार प्रसिद्ध है। आगरा, भजोई, मैनपुरी, इलाहाबाद वाराणसी में शीशे या काँच के बर्तन बड़े पैमाने पर बनाये जाते हैं।

मिर्जापुर, वाराणसी और मुरादाबाद—अपने पीतल के बर्तनों के लिये प्रसिद्ध हैं। वाराणसी, इलाहाबाद, कानपुर इत्यादि में तेल की बड़ी-बड़ी मिलें हैं। जौनपुर और कन्नौज—इत्र तथा सुगन्धित तैलों के लिए बहुत पुराने ज़माने से प्रसिद्ध रहे हैं।

इनके अतिरिक्त और भी बहुत तरह के छोटे उद्योग-धन्धे (जैसे मिट्टी के बर्तन, खिलौने, चाँदी का काम, लकड़ी चीरने का काम, लकड़ी के खिलौने आदि) इस प्रांत में पाये जाते हैं। अब जब हमारा देश स्वतंत्र है

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और जनता की सरकार के हाथ में शासन है, हमें नए-नए उद्योग-धन्धे खोलकर और जो पुराने चल रहे हैं, उनकी उन्नति करके अपने प्रांत का विकास करना चाहिए।

अभ्यास

(१) हमारे प्रांत को भारत का हृदय क्यों माना जाता है ?
(२) यहाँ की बड़ी-बड़ी नदियों और तीर्थों के नाम बताओ।
(३) प्राचीन काल में यह प्रदेश किन उद्योगों के लिए प्रसिद्ध था।
(४) आज हमारे प्रांत में पाए जाने वाले मुख्य उद्योग-धन्धों के नाम लिखो।
(५) अन्तिम पैरा में आए हुए सर्वनाम और अव्यय बताओ।

(२७) वीरों का वसन्त

कवयित्री : स्व० श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान

परिचय—स्वर्गीया श्रीमती सुभद्राकुमारी चौहान हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री थीं। उनकी कविता में हृदय को प्रभावित करने की स्वाभाविक शक्ति है। भाषा और शैली में सरलता और स्पष्टता है। राष्ट्रीय भावों की कविता लिखने में उन्हें विशेष सफलता मिली है। बालोपयोगी और वीर की उनकी रचना बड़ी मर्मस्पर्शिनी होती थी। 'झाँसी वाली रानी', शीर्षक इनकी कविता बहुत प्रसिद्ध हुई। कहानियों के भी इनके अनेक संग्रह छपे हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

[१]

वीरों का कैसा हो वसन्त ?
आ रही हिमाञ्चल से पुकार,
है उदधि गरजता वार-वार,
प्राची पश्चिम, भू-नभ अपार,
सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

[२]

फूली सरसों ने दिया रङ्ग,
मधु लेकर आ पहुँचा अनङ्ग,
वसु-वसुधा पुलकित अङ्ग-अङ्ग,
हैं वीर वेश में—किन्तु कन्त ?
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

[३]

भर रही कोकिला इधर तान,
मारू वाजे पर उधर गान,
है रङ्ग और रण का विधान,
मिलने आये हैं आदि अन्त।
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

[४]

गलबाँहें हों, या हो कृपाण,
चल चितवन हो या धनुष-वाण,
हो रस-विलास या दलित-त्राण,
अब यही समस्या है दुरन्त,
वीरों का कैसा हो वसन्त ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जीत और बदले का खून उतरा हुआ है, उसकी दृष्टि का धुँधली हो जाना स्वाभाविक ही है।

मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि एक न एक दिन सारी दुनियाँ की एक मिली-जुली सरकार अवश्य बनेगी क्योंकि उसके सिवा मानवता की इस बीमारी और पागलपन का और कोई इलाज नहीं है। एक प्रकार से यह संघराज्य के सिद्धान्त का बड़े पैमाने पर प्रयोग ही है, जिसमें हर राष्ट्रीय इकाई को अपनी प्रतिभा और साधनों के अनुसार हर तरह से अपनी उन्नति करने की पूरी स्वतंत्रता होगी, पर केवल उसे विश्व-सरकार के आधारभूत सिद्धान्त को ईमानदारी से मानना होगा।

हम लोग प्रायः व्यक्ति और राष्ट्र के अधिकारों की चर्चा करते हैं। पर हमें यह भी याद रखना चाहिए कि प्रत्येक अधिकार के पीछे एक कर्तव्य भी हुआ करता है। अब तक हम लोगों ने अधिकारों पर जितना जोर दिया है, उसकी तुलना में कर्त्तव्यों पर उचित ध्यान दें तो अधिकार अपने-आप हमें मिल जायँगे। जीवन का यह मार्ग आज की एक दूसरे से होड़ करने और संचय कर रखने की वृत्ति से सर्वथा भिन्न है।

आज हम सबके सिर पर भय का भूत सवार है—भविष्य का भय, युद्ध का भय, उन देशों का भय जिन्हें हम पसन्द नहीं करते और जो हमें पसन्द नहीं करते। किसी सीमा तक यह भय, शायद उचित हो। पर यह एक ऐसी नीची मनोभावना है जो खूँखार लड़ाइयों को जन्म देती है। इसलिए हम सब को मिलकर भय की इस घातक भावना से छुटकारा पाने और अपने विचारों और कार्यों को नैतिकता और औचित्य के सिद्धान्त पर ढालने की पूरी-पूरी चेष्टा करनी चाहिए! इसी तरह धीरे-धीरे शायद हम मानवता के इस संकट का हल निकाल सकें और जिन काले बादलों ने आज हमें घेर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

रखा है—वे हटें और हर व्यक्ति और राष्ट्र की पूरी स्वतंत्रता पर आधारित दुनियाँ की मिली-जुली व्यवस्था का कोई रास्ता निकल आए ।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) आज मानवता के सामने सबसे बड़ा क्या संकट है ?

(२) युद्ध का रास्ता क्यों बुरा है ?

(३) संसार में हजारों वर्षों से क्यों युद्ध होते आ रहे हैं ? तब भी झगड़ों का अन्त क्यों नहीं होता ? ऐसी अवस्था में क्या युद्ध अव्यावहारिक नहीं है ?

(४) जवाहरलाल जी के विषय में तुम क्या जानते हो ?

(५) इस लेख के लेखक ने दुनियाँ में शान्ति स्थापित करने का क्या मार्ग बताया है ?

(६) अन्तिम वाक्य का वाक्य-विश्लेषण करो ।

(३१) वीरांगना लक्ष्मीबाई

लेखक : श्री रामनाथ 'सुमन'

जिन लोगों ने अन्धकार की घड़ियों में हमारे देश को विदेशी जूए से मुक्त करने का प्रयत्न किया और उसी प्रयत्न में वीरतापूर्वक प्राणोत्सर्ग किया, उनमें झाँसी की रानी वीरांगना लक्ष्मीबाई का स्थान बहुत ऊँचा है । न केवल वीरता में, बल्कि आत्मसंयम, उदारता, सहानुभूति और रण-कौशल में उनकी समता करने वाले थोड़े ही व्यक्ति भारत के उत्तर काल के इतिहास में मिलेंगे ।

अंग्रेजों की कूटनीति भारत में सफल हो रही थी । एक के बाद एक राज्य अंग्रेजों के हाथ में चले जा रहे थे । १८१८ ई० में पेशवाओं की भी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कमर टूट चुकी थी और अन्तिम पेशवा बाजीराव को आठ लाख रुपये वार्षिक की पेंशन दे दी गई थी। वे कानपुर के समीप बिठूर में रहने लगे।

पेशवाओं की प्रभुता का अन्त होने पर बाजीराव द्वितीय के भाई चिमाजी आपा साहब काशी चले आए। आपा साहब के कृपापात्र मोरोपंत नाम के एक ब्राह्मण थे। वे भी चिमाजी आपा साहब के साथ काशी आए। वहीं उनकी पत्नी भागीरथी बाई के गर्भ से कार्तिक कृष्ण १४ संवत् १८९२ वि० (१६ नवम्बर १८३५ ई०) को एक रूपवती और तेजस्विनी कन्या का जन्म हुआ। उसका नाम मनूबाई रखा गया।

जब चिमाजी की मृत्यु हो गई तो निराश्रय होकर मेरोपन्त अपने स्वामी के भाई बाजीराव के पास बिठूर चले गए। जब मनू तीन-चार वर्ष की थी तभी माँ का देहान्त हो गया। फलतः पिता के साथ ही उसको सदा रहना पड़ता था पुरुषों के बीच रहने से उसमें निर्भीकता और वीरता के भाव विकसित होते गए।

माता की मृत्यु के उपरान्त मनू को पिता का प्रेम तो अशेष मात्रा में मिला ही, बाजीराव का भी स्नेह उसे प्राप्त हुआ। बाजीराव के दो दत्तक पुत्र थे--नानासाहब और रावसाहब। उनके साथ ही वह खेलती और पढ़ती लिखती थी। मनूबाई बचपन से तेजस्विनी थी। व्यायाम, अश्वारोहण, मल्ल-युद्ध, अस्त्र-शस्त्र संचालन में उसका खूब मन लगता था और बहुत शीघ्र उसने इन विद्याओं में दक्षता प्राप्त कर ली। उसकी विद्या-बुद्धि, उसकी रण-कुशलता, परिश्रम, संयम देखकर सब लोग यह समझते थे कि भविष्य में वह प्रसिद्धि प्राप्त करेगी।

उस समय बिठूर क्रान्तिकारी शक्तियों का एक केन्द्र बन गया था। जो लोग भारत की स्वतंत्रता के विनाश से दुखी थे वे तीर्थयात्रा के बहाने प्रायः वहाँ आते-जाते रहते थे। उनकी बातें सुन-सुनकर मातृभूमि को बन्धनमुक्त करने की प्रेरणा मनूबाई के मन में प्रबल हो उठती थी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

१८४२ ई० में झाँसी के राजा गंगाधर राव के साथ मनू का विवाह हुआ। मनू का नाम लक्ष्मीबाई रखा गया। राजा गंगाधर राव योग्य

महारानी लक्ष्मीबाई

शासक थे। पर उनमें देशभक्ति की कोई विशेष प्रवृत्ति न थी। लक्ष्मीबाई ने उस कमी की पूर्ति कर दी। वह अत्यन्त पति-परायणा थीं; पर साथ ही उनका जीवन राज-सुख के लिए नहीं, जनता की सेवा के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

लिए अर्पित था। १८५१ ई० में उनको एक पुत्र उत्पन्न हुआ । राज्य में बड़ी खुशी मनाई गई। परन्तु तीन ही मास के बाद उसका देहान्त हो गया। राजा गंगाधर राव तो पुत्र-शोक में बीमार ही पड़ गए । दिनोदिन उनका स्वास्थ्य खराब होता गया। सब तरह से उनको बचाने के प्रयत्न किए गए। पर कुछ लाभ न हुआ । १८५३ ई० के मध्य में उनकी अवस्था बहुत खराब हो गई। अन्त में रानी की सम्मति से राजा ने अपने एक सम्बन्धी के पंचवर्षीय पुत्र को शास्त्रानुसार गोद लिया जिसकी सूचना अंग्रेज सरकार को दे दी गई। इस सूचना में यह भी स्पष्ट कर दिया गया था कि पुत्र के नाबालिग रहते रानी शासन करेगी । २१ नवम्बर १८५३ ई० को गंगाधर राव का देहान्त हो गया।

लक्ष्मीबाई पर वज्रपात हुआ। उनकी भरी जवानी थी। केवल १८ साल की अवस्था थी। रूपवती थीं, स्वास्थ्य कुन्दन की तरह दमकता था। पर वह भगवद्भक्त थीं। भोग-विलास की ओर उनकी रुचि कभी न थी। उनका जीवन किसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए था । इसलिए उन्होंने किसी प्रकार धीरज रखा।

इस समय अंग्रेज राज के पीछे कोई नैतिक भावना न थी । किसी तरह यह राज्य बढ़ाना—यही अंग्रेजों का लक्ष्य था । अवसर आते ही पुरानी से मित्रता भुला दी जाती थी और धोखा देकर, धमकी देकर, फूट डालकर हर तरह की कुटिलता से वे अपना उद्देश्य पूरा करते थे। गंगाधर राव के मरते ही अंग्रेजों को बेईमानी सूझी, उन्होंने सोचा कि एक बालिका रानी क्या कर सकेगी । राजा के मरते ही अंग्रेजों के सरकारी पोलिटिकल एजेंट मेजर एलिस ने राज्य के खजाने पर मुहर लगा दी और अपने सैनिकों का पहरा बैठा दिया । बाहर से सेना भी बुला ली। राजा और रानी की इच्छा को ठुकरा दिया गया और गवर्नर जनरल ने आज्ञा निकाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

दी कि झाँसी ब्रिटिश राज्य में मिला लिया गया और रानी को आजीवन पाँच हजार मासिक पेंशन मिलती रहेगी।

रानी को आज्ञा दी गई कि किला छोड़ दें और महल में रहें। रानी ने विवश होकर स्वीकार किया। पर इस प्रकार की अनीति और अपनी जनता की दुर्दशा देख उनका हृदय फटने लगा। जनता रानी को इतना प्यार करती थी कि उनके इशारे पर सहज ही विद्रोह हो सकता था। इसलिये अंग्रेजों ने झाँसी की सेना तोड़ दी और किले में अंग्रेजी फौज रखी गई। किले में रखी हुई सब युद्ध-सामग्री नष्ट कर दी गई, तोपें बेकार कर दी गईं।

रानी ने शान्तिपूर्वक भावी संघर्ष के लिए अपने को तैयार करना शुरू किया। नियमित पूजा-पाठ, व्यायाम, अस्त्र-चालन में समय बीतने लगा। धीरे-धीरे उन्होंने पुराने सेवकों को एकत्र किया, स्त्रियों में, जनता में निर्भयता के भाव भरे। स्वयं बहुतेरी स्त्रियों को युद्धविद्या सिखलाई। अखाड़ों के भाग जागे।

सारे उत्तर भारत में अंग्रेजों की नीति के विरुद्ध लोगों में विद्रोह की भावना फैलती जा रही थी। रानी लक्ष्मीबाई इस समय लोगों की आशाओं का केन्द्र बनी हुई थीं। १८५७ में स्थान-स्थान पर विदेशियों के शासन से मुक्ति पाने के लिए हिंदू-मुसलमानों ने मिलकर विद्रोह कर दिया। सच पूछो तो यह विद्रोह नहीं स्वतन्त्रता के लिए प्रथम संघर्ष था। झाँसी के अंग्रेज अधिकारियों को हटाकर विद्रोहियों ने किले पर अधिकार कर लिया। एक बार पुनः रानी का झंडा किले पर लहराने लगा। इसी समय सदाशिव नाम के एक सरदार ने अपने को झाँसी का राजा घोषित कर दिया। रानी ने उसे हराया। यहां से भागकर ग्वालियर राज के नरवर स्थान में उसने अड्डा जमाया। महारानी ने उसे फिर बुरी तरह हराया। इसी समय ओरछा राजा के दीवान नत्थे खाँ ने साठ हजार सिपाहियों को साथ लेकर झाँसी पर आक्रमण कर दिया। महारानी ने बड़ी वीरता से उसका सामना किया। किले की मरम्मत कराई, तोपें, ठीक कराईं,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

गोले-बारूद का कारखाना खोला, सेना एकत्र की और स्वयं मर्दाने सैनिक वेश में युद्ध का सब काम देखती रहीं। शत्रु पराजित हुआ।

लक्ष्मीबाई १० महीने तक झाँसी पर शासन करती रहीं। उनके शासन एवं प्रबन्ध-कुशलता से प्रजा सन्तुष्ट थी। प्रत्येक दिशा में उन्नति हुई। पर भारत के भाग्य में अभी गुलामी लिखी थी। कुछ व्यवस्था की कमी, कुछ आपस की फूट ने हमें दुर्बल कर दिया। धीरे-धीरे अंग्रेजी सेनाएँ विद्रोह को दबाती हर तरफ आगे बढ़ने लगी। कर्नल रोज ने झाँसी पर भी आक्रमण किया। महारानी ने इस अवसर पर जिस वीरता, संगठन-शक्ति और सेवा-संचालन की योग्यता का परिचय दिया वह भारत के इधर के इतिहास में अपूर्व है। पहले दिन के युद्ध में अंग्रेजी सेना की बड़ी हानि हुई। २३ से ३१ मार्च तक धुआँधार युद्ध हुआ। इस समय चारों ओर से अङ्गरेजी सेना ने नगर के सब मार्गों को घेर रखा था। कुछ देशद्रोही भी उनसे मिल गए थे। उनकी सहायता से नगर में अङ्गरेजों ने प्रवेश पा लिया। नगर की रक्षा न होते देख अपने बचे हुए कुछ वीर सैनिकों को लेकर रानी ने मरदाने वेश में स्वयं युद्ध करना आरम्भ किया और मारते-काटते किले के फाटक के बाहर निकल आईं। इस समय वे साक्षात् भवानी सी लगती थीं। उनकी तलवार बिजली की तरह तीव्र गति से शत्रु-सैनिकों को काट रही थी। अङ्गरेजों में भगदड़ मच गयी। वे तब इधर-उधर छिप कर गोली चलाने लगे। अपने सेवकों की सलाह से महारानी किले में लौट गईं।

पर वहाँ पहुँचकर जब उन्होंने सुना कि नगर की जनता लुट रही है और अपने पक्ष के अच्छे-अच्छे तोपची वीरगति प्राप्त कर चुके हैं तब झाँसी से बाहर जाकर सेना सङ्गठित करने के उद्देश्य से बहुत थोड़े सैनिकों के साथ वे शत्रु की आँख बचाकर बाहर निकल गईं और अपने दत्तक पुत्र दामोदर राव को पीठ पर बाँधे कालपी की ओर चली गईं।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर कुछ ही देर बाद लेफ्टिनेंट वॉकर ने अपने चुने सैनिकों के साथ उनका पीछा किया और दूसरे दिन पास पहुँच गया। इस समय रानी के पास अपनी तलवार के अतिरिक्त कोई बल न था। उन्होंने तुरन्त बच्चे को पीठ पर बांध लिया और घोड़े पर सवार हो अपनी तलवार से शत्रु का सामना किया। इस समय अकेली लक्ष्मीबाई साक्षात् चंडी-सी दिखाई देती थीं। उन्होंने अपने अद्‌भुत साहस और वीरता के साथ ऐसा युद्ध किया कि वाँकर घायल होकर गिर गया और किसी तरह अपने बचे सैनिकों के साथ झाँसी की ओर भाग गया। उधर महारानी लगातार घोड़ा दौड़ाती रात के १२ बजे कालपी पहुँचीं। बिना कुछ खाए-पीए लगातार २४ घंटे की घुड़सवारी ही उनकी वीरता और साहस का एक उदाहरण है। कालपी पहुँचते ही उनका घोड़ा थकावट से चूर-चूर होने के कारण मर गया।

बाद में कालपी और ग्वालियर के युद्धों में महारानी ने अद्‌भुत वीरता का परिचय दिया। जहाँ वे पहुँच जातीं, शत्रु-सेना में भगदड़ मच जाती थी। उनके आदेश और पथ–दर्शन से ही ग्वालियर के किले पर पेशवा की सेना का अधिकार हो सका। पर इस विजय ने पेशवा तथा उनके साथियों को उन्मत्त कर दिया और वे राग-रंग में डूब गए। लक्ष्मीबाई के चेतावनी देने पर भी वे सावधान नहीं हुए। अङ्गरेजी सेना ने इसका लाभ उठाया। उसने अकस्मात् आक्रमण कर दिया। सेना में भगदड़ मच गई। इस समय महारानी लक्ष्मीबाई अपने कुछ सवारों के साथ मोर्चे के भीतर घुस गईं और इस जोर से आक्रमण किया कि शत्रु के पैर उखड़ गये। पर दूसरे रोज अङ्गरेजी सेना ने फिर भयंकर युद्ध किया। महारानी के विश्वस्त सैनिकों में बहुत से मर चुके थे। जो थोड़े बचे थे उन्हीं को लेकर महारानी ने अङ्गरेजी सेना को चीर कर बाहर निकल जाने का यत्न किया। चारों ओर से गोलियों की वर्षा हो रही थी, फिर भी विकट युद्ध करते हुए वे बाहर निकल गयीं। सेनापति ने उन्हें निकलते देख उनके पीछे अपने अश्वारोही दौड़ाए। उनकी पीठ में

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

एक गोली लगी जिससे वे कुछ शिथिल पड़ीं। इतने में शत्रु सैनिक समीप आ गये। अब मुठभेड़ हुई और गहरा युद्ध शुरू हुआ। एक सवार महारानी पर चोट करना ही चाहता था कि उनकी तलवार ने उसका काम तमाम कर दिया और अपना घोड़ा आगे बढ़ाया। वे निकल गयी होतीं पर रास्ते में एक नाला आ गया और थके घोड़े ने आगे बढ़ने से इन्कार कर दिया। इस अड़ियल घोड़े ने उन्हें संकट में डाल दिया। शत्रु-सेना के घुड़सवार पास पहुँच गए। लगातार युद्ध करने तथा विश्राम न मिलने से वे बहुत थक गई थीं, पीठ में गोली लगने से दुर्बल भी हो गयी थीं। फिर घोड़े की बेवफाई ने और आफत ढाई। शत्रु के एक अश्वारोही ने, इस स्थिति का लाभ उठाकर पीछे से तलवार की ऐसी मार की कि आँख बाहर निकल आई और सिर का दाहिना भाग कट गया। फिर भी वे सामना करती ही रहीं। हाँ, उनकी शक्ति का लोप हो रहा था। इतने में दूसरे सवार ने उनकी छाती में किर्च भोंक दी। इससे उनकी अवस्था बहुत खराब हो गई। पर कटे सिर, निकली आँख, गोली से छिदी पीठ और खून उगलती छाती के होते हुए भी उन्होंने तलवार का ऐसा हाथ मारा कि वह सवार तुरन्त परलोक सिधार गया।

परन्तु महारानी को यह समझते देर न लगी कि अन्तकाल आ गया है। उनकी अन्तिम इच्छा थी कि उनका शरीर शत्रुओं द्वारा स्पर्श न किया जाय। इसलिए घूमकर वह एक झाड़ी की ओर निकल गयीं। एक साधु इन्हें अपनी झोपड़ी में ले गया। शत्रु-सैनिक इनकी खोज में आगे बढ़ गए। इसी झोपड़ी में भारत के प्रथम स्वातंत्र्य की वह दीप-शिखा बुझ गई। घास-फूस से चिता बनाकर उस ओजस्विनी के शरीर का अग्नि-संस्कार—वहीं—कर दिया गया।

अभ्यास

(१) लक्ष्मीबाई के माता-पिता कौन थे? उनका बचपन का नाम क्या था?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(२) वह किस प्रकार 'झाँसी की रानी' बनीं ?

(३) अङ्गरेजों ने उनके साथ क्या अन्याय किया ?

(४) उनकी वीरता के सम्बन्ध में एक छोटा लेख लिखो ।

प्रयोग करो—जुए से मुक्त करना, कमर टूटना, अखाड़ों के भाग जागना, भाग में गुलामी लिखा होना, वीर गति को प्राप्त होना, पैर उखड़ जाना ।

---

(३२) कश्मीर-सुषमा

रचयिता। श्रीधर पाठक

[परिचय—श्रीधर पाठक की यह रचना बड़ी प्रसिद्ध है । पाठक जी अङ्गरेजी, हिन्दी और संस्कृति के अच्छे जानकार थे तथा ब्रजभाषा और खड़ी बोली—दोनों में अच्छी कविता करते थे । प्रकृति की सुन्दरता से आपको बड़ा प्रेम था । राष्ट्रीय गीतों का एक संग्रह 'भारत गीत' आपकी रचना है । 'एकान्तवासी योगी', 'भ्रांत पथिक', 'ऊजड़ ग्राम' आदि आपकी अनूदित रचनायें हैं । यह अंश आपकी पुस्तक—'कश्मीर-सुषमा' से लिया गया है । कश्मीर-प्रवास के समय पाठक जी ने वहाँ की सुन्दरता पर मुग्ध होकर यह रचना की थी । इसमें कश्मीर का प्राकृतिक शोभा का बड़ा ही सुन्दर वर्णन है ।]

प्रकृति यहाँ एकांत बैठि निज रूप सँवारति ।
पल-पल पलटति भेस छनिक छवि छिन छिन धारति ॥
विमल अम्बु-सर-मुकुरन महँ मुख-बिंब निहारति ।
अपनी छबि पै मोहि आप ही तन मन वारति ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

सजति, सजावति, सरसति, हरसति, दरसति प्यारी ।
बहुरि सराहति भाग, पाय सुठि चित्त रसारी ॥
विहरति विविध विलास भरी सुषमा के मद सनि ।
ललकति किलकति पुलकति निरखति थिरकति बनि ठनि ॥

मधुर मंजु छवि-पुंज छटा छिरकति वन-कुञ्जन ।
चितवति रिझवति हँसति डँसति मुसक्याति हरति मन ॥
यह सुरूप सिंगार रूप धरि धरि बहु भाँतिन ।
सर, सरिता, गिरि सिखर, गगन, गह्वर, तरुवर, तृन ॥
पूरन करिवे काज कामना अपने मन की ।
किंकरता करि रह्यो प्रकृति-पंकज-चरनन की ॥
चहुँ दिसि हिमगिरि सिखर, हीर-मनि मौलि-अवलि मनु ।
स्रवत सरित-सित-धार द्रवत सोइ चन्द्रहार जनु ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

फल फूलन छवि छटा छई जो वन उपवन की ।
उदित भयीं मनु अवनि-उदर सों निधि रतनन की ॥
तुहिन-सिखर, सरिता, सर विपिनन की मिलि सो छवि ।
छई मंडलाकार, रही चारिहुँ दिसि यों फवि ॥

मानहु मनिमय मौलि माल आकृति अलवेली ।
बाँधी विधि अनमोल गोल भारत सिर सेली ॥
अर्द्ध चन्द्र सम सिखर-स्रैनि कहुँ यों छवि आयी ।
मानहुँ चंदन खौरि, गौरि-गुरु खौरि लगायी ॥

पुनि तिन स्रैनिन बीच वितस्ता रेखु जु राजति ।
वैष्णव 'श्री' अरु सिव त्रिशूल की आभा भ्राजति ॥
हिम स्रैनिन सों विरचौ अद्रि-मंडल यह रूरौ ।
सोहत द्रोनाकार सृष्टि—सुषमा—सुख पूरौ ॥

बहु विधि दृश्य अदृश्य कला-कौसल सों छायौ ।
रच्छन निधि नैसर्ग मनहुँ विधि दुर्ग वनायौ ॥
अथवा बिमल बटोरि विस्व की निखिल निकाई ।
गुप्त राखिवे काज सुदृढ़ सन्दूक वनाई ॥

कै यह जादू भरी विस्व वाजीगर थैली ।
खेलत में खुलि परी सैल के सिर पर फैली ॥
खिली प्रकृति पटरानी के महलन फुलवारी ।
खुली धरी कै भरी तासु सिंगार-पिटारी ॥

कै यह विकसित ब्रह्म-वाटिका की कोउ क्यारी ।
जोगिराज ने इहाँ जोग बल ऐंचि उतारी ॥
कै सामग्री सहित भैरवी चक्र मंझारी ।
परिकल्पित करि धरी शक्ति पूजन की थारी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

किधौं चढ़ायौ धाता नें भारत के मस्तक ।
माया मालिनि रच्यौ चारु कुसुमन को गुच्छक ॥
कामधेनु पै रवि-हय की खुर-छाप सलोनी ।
कै वसुधा पै सुधा-धार-ब्रह्मद्रव-द्रोनी ॥

परम पुरुष की पटरानी माया कौ स्यन्दन ।
मंडप छत्र उतारि धर्यौ, उतर्यौ कै नन्दन ॥
कै जव लै सिव चले दच्छ-तनया कै अंगन ।
गिरि-शृङ्गन गिरि खिल्यौ प्रिया के कर कौ कंगन ॥

विष्णुनाभि तें उग्यौ सुन्यौ जो कमल सहज-दल ।
कै यह सोई सुभग स्वयम्भू कौ सुजन्म-थल ॥
प्रकृति नटी कौ पटी-रहित प्रकट्यौ नाँटक-घर ।
कै सिवतंत्र सटीक खुल्यौ विलसित टिखटी पर ॥

कै त्रैलोक्य विभूति भरित अवधूत–कमंडल ।
कै तप–पुंज–प्रसूत-बिस्व–सोभा–श्री मंडल ॥
सुरपुर औ सुरकानन की सुठि सुन्दरताई ।
त्रिभुवन मोहन करनि कबिनु बहु बरनि सुनाई ॥

सो सब कानन सुनी, किन्तु नैनन नहिं देखी ।
जह तहँ पोथिन पढ़ी पै सु परतच्छ न पेखी ॥
सो कवियन जो कही कलित सुरलोक निकाई ।
याही कौं अवलोकि एक कल्पना बनाई ॥

सुरपुर अरु कश्मीर दोउन में को है सुन्दर ।
को शोभा को भौन रूप को कौन समुन्दर ॥
का कौं उपमा उचित दैन दोउन में काकी ।
याकौं सुरपुर की अथवा सुरपुर कौं याकी ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

याकौं उपमा याही को मोहि देत सुहावै ।
वा सम दूजौ ठौर सृष्टि में दृष्टि न आवै ॥
यही स्वर्ग सुरलोक, यही सुर-कानन सुन्दर ।
यह अमरन को ओक, यहीं कहुँ बसत पुरन्दर ॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध परीक्षा—

(१) प्रकृति कहां बैठकर अपना रूप सँवारती है और किस प्रकार ? वह अपना मुख कहां देखती है और फिर क्या करती है ?

(२) जड़ प्रकृति द्वारा अपने रूप सँवारने का वर्णन—क्या भाव और आशय प्रकट करता है ?

(३) कवि के कथन का अनुसरण करते हुए वितस्ता नदी का वर्णन करो—बताओं कि आजकल उस नदी को क्या कहते हैं ।

(४) निम्नलिखि पंक्तियों का भावार्थ स्पष्ट करते हुए अर्थ लिखो—

(क) विमल अम्बुसर-मुकुरन······वारति ।

(ख) किंकरता करि······चरनन की ।

(ग) प्रकृति नटी··· ··नाटक·घर ।

(घ) मानहु मनिमय······भारत सिर सेली ।

(ङ) माया मालिनि······गुच्छक ।

प्रयोग और व्याकरण—

(१) इस पाठ के आधार पर कश्मीर की प्राकृतिक सुषमा का वर्णन करो और यह भी दिखाओ कि भिन्न-भिन्न दृश्य कवि को कैसे दिखाई पड़ते थे ?

(२) इस पाठ से उपमा और रूपक अलंकारों के तीन-तीन उदाहरण दो और उन अलंकारों की विशेपता बताओ ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(३३) परमहंस श्री रामकृष्ण

लेखक : श्री रामनाथ 'सुमन'

जिन महात्माओं ने आधुनिक युग में भी भारत का गौरव तथा उसके त्याग और तपस्या की शृङ्खला कायम रखी उनमें परमहंस श्री रामकृष्ण का स्थान बहुत ऊँचा है। अपने शिष्य स्वामी विवेकानन्द के रूप में उन्होंने संसार को एक अनुपम रत्न दिया। उनकी साधना गहरी थी और उनका हृदय ईश्वरीय शक्तियों के प्रकाश से भरा था।

बङ्गाल प्रांत में हुगली नाम का जिला है। उस जिले के कामारपुर गाँव में सन् १८६३ ई० की १७ फरवरी को रामकृष्ण का जन्म हुआ था। इनके पिता खुदीराम चट्टोपाध्याय और माता चन्द्रमणिदेवी, दोनों में भगवद्भक्ति थी; खुदीराम बाबू सरल स्वभाव के धर्मनिष्ठ पुरुष थे। माता इतनी दयामयी थीं कि अपने भूखी रहकर भी दीन-दुखियों को खिलाती थीं। वह किसी को भूखा और दुखी नहीं देख सकती थीं। इन लोगों के कुल-देवता भगवान रामचन्द्र थे। चट्टोपाध्याय जी सदा उनका भजन-पूजन किया करते थे। एक बार ये गया जी गए थे तब वहाँ के देवता गदाधर भगवान ने स्वप्न में इनसे कहा—'तुम्हारे घर में मेरा तेज प्रगट होगा।' लौटने के बाद रामकृष्ण का जन्म हुआ। इसलिए उनका नाम गदाधर रखा गया।

बचपन से ही पूजा-पाठ, साधु-सेवा, सत्संग, खेल-कूद में उनका खूब मन लगता था। खेल में भी प्रायः कृष्ण की लीला का अनुकरण करते थे। देवताओं के चित्र और मूर्ति बनाने का भी उन्हे शौक था। नौ वर्ष की उम्र

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

में उन्हें कुल-देवता भगवान रामचन्द्र की पूजा का भार सौंपा गया। वे बड़े प्रेम से पूजा करते थे। पूजा के समय वह यही समझते थे कि साक्षात् भगवान हमारे सामने बैठे हैं। धीरे-धीरे उनका मन पूजा-पाठ और भजन-कीर्तन में ऐसा रम गया कि उन्होंने पढ़ना-लिखना भी छोड़ दिया। उनकी यह दशा देख उनके बड़े भाई राजकुमार उन्हें अपने साथ कलकत्ता ले आए। परन्तु वहाँ भी उनका मन पढ़ने-लिखने में न लगा। भाई के द्वारा बहुत आग्रह किए जाने पर उन्होंने एक दिन साफ कह दिया—'दादा ! मुझे ऐसी विद्या सीखने की इच्छा नहीं है जो केवल पेट भरने के काम आवे, मैं तो वह विद्या सीखना चाहता हूँ जिससे कभी नष्ट न होनेवाली तृप्ति और शान्ति मिले।' विवश होकर भाई नें उससे कुछ कहना-सुनना छोड़ दिया।

•

कुछ दिनों बाद राजकुमार जी कलकत्ता-निवासी रानी रासमणि के दक्षिणेश्वर के काली-मन्दिर के पुजारी हो गये। गदाधर भी बड़े भाई के साथ वहीं रहते थे। उनकी भक्ति देखकर माँ काली की पूजा का काम उन्हें दिया गया। वे बड़ी श्रद्धाभक्ति के साथ पूजा करते थे। पूजा करते-करते उनके मन में दृढ़ धारणा हो गई कि उनकी और जगत् की जननी यही काली हैं। उनके मनमें बार-बार यह भावना बैठती थी कि काली की मूर्ति सजीव है। वह चलती है, बोलती है और पूजा में रखी वस्तुएँ ग्रहण करती है। कभी-कभी वे इतने तन्मय हो जाते कि उन्हें अपना–या कहाँ हैं, क्या कर रहे हैं इसका भी–कुछ ज्ञान नहीं रहता था। आरती हाथ में लिए हैं तो लिए ही हैं, माँ की ओर देख रहे हैं तो देख ही रहे हैं। यहाँ तक कि लोग उन्हें पागल समझने लगे। उधर गदाधर की साधना बराबर विकसित होती गई। भूख-प्यास और नींद की कोई परवाह न कर वे निरन्तर ध्यान में रहने लगे और माँ के विरह में छटपटाने लगे। भजन में जिन बातों से बाधा पड़ने की संभावना थी, उन सब—अभिमान, धन की कामना इत्यादि—को धीरे-धीरे अपने अन्दर से दूर कर दिया। धन के प्रति तो उनका भाव ऐसा हो गया था कि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

भारतीय धर्म के अग्रदूत

श्री रामकृष्ण परमहंस

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जब आँख मूंदे ध्यान में डूबे होते तब भी द्रव्य के छू जाने पर उनके शरीर का चमड़ा सिकुड़ जाता था। जब समस्त विकारों से शरीर को शुद्ध कर लेने पर भी माता काली के दर्शन न हुए तो उनकी व्याकुलता बहुत बढ़ गई और एक दिन अत्यन्त कातर स्वर में माता के सामने रोते हुए बोले—'माँ, तू मेरे सामने क्यों नहीं आती ? तेरे दर्शन बिना मेरा जीवन व्यर्थ है।' कहते हैं कि इसी समय उनकी दृष्टि मन्दिर में पड़ी हुई तलवार पर गई जिसे उन्होंने उठा लिया और अपना सिर काट कर मूर्ति पर चढ़ाने ही वाले थे कि भगवती प्रकट हुई और उनका दर्शन पाते ही गदाधर बेहोश होकर गिर पड़े।

गदाधर की सनक और पागलपन की कथा दूर-दूर तक फैल गई। बड़े भाई इत्यादि और माँ चिन्तित हुई। उन्होंने संसार में गदाधर को जकड़ने के लिए १८४५ ई० में शारदामणि नाम की एक नन्हीं बालिका से उनका विवाह कर दिया। परन्तु गदाधर पर उसका कोई प्रभाव न पड़ा। वह स्त्री-मात्र को माता के रूप में देखते थे। पत्नी जब उनकी स्थिति को समझने योग्य हुई तो उसने उनके कार्य में बाधा नहीं डाली बल्कि उनका अनुसरण किया।

गदाधर दिन-दिन साधना में आगे बढ़ते गए और अन्त में संन्यास लेकर रामकृष्ण के नाम से प्रसिद्ध हुए। इनका उपदेश सुनने और इनसे ज्ञान प्राप्त करने के लिए बड़े-बड़े विद्वान् पुरुष एकत्र होते थे। इनके शिष्यों में स्वामी विवेकानन्द सबसे विख्यात हुए जिन्होंने अमेरिका तथा अन्य देशों में भी भारतीय धर्म तथा तत्त्वज्ञान के प्रसार के लिए संस्थाएँ स्थापित कीं और दरिद्रों की सेवा के लिए 'रामकृष्ण मिशन' नामक संस्था को स्थापित किया। आज उसकी शाखाएँ भारत के अनेक नगरों में हैं और उनके अधीन सैकड़ों अस्पताल चल रहे हैं जहाँ बड़े प्रेम से दरिद्रनारायण की सेवा होती है।

१५ अगस्त १८८६ ई० को कलकत्ते में रामकृष्ण परमहंस ने अपना चोला त्याग दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभ्यास

(१) रामकृष्ण का पूर्व नाम क्या था ? वे कहाँ के रहने वाले थे ?

(२) उनमें भक्ति और ज्ञान की प्रवृत्ति का विकास किस प्रकार हुआ ?

(३) माँ काली का दर्शन उन्हें कब और कैसे हुआ ?

(४) उनका प्रधान शिष्य कौन था, उसने क्या कार्य किया है ?

(५) 'रामकृष्ण मिशन' के बारे में तुम क्या जानते हो ?

---

(३४) रहीम-वचन-सुधा

रचयिता : रहीम

कवि-परिचय—रहीम (अब्दुर्रहीम खानखाना) अकबर के समकालीन थे। आप अरबी-फारसी के पूरे विद्वान थे और हिन्दी के अच्छे कवि थे। इनकी कविता में विनय, नीति और उपदेश की महत्वपूर्ण बातें सरल शब्दों में बड़ी सुन्दरता से कही गई हैं। इस कारण इनकी रचना बड़ी प्रसिद्ध हुई।

अच्युत-चरन-तरंगिनी, सिवसिर-मालति-माल।
हरि न बनायो सुरसरी, कीजो इन्दव-भाल ॥ १ ॥

नित 'रहीम' चित आपनो, कीजै चतुर चकोर।
निसि बासर लागौ रहै, कृष्णचन्द की ओर ॥ २ ॥

समय-दसा-कुल देखिकै, लोग करत सनमान।
'रहिमन' दीन-अनाथ को, तुम बिन को भगवान् ॥ ३ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कहु 'रहीम' कैसे निभै, बेर-केर को संग।
वे डोलत रस आपने, उनके फाटत अंग॥ ४॥

'रहिमन' अती न कीजिए, गहि रहिये कुलकानि।
सहिजन अति फलै तऊ, डार-पात की हानि॥ ५॥

'रहिमन' देखि बड़ेन को लघु न दीजिए डारि।
जहाँ काम आवै सुई, कहा करै तरवारि॥ ६॥

जो 'रहीम' उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।
चन्दन विष व्यापत नहीं, लपटे रहत भुजंग॥ ७॥

'रहिमन' नीचन-संग बसि, लगत कलंक न काहि।
दूध कलारिन हाथ लगि, मद समुझहिं सब ताहि॥ ८॥

'रहिमन' कबहुँ बड़ेन के, नाहिं गर्व को लेस।
भार धरैं संसार को, तऊ कहावत सेस॥ ९॥

बिगरी बात बनै नहीं, लाख करौ किन कोय।
'रहिमन' बिगरे दूध को, मथे न माखन होय॥ १०॥

'रहिमन' निज मन की व्यथा, मन ही राखो गोय।
सुनि अठिलैहैं लोग सब, बांटि न लैहैं कोय॥ ११॥

मथत-मथत माखन रहै, दही-मही बिलगाय।
'रहिमन' सोई मीत है, भीर परे ठहराय॥ १२॥

'रहिमन' चुप ह्वै बैठिए, देखि दिनन को फेर
जब नीके दिन आइहैं, बनत न लगिहैं बेर॥ १३॥

धूर धरत निज सीस पै, कहु 'रहीम' केहि काज।
जेहि रज मुनि-पतनी तरी, सो ढूंढ़त गजराज॥ १४॥

'रहिमन' अपने पेट सों, बहुत कह्यो समुझाय।
जो तू अनखाए रहै, तोसों को अनखाय॥ १५॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बड़े पेट के भरन को, है रहीम दुःख बाढ़ि ।
याते हाथी हहरि कै, दिए दाँत द्वै काढ़ि ॥ १६ ॥

मन सों कहाँ 'रहीम' प्रभु, दृग सों कहाँ दिवान ।
देखि दृगन जो आदरै, मन तेहि हाथ बिकान ॥ १७ ॥

'रहिमन' अँसुवा नयन ढरि, जिय दुख प्रगट करेइ ।
जाहि निकारो गेह ते, कस न भेद कहि देइ ॥ १८ ॥

खैंचि चढ़नि, ढीली ढरनि, कहहु कौन यह प्रीति ।
आजकाल मोहन गही, बंसरिया की रीति ॥ १९ ॥

हरि 'रहीम' ऐसी करी, ज्यों कमान सरपूर ।
खैंचि आपनी ओरि की, डारि दियौ पुनि दूर ॥ २० ॥

'रहिमन' यों सुख होत है, बढ़त देखि निज गोत ।
ज्यों बडरी अँखियाँ निरखि, आँखिन को सुख होत ॥ २१ ॥

'रहिमन' राज सराहिए, ससि सम सुखद जो होय ।
कहा बापुरो भानु को, तप्यो तरैयन खोय ॥ २२ ॥

'रहिमन' रिस सहि नहिं तजत, बड़े प्रीति की पौर ।
मूकन मारत आवई नींद बिचारी दौर ॥ २३ ॥

जाल परे जल जात बहि तजि मीनन को मोह ।
'रहिमन' मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह ॥ २४ ॥

जेहि 'रहिमन' तन-मन दियो, किये हिये बिच भौन ।
तासों दुख-सुख कहन की, रही बात अब कौन ॥ २५ ॥

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) बेर और केले का संग क्यों नहीं निभता ? इस कथन का क्या भावार्थ है ? (२) दूध को कलारिन के हाथ में देखकर लोग क्यों शराब समझते है ? इससे क्या शिक्षा मिलती है ? (३) सच्चा मित्र कौन है ? उसके क्या लक्षण हैं ? (४) आँखों से निकलकर आँसू क्यों जी का दुःख कह देते हैं ? (५) पहले दोहे की व्याख्या करो ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रयोग और व्याकरण—

(१) जो पाँच दोहे तुम्हें सबसे अच्छे लगें, उन्हें याद कर सुनाओ। (२) 'दोहा' छन्द का लक्षण लिखो । (३) 'अन्योक्ति' किसे कहते हैं, ? ऊपर दिए रहीम के दोहों में से दो-एक अन्योक्ति के उदाहरण दो ।

---

(३५) अधिक अन्न-उत्पादन की आवश्यकता

(सम्पादकीय)

हमारे देश में आज भी अन्न की काफी कमी है । प्रायः नगरों में गल्ला बेचने के लिए कंट्रोल की दुकानें हैं । इन दूकानों पर दाल को छोड़ कर प्रायः सभी अनाज बिकते हैं । गवर्नमेंट ने कुछ नियम बना दिए हैं । उन्हीं नियमों के अनुसार अन्न बिकते हैं । प्रत्येक व्यक्ति को गेहूँ, चावल, जौ, चना आदि मिलाकर निर्धारित तौल के मुताबिक गल्ला मिलता है । रूखा-सूखा खाने वाले लोगों का पेट प्रायः इतने गल्ले से नहीं भरता । जो शारीरिक परिश्रम करते हैं, मजदूरी और खेती-वारी का काम करते हैं, उन्हें कुछ अधिक भोजन चाहिए । गरीब लोगों को भी अधिक अनाज चाहिए क्योंकि उनके भोजन में न तो घी-दूध ही रहता है और न दिन में वे चाय-पानी ही करते हैं। इस कारण जब वे खाने बैठते हैं तब रूखा-सूखा भोजन अधिक करते हैं ।

पर उन्हें अधिक भोजन नहीं दिया जा सकता है, क्योंकि हमारे देश में—जनसंख्या के लगातार बढ़ते जाने से आज अन्न की बहुत अधिक कमी हो गई है । भारत के अनेक प्रदेशों में जितनी आबादी है उतना अन्न यहां उपजता नहीं । उसका एक बहुत बड़ा हिस्सा हमारी सरकार को विदेशों से मँगाना पड़ रहा है ।

यह नहीं कि आज से तीस-चालीस बरस पहले गल्ले की कमी नहीं थी । तब भी अनाज की हमारे देश में कमी थी । पर उस समय विदेशों से बिना कठिनाई के यहां गल्ला आ जाता था । इससे कोई कष्ट नहीं होता था ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

पर आज गल्ला विदेशों से मँगाने में अनेक कष्ट हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे देश का बहुत-सा सोना विदेशों में चला जाता है। देश में नये ढङ्ग से काम करने के लिए मशीन वगैरह मँगानी ही पड़ रही हैं, जिनके लिए बहुत-सा सोना देना पड़ रहा है, साथ ही गल्ले के लिए भी बहुत-सा सोना-रुपया देना पड़ रहा है। इसी तरह यदि हमारे देश का धन विदेशों में जाता रहा और अपने देश की चीजों को बेंच कर विदेशों का धन हमारे देश में न आता रहा तो हमारा देश कुछ दिनों में दरिद्र हो जायगा। साथ ही यातायात की कठिनाई के कारण भी बहुत बड़ी धनराशि को गल्ला लाने में व्यय करना पड़ रहा है।

हमारे देश में गल्ले की कमी के कई कारण हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि हमारे देश की आबादी बढ़ गई है। पाकिस्तान बन जाने से बहुत से हिन्दू जो पाकिस्तान में बहुत कष्ट पाने लगे थे, वे यहां चले आए हैं और अबतक भी लगातार वे चले आ रहे हैं। लगभग तीन-चार करोड़ शरणार्थी भारतवर्ष में आ गए हैं। यहाँ से पाकिस्तान जाने वाले मुसलमानों की संख्या, वहाँ से आने वालों की तुलना में बहुत कम है। इसके साथ-साथ इस देश में बहुत दिनों से जनसंख्या बहुत बढ़ती जा रही है।

पूर्वी बङ्गाल का वह हिस्सा—जहाँ चावल बहुत अधिक होता था—बंगला देश में तथा पंजाब और सिंध के वे हिस्से जहाँ गल्ला बहुत होता था—पाकिस्तान में पड़ गए हैं। खेतों की उपज भी कुछ घट गई है। कुटुम्बों में बटवारा होते रहने से एक ओर तो खेत छोटे-छोटे टुकड़ों में बँट गए हैं और दूसरी ओर बहुत-सी भूमि खेतों के डाँण-खाँवाँ वगैरह में बेकार हो गई है। इस कारण हमारे सामने गल्ले की कमी का प्रश्न बड़ा महत्त्वपूर्ण हो गया है।

हमारे देश की केन्द्रीय सरकार तथा प्रान्तीय राज्य की सरकारें इस सम्बन्ध में बहुत-कुछ प्रयत्न कर रही हैं। इस देश को उन्हें संपन्न बनाना

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

है। हमें भी इस काम में योग देना है। यदि हम गल्ले के लिए दूसरों का मुख देखते रहे तो हमारे देश की उन्नति संभव नहीं है। इसी कारण राज्य की सरकारें बहुत-कुछ कार्य कर रही हैं।

बहुत से बाँध बनाए गए और बनाए जा रहे हैं, नहरें बनाई जा रही हैं, विद्युत-योजना का कार्य किया जा रहा है, लाखों एकड़ ऊसर भूमि को मशीनों से जोतकर खेती के काम का बनाया जा रहा है, वैज्ञानिक खाद वगैरह के साधनों से खेत की उपज बढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है। इसी प्रकार अनेक और उपाय हो रहे हैं। गाँवों में बिजली पहुंचा कर सिंचाई वगैरह का प्रबन्ध भी हो रहा है, कुएँ-तालाब बनाए जा रहे हैं।

पर सरकार जो कुछ कर रही है, उतने से काम नहीं होने का। १९६७ के सूखे के कारण विकसित बीजों और रासायनिक खाद के प्रयोग में किसानों ने खेती में अभूतपूर्व सफलता पाई है। पर इस दिशा में अभी इतना प्रयत्न करना चाहिए कि गल्ला और अनाज के लिए भारत आत्मनिर्भर हो जाय। वह दूसरे राष्ट्रों को गल्ले का निर्यात कर सके।

किसानों को खाद वगैरह की सहायता और सिंचाई की मदद से जहाँ तक हो सके अधिक गल्ला पैदा करना चाहिए। किसान ही नहीं सबको ही इसमें प्रयत्न करना चाहिए। थोड़ी भी अपनी जमीन यदि खाली पड़ी हो, चाहे वह घर में हो या बगीचे में, उसमें कुछ अनाज न हो सके तो तरकारी लगा देनी चाहिए। बरसाती तरकारी, कद्दू वगैरह घर में भी लगाकर छप्पर वगैरह पर चढ़ा देना चाहिए। कहने का अर्थ यह कि हर प्रकार से गल्ला, तरकारी 'फल, आदि खाद्य पदार्थों की उपज बढ़ानी चाहिए।

देहातों में यदि सहकारी (कोआपरेटिव) खेती हो, सब किसान अपनी-अपनी भूमि के टुकड़ों को एक में मिला दें और सब मिलकर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खेत का चक बनाकर खेती करें तो बहुत लाभ हो। बहुत-सा खेत खाँवाँ वगैरह में बेकार न जाय और बड़े से चक में सिंचाई वगैरह भी ठिकाने से हो।

हमारा प्रान्तीय राज्य उस अवस्था में हमारी सहायता कर सकता है। बडा-सा चक हो जाने पर जोताई-बुआई के काम में ट्रैक्टर से राज्य-सरकार सहायता कर सकती है सिंचाई के लिए भी पंप काम में लाने से अधिक गल्ला हो सकता है। सब किसान मिलकर मजदूरी करें। फसल होने पर मजदूरी देने के बाद जो गल्ला बचे, उसका खेत के अनुपात से बँटवारा किया जा सकता है।

अधिक गल्ला उत्पन्न करने के सभी सम्भव उपायों से तो काम लेना ही चाहिए। पर इसके साथ एक बात की ओर और भी ध्यान रखना चाहिए। हमें गल्ले का एक भी दाना किसी भी प्रकार खराब न होने देना चाहिए। चाहे सड़-गल कर वह नष्ट होता हो या चूहे आदि से; अनाज के दाने-दाने की सुरक्षा करनी चाहिये और उसे बचाना चाहिए। इतना ही नहीं, एक दाना भी अधिक या व्यर्थ खर्च न करना चाहिये। आवश्यकता से अधिक न तो अनाज पकाना चाहिये और न खाने के लिए लेकर छोड़ना ही चाहिए।

तरकारी, शाक-भाजी, फल आदि से जितना सम्भव हो, पेट भर कर गल्ले की बचत करनी चाहिये। इसीलिए अपनी खाली भूमि में तरकारी वगैरह खाद्य-पदार्थ बोकर जहाँ तक हो सके अन्न का खर्चा कम करना चाहिये। आज अन्न का एक-एक दाना अधिक उपजाना और एक-एक दाना कम खर्च करना बड़े पुण्य का कार्य है।

अन्नोत्पादन में पूर्ण सहयोग देकर देशोद्धार के कार्य में सहायता पहुँचाना प्रत्येक भारतीय का आज धर्म है। हम सबको निश्चय करके तत्पर हो जाना चाहिए कि हम इस योजना में लगकर—गल्ले के मामले में—देश को स्वावलम्बी और निर्यातक बनाकर ही छोड़ेंगे।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) हमारे सामने अन्न का क्या संकट है ? (२) क्यों देश में अन्न-संकट है ? (३) अनाज की कमी के कौन-कौन से मुख्य कारण हैं ? (४) सरकार इस संकट को दूर करने के लिए क्या कर रही है ? अन्न की उपज बढ़ाने के लिए वह क्या कर रही है ? (५) हमें क्या करना चाहिये जिससे अन्न की उत्पत्ति बढ़े ? (६) किस ढंग से खेती करनी चाहिये ? (७) खाने-पीने में गल्ले का खर्च बचाने के लिए क्या करना चाहिये ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) तरकारी और शाक-भाँजी की सहायता लेकर अन्न का खर्च कैसे घटाया जाय, इस पर एक छोटा-सा निबन्ध लिखो। (२) अपने घर जाकर गाँव में या शहर में तुम आज से इस संकट को दूर करने के लिए क्या करोगे ? (३) संधि बताओ— अन्नोत्पादन, देशोद्धार, शरणार्थी।

---

(३६) शिक्षा

लेखक : माननीय श्री सम्पूर्णानन्द जी

परिचय—हमारे प्रान्त के जननायकों में सम्पूर्णानन्द जी का स्थान बहुत ऊँचा है। वह एक निःस्पृह लोक-सेवक, एक ऊँचे विचारक, श्रेष्ठ शिक्षा-शास्त्री और हिन्दी के एक मँजे हुए लेखक थे। अपने प्रारंभिक यौवनकाल में वर्षों तक वह अध्यापक रह चुके हैं और वर्षों पहले काशी विद्यापीठ में शिक्षक तथा कुलपति (चान्सलर) भी थे। देशसेवा के कार्यों में अपना सर्वस्व होम कर देने वालों में सम्पूर्णानन्द जी का अन्यतम स्थान रहा है। मन्त्री, मुख्य-मन्त्री और राज्यपाल के व्यस्त जीवन में भी साहित्य-सर्जन उनका एक प्रमुख

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कार्य था। हिन्दी का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मंगलाप्रसाद पारितोषिक उन्हें मिल चुका था और वह हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के अध्यक्ष भी रह चुके थे। अन्ताराष्ट्रियविधान, समाजवाद' गणेश, आर्यों का आदि देश, भाषा की शक्ति चिद्विलास तथा हिन्दू-देवपरिवार, इत्यादि उनकी प्रमुख पुस्तकें हैं। वे उत्तर-प्रदेश के मुख्यमन्त्री और राजस्थान राज्य के राज्यपाल भी रह चुके थे। इस पाठ में (जो 'चिद्विलास' पुस्तक से लिया गया है) शिक्षा-सम्बन्धी बातों पर अच्छा प्रकाश पड़ता है। १० दिसम्बर १९६८ को उन्हें काशीलाभ हो गया।

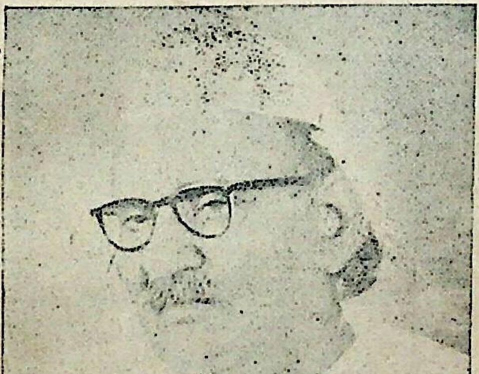

माननीय श्री सम्पूर्णानन्दजी

समाज का ठीक संचालन तभी हो सकता है जब प्रत्येक नागरिक पर इसका दायित्व हो। जो समाज अपना भार थोड़े से व्यक्तियों के कन्धे पर देता है उसको इस बात के लिए तैयार रहना चाहिए कि एक दिन उसके सारे अधिकार इन थोड़े से व्यक्तियों के हाथों में चले जायेंगे। फिर उसको अपनी

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

खोई सम्पत्ति को वापस लेने के लिए विकट लड़ाई करनी होगी। परन्तु नागरिक समाज का काम तभी संभाल सकता है, जब उसमें उसकी योग्यता हो और वह सामाजिक जीवन के लक्ष्य को समझता हो। यह बात शिक्षा पर निर्भर करती है।

शिक्षा का अर्थ व्यापक है। साधारणतः उसका अर्थ बौद्धिक व्यायाम समझ लिया जाता है। छात्र को साहित्य, विज्ञान, इतिहास, राजशास्त्र, अर्थशास्त्र, जितने भी पाठ्य विषय हैं, पढ़ा दिये जायें और वह कुशल चिकित्सक या अध्यापक या इञ्जीनियर—जैसा कुछ बना दिया जाय। समाज को ऐसे लोगों की बराबर आवश्यकता रहती है। यदि हर मनुष्य को उसकी योग्यता के अनुसार काम और हर काम के लिए कुशल मनुष्य मिल जायँ तो सभी सुखी और सम्पन्न रहें।

यह मत निराधार नहीं है। समाज को ऐसे लोगों की सदा आवश्यकता रहती है जो उसके अर्थ (धन) और काम का सम्पादन कर सकें। परन्तु यदि अर्थ और काम पर ही ध्यान दिया गया तो स्पर्धा (होड़) ही उन्नति का साधन बन जायगी। सबकी दृष्टि अपने स्वार्थ पर होगी, हितों का संघर्ष जारी रहेगा और समाज, शान्ति के लिए तरसता रह जायगा।

हितों में संघर्ष होने का कारण यही है कि सब अपने स्वार्थ, अपने अर्थ और काम को ढूंढ़ते हैं। किसी को किसी का द्वेष नहीं है, पर सब को अपने से राग अर्थात् प्रेम है। एक अँधेरे कमरे में यदि दस मनुष्य बन्द कर दिये जायँ और सब बाहर निकलने का मार्ग ढूंढ़ रहे हों तो कई बार आपस में टकरा जायेंगे। किसी को किसी से वैर नहीं। पर सब केवल अपने लिये द्वार ढूंढ़ रहे हैं; इसी से टकराते हैं। एक दूसरे से लड़ने में शक्ति का अपव्यय होता है। वही मनुष्य यदि यह समझ ले कि सबका एक ही उद्देश्य है, तो उनकी सम्मिलित शक्ति का उपयोग हो सके। ऐसी दशा में यदि छुटकारे का द्वार न मिला तब भी लड़कर एक दूसरे की विपत्ति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

बढ़ाई तो न जायगी । ठीक यही बात समाज में है । सबकी यही दशा है । यदि यह बात समझ में आ जाय कि सबका हित एक ही है और वह सहयोग से प्राप्त हो सकता है तो आपस का झगड़ा और खींचा-तानी बन्द हो जाय । सबको सुख-समृद्धि प्राप्त हो; कम से कम हम एक दूसरे के दुःख को बढ़ाने का साधन न बनें ।

छात्रों की कोमल बुद्धि में यह बात आरम्भ से ही बैठानी चाहिए । चारो ओर सुन्दरता से भरे वातावरण, प्राकृतिक छटा और कलापूर्ण कृतियों के बीच छात्र को जीवन बिताना चाहिए । बचपन से ही तप और त्याग का अभ्यास न पड़ा तो आगे चलकर कठिनाई होगी ।

मनुष्य-शरीर यों ही खो देने की वस्तु नहीं है । अपनी वासनाओं की तृप्ति तो पशु भी कर लेते हैं । परन्तु मनुष्य को अपने बहुज्ञ होने का गर्व है । उसको इस गर्व के अनुरूप अपना जीवन भी बनाना चाहिए । वासना का दमन मनुष्य की शोभा है, अपने को यथाशक्य दूसरों की सेवा में लगाना उसका आदर्श है, आत्मसाक्षात्कार उसके जीवन का प्रधान लक्ष्य है । शारीरिक बल या विद्या महत्त्वपूर्ण बातें हैं । परन्तु इनकी प्राप्ति की कुछ सहज सीमाएँ भी हैं । दूसरे से विद्या या बल या वैभव में कम होना दुःख की बात हो, परन्तु लज्जा की बात नहीं है । अपने धर्म के पालन का प्रयत्न न करना, अर्थ और काम को धर्म से श्रेष्ठ मानना, मनुष्य के लिए लाञ्छन है । यह भाव शिक्षा द्वारा दृढ़ किया जाना चाहिए ।

ऐसी शिक्षा पाया हुआ मनुष्य समाज का योग्य नागरिक होगा । सब लोग धर्म का साक्षात् करने वाले नहीं हो सकते परन्तु धर्म-मार्ग पर चलने की प्रवृत्ति सबकी होनी चाहिए । कोई बिरला ही ब्रह्मवेत्ता होगा, थोड़े ही योगाभ्यासी होंगे, थोड़े ही पूर्णतया निष्काम हो सकेंगे । परन्तु प्रायः सब पदार्थ को स्वार्थ से ऊँचा स्थान देंगे, प्रायः सब राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय व्यवहार में सहयोग और सद्भाव के समर्थक होंगे ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

ऐसी शिक्षा देना कठिन नहीं है। अभेद एकता जीव का स्वरूप है। अविद्या के कारण उसको नानात्व की, पृथकता की प्रतीति है। परन्तु जब थोड़ी देर के लिए भी वह पृथकता को भुला पाता है, एकत्व की झलक पा लेता है तो उत्फुल्ल हो उठता है। नानात्व के बीच भी वह अपने को ढूंढ़ता रहता है। इसलिए जो शिक्षा उसको एकत्व की ओर ले जायगी वह उसको ग्राह्य होगी।

ऐसी शिक्षा देना सबका काम नहीं है। साधारण पाठ्य-विषयों के अध्यापक तो बहुत मिल सकते हैं। परन्तु विद्यार्थी को धर्म की शिक्षा देकर दूसरा जन्म देने की योग्यता रखने वाले आचार्य कम ही होते हैं। आचार्य छात्र के लिए तो पूज्य है ही, समाज का भी कर्त्तव्य है कि ऐसे व्यक्तियों का आदर करे और उनको निष्कण्टक काम करने का अवसर दे।

अभ्यास

शब्दार्थ

दायित्व=जिम्मेदारी। निराधार=बिना आधार के अर्थात् जिसका आधार न हो। स्पर्धा=होड़। वातावरण=वायुमंडल। छटा=सौन्दर्य। आत्म-साक्षात्कार=आत्मा का दर्शन। बहुज्ञ=बहुत जानने वाला। लांछन=कलंक। ब्रह्मवेत्ता=ब्रह्म को जानने वाला। निष्काम=कामनाओं या इच्छाओं से रहित। स्वरूप=असली रूप। योगाभ्यासी=योग के यम-नियम, प्राणायाम, आदि का अभ्यास करके अपने मन को वश में रखने वाला पुरुष। अविद्या=अज्ञान बाहरी आकृति से प्रतीत होने वाला अवास्तविक ज्ञान। नानात्व-प्रतीति=अनेकता की प्रतीति।

बोधपरीक्षा और प्रयोग—

(१) शिक्षा का वास्तविक अर्थ क्या है? अच्छे नागरिक बनने के लिए कैसी शिक्षा की आवश्यकता है? (२) धर्म की अर्थ और काम पर क्यों प्रधानता देनी चाहिए? (३) इस पाठ के अन्तिम पैरा में आई संज्ञायें लिखो।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

(३७) विश्व-शान्ति और संयुक्त राष्ट्रसंघ

(सम्पादकीय)

बहुत प्राचीन काल से युद्ध भी होता चला आ रहा है और मनुष्यजाति विश्व में शान्ति स्थापना का प्रयत्न भी करती आ रही है। उपनिषदों और पुराणों के युग की बात हम छोड़ भी दें तो भी इतिहास हमें बताता है कि समय-समय पर मनुष्य ने शान्ति की स्थापना के लिए उद्योग किया। भगवान् बुद्ध और महात्मा ईसा ने यद्यपि राष्ट्रसंघ की स्थापना न की तथापि सब देशों और सब जातियों के मनुष्यों में प्रेम और सद्भावना के प्रचार का उन्होंने उद्योग किया। सम्राट अशोक ने भी पहले तो कलिङ्ग पर आक्रमण किया और वहाँ अपने शत्रुओं का वध भी बड़ी क्रूरता से किया। पर उसके पश्चात् उसने बौद्ध-धर्म स्वीकार कर लिया और दूर-दूर देशों में अपने कुटुम्बियों और धर्मोपदेशकों को भेजकर अहिंसा, प्रेम और परस्पर मैत्री के भाव का प्रचार किया। अपने देश में भी शिला-लेखों और धर्मलेखों द्वारा प्रेम का प्रचार किया। उन्होंने यह बताया कि शस्त्रबल की विजय सच्ची विजय नहीं है, वरन् प्रेम-विजय ही सच्ची विजय है।

यूरोप में शान्ति-स्थापना का प्रयत्न बहुत प्राचीन काल से होता रहा। प्राचीन यूनान में छोटे-छोटे नगर स्वतन्त्र राज्य थे। स्वतन्त्र और पृथक् राज्य होने के साथ-साथ इन राज्यों की अपनी स्वतंत्र व्यवस्थाएँ भी थीं। पहले इनमें बहुधा घोर युद्ध हो जाया करता था। युद्ध से होने वाले विनाश को देखकर इन राज्यों की जनता ने शान्ति की स्थापना के उद्देश्य से बड़ा परिश्रम किया। परस्पर राज्यों में राजनीतिक एकता स्थापित करने में वे राज्य सफल हुए। उन्होंने संयुक्त न्यायालयों की स्थापना की तथा अनेक न्यायालयों के योग से संघों और राज्य-समूहों की स्थापना हुई। इन प्रयत्नों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

के कारण अनेक अवसरों पर युद्धों से यूनान की रक्षा हुई। यूरोप का परम प्रसिद्ध विशाल रोमन साम्राज्य बहुत अंश तक शान्ति-स्थापित करने में समर्थ हुआ। वहाँ के धार्मिक प्रभुत्व ने अनेक शताब्दियों तक धार्मिक एकता में बाँध रखा था। रोम के चर्च का प्रभाव बहुत दिनों तक समस्त यूरोप में इसी का प्रयत्न भी करता रहा। बाद में वहाँ धर्म के नाम पर अत्याचार होने लगे।

उन्नीसवीं शताब्दी में यूरोप के विचारक लोग यह सोचने लगे थे कि युद्ध से विनाश बहुत होता है। अतः बार-बार की लड़ाई से होने वाली हानि से विश्व की रक्षा करने का कोई न कोई उपाय अवश्य होना चाहिये। इस सम्बन्ध में लगातार प्रयास होता रहा।

यूरोपी प्रथम महायुद्ध का अन्त होने के बाद १९२० ई० में प्रथम राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। उस युद्ध में जो महान् विनाश हुआ, धन-जन की जो अपार क्षति हुई उसे देखकर संसार के सब विचारशील व्यक्तियों ने अनुभव किया कि किसी एक ऐसी अन्तर्राष्ट्रीय संस्था का संघटन होना अत्यावश्यक है, जो मानव-जाति को युद्धाग्नि की भयानक लपटों में बार-बार जलने से बचा सके। इसलिए प्रथम राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई। उस संघ के उद्देश्य बहुत ऊँचे थे और वह चाहता भी था कि संसार में शान्ति स्थापित हो सके। सारे संसार को भाईचारे की भावना से एक सूत्र में बाँधने के लिए उस संघटन का जन्म हुआ।

पर उस संस्था को अपना उद्देश्य पूरा करने में सफलता प्राप्त न हुई। क्यों न हुई ? यह एक प्रश्न है, जिसका उत्तर देने का यहाँ अवसर नहीं है। फिर भी इतना बताया जा सकता है कि प्रथम राष्ट्रसंघ का उद्देश्य बहुत ही प्रशंसनीय था। उसके मूल-सिद्धान्त भी प्रायः ऊँचे ही थे। पर उक्त संस्था के अनेक सदस्य-राष्ट्र अपनी संस्था के बनाए नियमों का स्वयं पालन नहीं करते थे। फलतः वह संस्था असफल हुई।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

प्रथम महायुद्ध से होने वाली संसार की अपूरणीय क्षति को देखकर मनुष्य यह सोचने लगा कि भविष्य में विश्व को इन महायुद्धों से बचाना चाहिए। पर अपने-अपने राष्ट्रीय स्वार्थों और महत्त्वाकाँक्षाओं के कारण ऐसी भावनाओं का जन्म हुआ जिनके कारण विभिन्न राष्ट्रों में द्वेष की आग जल उठी। दूसरा विश्व-महायुद्ध हुआ। न जाने कितने प्राणों की आहुति युद्धाग्नि को चढ़ा दी गई। संसार की न जाने कितनी संपत्ति बमों की उगली हुई धधकती आग में जलकर राख हो गई, न जाने कितने सामान-भरे जहाज समुद्रों में डुबाकर नष्ट कर दिए गए! संसार का न जाने कितना धन—तोप, बम, बारूद, अस्त्र-शस्त्र आदि में खर्च हुआ! कितना पेट्रोल, कितना लोहा, कितना कोयला युद्ध के कामों में लग गया!

यदि यह सब सामग्री, साधन, धन और प्रयत्न, मनुष्य जाति की उन्नति के कार्यों में लगे होते तो न जाने विश्व की जनता का कितना लाभ हुआ होता! वैज्ञानिकों की वह सब शक्ति, जो विनाशकारी संहारक अस्त्रों के बनाने में लगी, यदि मनुष्य को सुखी, स्वस्थ और सम्पन्न बनाने में लगती तो न जाने संसार का कितना कल्याण होता!

पर युद्धकाल में ये बातें किसी को न सूझी। जब अमेरिकी अणु बम ने जापान की दो मनुष्यपूर्ण नगरियों को श्मशान ही नहीं रौरव बना दिया तब संसार का ध्यान उस ओर गया। सब बुद्धिशील पुरुषों ने यह देख लिया कि विज्ञान की शक्ति संहार करने में दिन-प्रतिदिन बढ़ती ही चली जा रही है। यदि भविष्य में युद्धों को रोका न गया तो जो होने की सम्भावना है, उसे सोचकर भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं।

इन्हीं बातों को देखकर शान्ति के लिए विश्व के ५०—५१ राष्ट्रों ने मिलकर वर्तमान संयुक्त-राष्ट्र-संघ की स्थापना की। उस संघ के संविधान का पूर्वरूप १९४५ ई० की २६ वीं जून को तैयार हुआ और इस संस्था का कार्यारम्भ हो गया। २४ अक्तूबर सन् १९४५ ई० को इस संस्था के नियमादि स्वीकृत हो गए। इसका घोषणापत्र (चार्टर) भी मान लिया गया

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

और प्रमुख बड़े राष्ट्रों तथा अन्य सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने हस्ताक्षर करके अपनी स्वीकृति दे दी।

तभी से इस संस्था ने कार्यारम्भ किया। संयुक्त-राष्ट्रसंघ के कार्यों का क्षेत्र बड़ा व्यापक है। अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध के सारे कार्य इसके भीतर आ जाते हैं, इसलिए अच्छे ढङ्ग से प्रबन्ध करने के लिए इसकी व्यवस्था करने का भार छः विभिन्न विभागों में बँटा है— (१) साधारण सभा, (२) सुरक्षा परिषद्, (३) आर्थिक और सामाजिक परिषद् , (४) संरक्षण-परिषद् , (५) अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा (६) सचिवालय। इन विभागों में प्रत्येक की एक-एक समिति है। समितियों में कुछ राष्ट्र सदस्य होते हैं और उनके द्वारा सब काम चलाए जाते हैं।

संयुक्त-राष्ट्रसंघ की स्थापना नीचे लिखे उद्देश्यों को लेकर हुई है :—

आने वाली पीढ़ियों को उस युद्ध से होने वाले महानाश से बचाना— जिस युद्ध ने दो-दो बार मनुष्य जाति को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है।

सम्पूर्ण संसार के मनुष्यों को समान मानना, स्त्री, पुरुष या जाति, धर्म आदि के माने जाने वाले भेद-भाव को दूर कर सबको समान समझना, सबके सम्मान, गौरव तथा अधिकार को समान स्वीकार करना।

अन्तर्राष्ट्रीय–कानूनों, कर्त्तव्यों और व्यवस्थाओं के प्रति लोगों के हृदय में विश्वास उत्पन्न करना।

मनुष्यमात्र की रहन-सहन को उन्नत बनाने की चेष्टा करते रहना।

इन बातों को पूरा करने के लिए पड़ोसियों की भाँति आपस में एक राष्ट्र का दूसरे राष्ट्रों से मिल-जुल कर रहना, सारे संसार में शान्ति बनाए रखने के लिए शक्ति को संघटित करना और अपने कार्यों द्वारा यह सिद्ध करना कि सामान्य जनता की हित-रक्षा के अतिरिक्त और कभी शस्त्रबल को काम में न लेना चाहिये। साथ ही सबकी आर्थिक और सामाजिक उन्नति के

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

इस संयुक्त

और सुरक्षा को बनाए रखना। ...
ही काम में ले आना। पर जनहित को रक्षा ...
संघ प्रयोग कर सकता है। राष्ट्रों के आपसी झगड़े वग़ैरह
देशों में प्रेम उत्पन्न करने का प्रयत्न करना भी 'संघ' का कार्य है। ... समस्त संसार की सभी प्रकार की उन्नति, स्वस्थता और सुख-सुविधा के लिए राष्ट्रसंघ सदा प्रयत्नशील रहेगा।

इस प्रकार हम देख रहे हैं कि वर्त्तमान संयुक्त-राष्ट्रसंघ का जन्म बड़े ऊँचे और पवित्र उद्‌देश्यों को लेकर हुआ है। संसार के शान्तिप्रेमी और विश्व का हित चाहने वाले विचारक इस संस्था को सफल बनाने में लगे हैं। अनेक अवसरों पर राष्ट्रसंघ के प्रयत्न पूर्ण सफल नहीं हुए; फिर भी यह संस्था सदा अपने उद्‌देश्यों के प्रयास में विश्वासपूर्वक लगी रहती है। हमारे देश के महानेता, विश्व के सबसे बड़े शांतिप्रेमी, मानवता के सबसे बड़े पुजारी, विश्ववन्द्य 'बापू' और कवीन्द्र रवीन्द्र के भी यही संदेश हैं। यदि सभी राष्ट्रों के अधिक से अधिक मनुष्य अपनी सारी शक्ति लगा कर भविष्य में युद्ध को रोक सकें तब तो ठीक है, नहीं तो आगामी युद्ध में भी भीषण अस्त्रों द्वारा ऐसी संहार-लीला होगी जो मानवजाति को प्रलय के समीप पहुँचा देगी।

अभ्यास

आवृत्ति और बोध-परीक्षा—

(१) मनुष्य जाति के विचारशील पुरुष कब से शान्ति-स्थापना का प्रयत्न करते आ रहे हैं? (२) प्राचीन यूनान और रोम में शान्ति स्थापित करने के लिए क्या किया गया? (३) अशोक के क्या उपदेश हैं? (४) प्रथम यूरोपीय महायुद्ध को देखकर लोगों ने क्या अनुभव किया? और विश्वशान्ति के लिए क्या प्रयत्न किया गया? (५) परमाणु-बम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षर

...प्रमुख ...या है ?

(३८) सागर के अतल गर्भ में

लेखक : श्री जगन्नाथप्रसाद मिश्र

परिचय—हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक श्री जगन्नाथप्रसादजी मिश्र का यह निबन्ध है। 'विश्वमित्र' और 'हिमालय' जैसे श्रेष्ठ पत्रों का सम्पादन कर चुके हैं। इनके लेख विद्वत्तापूर्ण होते हैं। साहित्यिक, राजनीतिक तथा वैज्ञानिक लेखों के लिखने में ये सिद्धहस्त हैं। इस लेख में समुद्र के गर्भ के गुप्त रहस्यों का सुन्दर परिचय दिया गया है। एक पनडुब्बे और एक भूतत्त्ववेत्ता के अनुभव भी दिए गये हैं। लेख उपयोगी होते हुए भी सरस है।

मनुष्य की ज्ञान-पिपासा कभी शान्त होने को नहीं। प्रकृति पर, उसके दुर्गम रहस्य पर उसका बहुत कुछ अधिकार हो चुका है। फिर भी प्रकृति उसके लिये अभी तक रहस्यमयी बनी हुई है। प्रकृति के विरुद्ध उसके नित-नूतन अभियान चल ही रहे हैं। जो अज्ञात एवं अज्ञेय हैं, उन्हे ज्ञात एवं ज्ञेय बनाने की दुर्दमनीय वासना आज मनुष्य को पागल बना रही है। जल, स्थल, आकाश, सर्वत्र वह अपनी अबाध गति चाहता है। पहले आकाश को लेकर मनुष्य के कल्पना-राज्य में न मालूम कितने स्वप्न उदित होते थे।

सागर भी मनुष्य के लिए एक रहस्यमय स्थान है। रहस्यमयी इस पातालपुरी को लेकर मनुष्य ने कल्पना के अनेक जाल बुने हैं और प्राचीन गाथाओं के आधार पर अपने कल्पनाजाल को विस्तृत करके रत्नाकर के अगाध रहस्य को जानने की चेष्टा की है। किन्तु मनुष्य की यह चेष्टा आज कल्पना तक ही परिमित न रहकर वस्तुतः कार्य-रूप में परिणत हो रही है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

जनक

फोटो खींचक

वहाँ रक्खे हुए संदूक क

रहा है।

जल के तल-प्रदेश में प्रवेश करने का प्रथम सूत्र मनुष्य ... हुआ? अतीत के इतिहास से उसके सम्बन्ध में पता लगाना सहज नह मगर समुद्र के गर्भ में प्रवेश करने के लाखों वर्ष पूर्व एक प्रकार का मकड़ा वायु का आवेष्टन बनाकर समुद्र में वास करता था और वहीं अंडा देता था। समुद्र के ऊपर से वह वायुपूर्ण बुलबुला पकड़कर ले आना और अपने वायु-कोष की वायु समाप्त हो जाने पर उस बुलबुले से वायु का अभाव पूर्ण करता था। समुद्र के नीचे जाने के लिए मनुष्य को भी ऊपर से वायु की पूँजी साथ लेकर जाना पड़ता था। इस वायु के अभाव को पूर्ण करने के लिए मनुष्य ने अनेक प्रकार के उपायों की उद्‌भावना की है। अठारहवीं शताब्दी में ज्योतिषी हेली, ने समुद्र-तल में नूतन वायु पहुंचाने के लिए एक उपाय निकाला था। ऊपर से पीपे में हवा भरकर समुद्र के नीचे उतार दिया जाता था। इस पीपे के साथ चमड़े का एक नल होता था। चमड़े की टोपी पहन कर मनुष्य पानी के नीचे उतरता था, और उस पीपे से चमड़े के नल की सहायता से वायु ग्रहण करता था। इस उपाय से हेली तीन घण्टे से अधिक समय तक समुद्र के तल प्रदेश में रहने में समर्थ हुआ था।

इस प्रकार की एक कहानी प्रचलित है कि जल के नीचे, पातालपुरी में किस प्रकार के जीव-जन्तु विचरण करते हैं, उन्हें देखने की उत्सुकता से महावीर सिकन्दर ने पीपे में भरी हुई हवा लेकर समुद्र के तल में अवतरण किया था। तेरहवीं शताब्दी की एक फ्रांसीसी पुस्तक में लिखा है कि सिकन्दर ने जल के नीचे एक अद्‌भुत जानवर को देखा था। उस जानवर का शरीर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षर

प्रमुख

ए बेथिस्फियर

आधार के अन्दर आधु-

है। .... (प्राणवायु) के यन्त्र, टेलीफोन,

आदि और जल के चाप को मापने का यंत्र है। तीन इंच चौड़े काँच के जँगले से होकर जल के तल-प्रदेश में जाकर वहाँ जो नृत्यलोक है, उस लोक की जलकन्याओं के क्रीड़ा-कौतुक मनुष्य को प्रत्यक्ष होते हैं। एक अमेरिकन भूतत्त्वविद इस प्रकार के एक बेथिस्फियर की सहायता से जल के नीचे उतरे थे। वे वरमूडा द्वीप से छः मील दूर समुद्र में उतरे और डेढ़ घंटे तक जल के नीचे रहे। उन्होंने लिखा है—'जल के नीचे उतरते ही पहले सुनहले पीत वर्ण के राज्य में प्रवेश करना पड़ता है, इसके बाद हरे रंग की क्रीड़ाभूमि। जितना नीचे उतरिए, यह हरा रंग और भी गाढ़ा होता जाता है। इस हरे रंग के बाद और गहराई में घोर कृष्ण-वर्ण है, किन्तु इस काले रंग में एक प्रकार की चमक जैसी प्रतीत होती है, मानो इस कालेपन के अन्दर से होकर प्रकाश आ रहा हो। किन्तु इस प्रकाश में लिखा-पढ़ा नहीं जा सकता। जल के अन्दर जीव-जन्तुओं के सचरण का आभास अवश्य मिलता है किन्तु जल-उद्भिद् का वहाँ कोई चिन्ह नहीं मिलता। उद्भिद् का श्यामल राज्य इससे बहुत ऊपर छूट जाता है।

सात सौ फुट नीचे के जल की अवस्था और भी शान्त है किन्तु वहाँ भी सूर्य की किरणों की पहुँच है। एक हजार फुट जल के नीचे बेथिस्फियर का इस्पात का अत्यन्त ठंढा हो जाता है। जल का रंग कैसा होता है, यह ठीक-ठीक जानना कठिन है। कुछ-कुछ नीलापन लिए हुए काला अथवा कालापन लिए हुए नीला। इस अतल प्रदेश में नेत्र की दृष्टि ठीक नहीं रहती और मन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

म।

उन्नीस सौ फु-

धूसर रंग का आलोक

चारो ओर अन्धकार का

जल के नीचे कितना भीषण अन्

सकता।

एक गोताखोर ने जो अनुभव लिखा वह और भी

१– 'गोताखोर के काम में अनेक प्रकार की तैयारियाँ करनी प

नकाब से लेकर बेथिस्फियर तक, जब जिस वस्तु का प्रयोजन हो

जल के नीचे अवतरण करने पर कंधे तक इक नकाब पहन लेने से

चल जाता है। केवल नकाव के सहारे पचीस-पैंतीस फुट जल के नीचे उतरते-उतरते नकाब की हवा बाष्प हो जाती है। इसलिए इस प्रकार का नकाब पहन कर उतरने में खतरा है। उस समय सारे शरीर को पोशाक से आच्छादित कर लेना पड़ता है। इनके साथ वायु प्राप्त करने का आवरण रहता है और छाती के पास से हवा के बाहर निकलने का रास्ता। ऊपर उठने की इच्छा होने पर हवा निकलने के मुँह को बटन से बन्द कर देना होता है, इससे पोशाक हवा से फूल जाती है—और शरीर को ऊपर की ओर ठेल देती है। जल में डूबा हुआ मनुष्य जिस प्रकार पानी के ऊपर तैरता रहता है—उसी प्रकार वह तैरता हुआ ऊपर उठ आता है। धीरे-धीरे ऊपर नहीं उठने से विपद की आशंका रहती है। सोडावाटर किस तरह तैयार होता है, जानते हो? गैस और पानी पर एक साथ दबाव डालना पड़ता है। दबाव डालने पर गैस पानी के साथ मिल जाती है, किन्तु इस दबाव का मुँह खुला होने पर भीतर की गैस बुलबुले के आकार में पानी से जोर के साथ बाहर निकल पड़ती है—कितने जोर के साथ, जानते हो?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षर

प्रमुख

होता है कि

वह तुम्हारे खून के

हैं। .... रहते हो तभी तक इस

और जल के चाप को अचानक यदि तुम ऊपर उठ जाओ

काच के जँगले से होकर जल के रह। चाप की मात्रा कम हो जाती है और उस लोक की जलकन्यु हुई बोतल की शराब की तरह–तुम्हारी शिराओं अमेरिकन मन्आकार में फेनिल हो उठेगा। इसके फलस्वरूप पक्षाघात से नीचे उतरेन्यु हो जायगी। आध घंटे के लिए यदि तुम्हें एक सौ फुट पानी के तक जल मे पड़े तो बिना किसी विघ्न के ऊपर आने में तुम्हे और आध घंटा सुन्ध लगेगा। उससे तुम्हारे रक्त में जो गैस प्रविष्ट कर गई थी उसे धीरे-धीरे बाहर निकलने का समय मिलेगा। नीचे तुम्हारे ऊपर चाहे कितना ही बड़ा खतरा क्यों न हो, तुम किसी प्रकार भी हड़बड़ करके ऊपर नहीं उठ सकते, इस बात को स्मरण रखना होगा'।

२–'एक जहाज आयरलैंड के उपकूल में सुरंग से टकराकर डूब गया था इस जहाज में पन्द्रह लाख रुपये का सोना था। यह जहाज यात्रीजहाज था। यह छः मिनट के अन्दर ही डूब गया। एक भी यात्री की प्राणरक्षा नहीं हो सकी। मुझे इस जहाज पर से सोना निकालने का काम करना पड़ा था। मैं जल के नीचे अवतरण करके त्रीस हजार टन संदूक को काट रहा था, बड़ी-बड़ी मछलियां मेरे इर्द-गिर्द चक्कर काट रही थीं। मेरा हथियार था हाइड्रो आक्सिजन का एक टार्च 'डेक् के के सी' नम्बर का डेक मेरी बगल में ही था। उसके सैलून का दरवाजा बन्द था। मेरे मन में न मालूम क्या ख्याल आया, मैं दरवाजे का हैंडल (मूठ) पकड़ घुमाने लगा, मगर उसमें जंग लग गया था। इसके बाद दरवाजे को गिराने के लिए मैंने हथियार चलाया,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

कौन थे ? उस ...
का उत्सव था । पुरुष,
वाजे पर जोर-जोर से धक्का ।...
कहकह कर कितना चीत्कार किया था
वाजा खुला— खोलने वाला था मैं । दरवाज...
से । वे सब एक साथ सीढ़ी के ऊपर से उछलते-कूद...
चाप में पड़कर उनके शरीर अधिक फूले नहीं थे, मगर उनका ...
ढङ्ग का हो गया था—सम्पूर्ण विकृत एवं बीभत्स । भय का कोई
होने पर भी मैं भयभीत हो उठा था । मैं उनके बीच से होकर उन्हें ...
कर किसी तरह टेलीफोन के पास पहुँचा और जोर से चिल्लाने लगा । जित...
जोर से हो सका, उठने लगा । जहाज के ऊपर जब आया तब देखा कि उन
हत मनुष्यों में दस बारह जन मुझसे पहले ही वहाँ बहते हुए पहुँच चुके हैं ।

मैं टेलीफोन पर जोर से चिल्लाने लगा—'मुझे जल्दी से ऊपर खींच लो—जितनी जल्दी हो सके ।

ऊपर से मेरे साथी ने कहा—'मूर्ख की तरह मत चिल्लाओ । पक्षाघात से मरने का शौक चर्राया है क्या ? इतने जोर से क्या ऊपर उठा जाता है ? नीचे चले जाओ, अच्छी तरह ऊपर उठना ।'

मैं नीचे चला गया । आधा घण्टा वहाँ रहकर फिर ऊपर उठने लगा । अब भी मेरा भय दूर नहीं हुआ था । मैं लगातार चिल्ला रहा था । मकान के भीतर से मेरी उस चिल्लाहट ने मेरे कान में तो पर्दा डाल दिया था ।

'मैं भले ही जल्दीबाजी न कर सका, मगर उन लोगों की जल्दबाजी कम नहीं थी । सैकड़ों स्त्री, पुरुष एवं बच्चे बाहर निकल आए थे, और मुझसे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh.

क्षर

प्रमुख

अग

...ता है। ... ...ए मनुष्य क्यों व्याकुल रहता ...ाद और जल के चाप को ...ारी के लिए क्यों इतना आकर्षण ...ाच के जँगले से होकर जल के . पानी के लिए क्या-क्या किया जा रहा है ? उस लोक की जलकन्या... राज्य स्थापित करने के बाद सिकन्दर की लालसा अमेरिकन ...) समुद्र के गहरे जल के भीतर से एकाएक बाहर निकलने नीचे उतर... रहता है ? (५.) पनडुब्बों तक प्राण-रक्षा के लिए प्राणवायु तक जल ...जन) कैसे पहुँचाया जाता है ?

प्रयोग और व्याकरण—

(१) पनडुब्बे के अनुभव का अपने शब्दों में वर्णन करो। (२) इस पाठ के आधार पर बताओ कि आज कहाँ तक विज्ञान की सहायता से मनुष्य ने प्रकृति पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया है ? (३) नीचे लिखे शब्दों में विग्रह करके समासार्थ बताओ—ज्ञान-पिपासा, कल्पना-राज्य, क्रीड़ा-कौतुक, अनन्त-शून्य रत्नाकर, पातालपुरी।